পারা ২৭(৫১.৩১-৫৭.২৯)

﴾31﴿ ٱلْمُرْسَلُونَ	أَيُّهَا	خَطْبُكُمْ	فَمَا	قَالَ
معرفة اسم مرفوع [ر س لIV] ফেরেশতাগণ	اسم مرفوع ওহে	اسم مرفوع +ضمير [خ ط ب]তোমাদের উদ্দেশ্য	ح. استئنافية +اسم موصول কি তাহলে	فعل ماض [ق و ل] বলল সে
51|31|ইব্রাহীম বললঃ হে প্রেরিত ফেরেশতাগণ, তোমাদের উদ্দেশ্য কি?				

إِلَىٰ	أُرْسِلْنَآ	إِنَّآ	قَالُوٓاْ
جرّ প্রতি	فعل ماض مجهول +ضمير [ر س لIV] প্রেরিত হয়েছি	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমরা	فعل ماض +ضمير [ق و ل]বলল তারা
51|32|তারা বললঃ আমরা এক অপরাধী			

﴾32﴿ مُّجْرِمِينَ	قَوْمٍ
اسم مجرور [ج ر م IV] অপরাধী	اسم مجرور [ق و م]জাতির
সম্প্রদায়ের প্রতি প্রেরিত হয়েছি,	

﴾33﴿ طِينٍ	مِّن	حِجَارَةً	عَلَيْهِمْ	لِنُرْسِلَ
اسم مجرور [ط ي ن]মাটির	جرّ হতে	اسم منصوب [ح ج ر]পাথর	جرّ +ضمير তাদের উপর	ل-تعليل +فعل مضارع منصوب [ر س ل]যেন বর্ষণ করি আমরা
51|33|যাতে তাদের উপর মাটির ঢিলা নিক্ষেপ করি।				

﴾34﴿ لِلْمُسْرِفِينَ	رَبِّكَ	عِندَ	مُّسَوَّمَةً
جرّ +معرفة اسم مجرور [س ر ف]সীমালংঘনকারী	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমার রবের	ظ. مكان منصوب কাছে	اسم منصوب [س و م] IV] চিহ্নিত
51|34|যা সীমাতিক্রমকারীদের জন্যে আপনার পালনকর্তার কাছে চিহ্নিত আছে।			

فِيهَا	كَانَ	مَن	فَأَخْرَجْنَا
جرّ +ضمير তার মধ্যে	فعل ماض [ك و ن]ছিল	اسم موصول যারা	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [خ ر ج IV] অতঃপর বের করলাম আমরা
51|35|অতঃপর সেখানে যারা ঈমানদার ছিল,			

﴾35﴿ ٱلْمُؤْمِنِينَ	مِنَ
معرفة اسم مجرور [ا م ن IV] মুমিনদের	جرّহতে
আমি তাদেরকে উদ্ধার করলাম।	

بَيْتٍ	غَيْرَ	فِيهَا	وَجَدْنَا	فَمَا
اسم مجرور [ب ي ت]একটি ঘর	اسم منصوب [غ ي ر]ব্যতীত	جرّ +ضمير তার মধ্যে	فعل ماض +ضمير [و ج د]পেয়েছি আমরা	ح. استئنافية +ح. نفيঅতঃপর না
51|36|এবং সেখানে একটি গৃহ ব্যতীত				

﴾36﴿ ٱلْمُسْلِمِينَ	مِّنَ
IV] معرفة اسم مجرور [س ل م] মুসলিমদের	جرّহতে
কোন মুসলমান আমি পাইনি।	

يَخَافُونَ	لِّلَّذِينَ	ءَايَةً	فِيهَآ	وَتَرَكْنَا
فعل مضارع +ضمير [خ و ف]ভয় করে	جرّ +معرفة اسم موصول জন্য যারা	اسم منصوب [ا ي ي]নিদর্শনাবলী	جرّ +ضمير তার মধ্যে	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ت ر ك]এবং ছেড়েছি আমরা
51|37|যারা যন্ত্রণাদায়ক শাস্তিকে ভয় করে, আমি তাদের				

﴾37﴿ ٱلْأَلِيمَ	ٱلْعَذَابَ

[ع ذ ب] معرفة اسم منصوب**আযাবের**	[ا ل م] صفة منصوبة**মর্মন্তুদ**
জন্যে সেখানে একটি নিদর্শন রেখেছি।	

وَفِى	مُوسَىٰٓ	إِذْ	أَرْسَلْنَٰهُ	إِلَىٰ	فِرْعَوْنَ
ح.عطف جرّ+এবং **মধ্যে**	اسم علم مجرور **মুসার**	ظ. زمان **যখন**	فعل ماض +ضمير [ر س لIV] প্রেরণ **করেছিলাম আমরা**	جرّ **প্রতি**	اسم علم مجرور بالفتحة (ممنوع) **ফেরাউনের**
51|38|এবং নিদর্শন রয়েছেন মূসার বৃত্তান্তে; যখন আমি তাকে					

بِسُلْطَٰنٍ	مُّبِينٍ ﴿38﴾
[س ل ط] جرّ +اسم مجرور**প্রমান সহ**	اسم مجرور [ب ي ن IV] **সুষ্পষ্ট**
সুস্পষ্ট প্রমাণসহ ফেরাউনের কাছে প্রেরণ করেছিলাম।	

فَتَوَلَّىٰ	بِرُكْنِهِۦ	وَقَالَ	سَٰحِرٌ	أَوْ	مَجْنُونٌ ﴿39﴾
ح. استئنافية +فعل ماض [و ل يV] **অতঃপর মুখ ফিরায় সে**	جرّ +اسم مجرور +ضمير [ر ك ن]**তার শক্তি বলে**	ح.عطف +فعل ماض [ق و ل]**এবং বলেছিল**	اسم مرفوع [س ح ر] **যাদুকর**	ح.عطف**অথবা**	اسم مرفوع [ج ن ن] **উন্মাদ**
51|39|অতঃপর সে শক্তিবলে মুখ ফিরিয়ে নিল এবং বললঃ সে হয় যাদুকর, না হয় পাগল।					

فِى	فَنَبَذْنَـٰهُمْ	وَجُنُودَهُۥ	فَأَخَذْنَـٰهُ
جرّ মধ্যে	ح. عطف +فعل ماض +ضمير [ن ب ذ] ضمير+এবং নিক্ষেপ করেছিলাম	ح.عطف +اسم منصوب +ضمير [ج ن د]ও তার সৈন্য দলকে	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ا خ ذ] ضمير+অতঃপর ধরেছিলাম আমরা তাকে
51|40|অতঃপর আমি তাকে ও তার সেনাবাহিনীকে পাকড়াও করলাম এবং তাদেরকে সমুদ্রে			

﴾40﴿ مُلِيمٌ	وَهُوَ	ٱلْيَمِّ
[IV]اسم مرفوع [ل و م] তিরষ্কৃত	ح.عطف +ضمير منفصلএবং সে	معرفة اسم مجرور [ي م م] সমুদ্রের
নিক্ষেপ করলাম। সে ছিল অভিযুক্ত।		

عَلَيْهِمُ	أَرْسَلْنَا	إِذْ	عَادٍ	وَفِى
جرّ +ضمير তাদের উপর	[IV]فعل ماض +ضمير [ر س ل] পাঠিয়েছিলাম আমরা	ظ. زمان যখন	اسم علم مجرور আদ জাতির	ح.عطف +جرّ এবং মধ্যে
51|41|এবং নিদর্শন রয়েছে তাদের কাহিনীতে; যখন আমি তাদের				

﴾41﴿ ٱلْعَقِيمَ	ٱلرِّيحَ
معرفة اسم منصوب [ع ق م]অকল্যাণকর	معرفة اسم منصوب [ر و ح]বায়ু
উপর প্রেরণ করেছিলাম অশুভ বায়ু।	

أَتَتْ	شَىْءٍ	مِن	تَذَرُ	مَا
فعل ماض [ا ت ي] এসেছিল	اسم مجرور [ش ي [اকিছুই	جرّ হতে	فعل مضارع [و ذ ر] ছেড়েছিল	ح. نفي না
51|42|এই বায়ু যার উপর দিয়ে প্রবাহিত হয়েছিলঃ				

كَٱلرَّمِيمِ ﴿42﴾	جَعَلَتْهُ	إِلَّا	عَلَيْهِ
جرّ +معرفة +اسم مجرور [ر م م]চুর্ণ–বিচুর্ণ	فعل ماض +ضمير [ج ت ل] করেছিল তাকে	ح. حصر ছাড়া	جرّ +ضميرযার উপর
তাকেই চুর্ণ-বিচুর্ণ করে দিয়েছিল।			

تَمَتَّعُواْ	لَهُمْ	قِيلَ	إِذْ	ثَمُودَ	وَفِى
فعل أمر +ضمير [م ت ع V] উপভোগ কর তোমরা	جرّ +ضمير তাদের জন্য	فعل ماض مجهول [ق و ل]বলা হয়েছিল	ظ. زمان যখন	اسم علم مجرور بالفتحة (ممنوع) সামূদ জাতির	ح.عطف جرّ+এবং মধ্যে
51|43|আরও নিদর্শন রয়েছে সামূদের ঘটনায়; যখন তাদেরকে বলা হয়েছিল,					

حِينٍ ﴿43﴾	حَتَّىٰ
اسم مجرور [ح ي ن]একটা নির্দিষ্ট সময়	جرّযতক্ষণ না
কিছুকাল মজা লুটে নাও।	

فَأَخَذَتْهُمُ	رَبِّهِمْ	أَمْرِ	عَنْ	فَعَتَوْا۟
ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ا خ ذ]ধরল তাদের	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তাদের রবের	اسم مجرور [ا م ر]নির্দেশের	جرّ হতে	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ع ت و]অতঃপর সীমা লঙ্ঘন করল তারা
51|44|অতঃপর তারা তাদের পালনকর্তার আদেশ অমান্য করল এবং তাদের প্রতি				

يَنظُرُونَ ﴿44﴾	وَهُمْ	ٱلصَّٰعِقَةُ
فعل مضارع +ضمير [ن ظ ر]দেখ না তারা	ح.حالية +ضمير منفصل অথচ তারা	معرفة اسم مرفوع [ص ع ق] বজ্রঘাতে
বজ্রঘাত হল এমতাবস্থায় যে, তারা তা দেখেছিল।		

وَمَا	قِيَامٍ	مِن	ٱسْتَطَٰعُوا۟	فَمَا
ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم مجرور [ق و م]উঠে দাঁড়াতে	جرّ হতে	فعل ماض +ضمير [ط ع و X] পেরেছিল তারা	ح. استئنافية +ح. نفي অতঃপর না
51|45|অতঃপর তারা দাঁড়াতে সক্ষম হল না এবং কোন প্রতিকারও করতে পারল না।				

مُنتَصِرِينَ ﴿45﴾	كَانُوا۟
اسم منصوب [ن ص ر VIII] আত্মরক্ষাকারী	فعل ماض +ضمير [ك و ن]ছিল তারা
এবং কোন প্রতিকারও করতে পারল না।	

كَانُوٓاْ	إِنَّهُمْ	قَبْلُ ۖ	مِّن	نُوحٍ	وَقَوْمَ
فعل ماض +ضمير [ك و ن]ছিল তারা	ح. مشبه بفعل +ضميرনিশ্চয়ই তারা	اسم مرفوع [ق ب ل] পূর্বে	جرّ হতে	اسم علم مجرور নূহের	ح.عطف +اسم منصوب [ق و م] এবং জাতিকে

51|46|আমি ইতিপূর্বে নূহের সম্প্রদায়কে ধ্বংস করেছি।

فَٰسِقِينَ ﴿46﴾	قَوْمًا
[ف س ق] اسم منصوبফাসেক	[ق و م] اسم منصوبসম্প্রদায়

নিশ্চিতই তারা ছিল পাপাচারী সম্প্রদায়।

لَمُوسِعُونَ ﴿47﴾	وَإِنَّا	بِأَيْيْدٍ	بَنَيْنَٰهَا	وَٱلسَّمَآءَ
ل-تاكيد +اسم مرفوع [و س ع]অবশ্যই সম্প্রসারণকারী	ح.عطف +ح. مشبه بفعل +ضميرএবং নিশ্চয়ই আমরা	جرّ +اسم مجرور [ا ي د] ক্ষমতাবলে	فعل ماض +ضمير +ضمير [ب ن ي]সৃষ্টি করেছি তা আমরা	ح.عطف +معرفة اسم منصوب [س م و]× এবং আকাশমন্ডল

51|47|আমি স্বীয় ক্ষমতাবলে আকাশ নির্মাণ করেছি এবং আমি অবশ্যই ব্যাপক ক্ষমতাশালী।

﴾48﴿ ٱلْمَٰهِدُونَ	فَنِعْمَ	فَرَشْنَٰهَا	وَٱلْأَرْضَ
معرفة اسم مرفوع [م ه د] সমতলকারী	ح. استئنافية +فعل ماض (الثناء) [ن ع م] অতঃপর কতই না উত্তম	فعل ماض +ضمير +ضمير [ف ر ش] বিছিয়ে দিয়েছি আমরা তা	ح.عطف +معرفة اسم منصوب [ا ر ض] ভূমিকে
51|48|আমি ভূমিকে বিছিয়েছি। আমি কত সুন্দরভাবেই না বিছাতে সক্ষম।			

زَوْجَيْنِ	خَلَقْنَا	شَىْءٍ	كُلِّ	وَمِن
اسم مرفوع [ز و ج] জোড়ায় জোড়ায়	فعل ماض +ضمير [خ ل ق] সৃষ্টি করেছি আমরা	اسم مجرور [ش ي ا] কিছুর	اسم مجرور [ك ل ل] প্রত্যেক	ح.عطف +جرّ এবং হতে
51|49|আমি প্রত্যেক বস্তু জোড়ায় জোড়ায় সৃষ্টি করেছি,				

﴾49﴿ تَذَكَّرُونَ	لَعَلَّكُمْ
فعل مضارع V +ضمير [ذ ك ر] শিক্ষা গ্রহন কর	ح. مشبه بفعل +ضمير যাতে তোমরা
যাতে তোমরা হৃদয়ঙ্গম কর।	

مِّنْهُ	لَكُم	إِنِّى	ٱللَّهِ ۖ	إِلَى	فَفِرُّوٓا۟

جرّ +ضمير তার হতে	جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমি	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	جرّ প্রতি	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ف ر ر]অতএব দৌড়াও তোমরা
51|50|অতএব, আল্লাহর দিকে ধাবিত হও। আমি তাঁর তরফ থেকে					

﴿50﴾ مُّبِينٌ	نَذِيرٌ
اسم ق[ب ي ن IV] সুস্পষ্ট	اسم مرفوع [ن ذ ر]একজন সতর্ককারী
তোমাদের জন্যে সুস্পষ্ট সতর্ককারী।	

ءَاخَرَ ۖ	إِلَٰهًا	ٱللَّهِ	مَعَ	تَجْعَلُوا۟	وَلَا
اسم منصوب [ا خ ر] অন্য	اسم منصوب [ا ل ه] উপাস্য	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	ظ. مكان منصوب সাথে	فعل مضارع مجزوم +ضمير [ج ع ل] বানাবে তারা	ح.عطف +ح. نهي এবং না
51|51|তোমরা আল্লাহর সাথে কোন উপাস্য সাব্যস্ত করো না।					

﴿51﴾ مُّبِينٌ	نَذِيرٌ	مِّنْهُ	لَكُم	إِنِّى
اسم مرفوع [ب ي ن IV] সুস্পষ্ট	اسم مرفوع [ن ذ ر] সতর্ককারী	جرّ +ضمير তার থেকে	جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমি
আমি তাঁর পক্ষ থেকে তোমাদের জন্য সুস্পষ্ট সতর্ককারী।				

مِن	ٱلَّذِينَ	أَتَى	مَآ	كَذَٰلِكَ
جرّ হতে	اسم موصول যারা	فعل ماض [ا ت ي] এসেছে	ح. نفي না	جرّ +اسم اشراة এভাবে

51|52|এমনিভাবে, তাদের পূর্ববর্তীদের কাছে যখনই কোন

قَالُواْ	إِلَّا	رَّسُولٍ	مِّن	قَبْلِهِم
فعل ماض +ضمير [ق و ل]বলেছিল তারা	ح. حصر ছাড়া	اسم منصوب [ر س ل]রসূল	جرّ হতে	اسم مجرور +ضمير [ق ب ل]তাদের পূর্বে

রসূল আগমন করেছে, তারা বলছেঃ

مَجْنُونٌ ﴿52﴾	أَوْ	سَاحِرٌ
اسم مرفوع [ج ن ن]উন্মাদ	ح.عطفঅথবা	اسم مرفوع [س ح ر] যাদুকর

যাদুকর, না হয় উন্মাদ।

هُمْ	بَلْ	بِهِۦ ج	أَتَوَاصَوْاْ
ضمير منفصل তারা	ح. إضراب বরং	جرّ +ضمير তাতে	ح. استفهام +فعل ماض +ضمير [و ص ي]VI কি পরামর্শ করেছে তারা পরস্পরে

51|53|তারা কি একে অপরকে এই উপদেশই

طَاغُونَ ﴿53﴾	قَوْمٌ
[ط غ ي] اسم مرفوعসীমালংঘনকারী	[ق و م] اسم مرفوعজাতি
দিয়ে গেছে? বস্তুতঃ ওরা দুষ্ট সম্প্রদায়।	

بِمَلُومٍ ﴿54﴾	أَنتَ	فَمَآ	عَنْهُمْ	فَتَوَلَّ
جرّ +اسم مجرور [ل و م]তিরস্কৃত	ضمير منفصل তুমি	ح. استئنافية +ح. نفيअতঃপর না	جرّ +ضمير	ح. استئنافية তাদের থেকে فعل أمر [و ل ي+V] অতএব মুখ ফিরাও
51|54|অতএব, আপনি ওদের থেকে মুখ ফিরিয়ে নিন। এতে আপনি অপরাধী হবেন না।				

ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿55﴾	تَنفَعُ	ٱلذِّكْرَىٰ	فَإِنَّ	وَذَكِّرْ
معرفة اسم منصوب [ا م ن][IV] মুমিনদের	فعل مضارع [ن ف ع]উপকার দিবে	معرفة اسم منصوب [ذ ك ر]উপদেশ	ح. استئنافية +ح. مشبه بفعل অতএব নিশ্চয়ই	ح.عطف +فعل أمر [ذ ك ر II] এবংউপদেশ দাও
51|55|এবং বোঝাতে থাকুন; কেননা, বোঝানো মুমিনদের উপকারে আসবে।				

وَٱلْإِنسَ	ٱلْجِنَّ	خَلَقْتُ	وَمَا

ح.عطف +معرفة اسم منصوب [ا ن س] মানুষকে	معرفة اسم منصوب [ج ن ن]জ্বিনকে	فعل ماض +ضمير [خ ل ق]সৃষ্টি করেছি আমরা	ح.عطف +ح. نفيএবং না

51|56|আমার এবাদত করার জন্যই আমি মানব

لِيَعْبُدُونِ ﴿56﴾	إِلَّا
ل-تعليل +فعل مضارع منصوب +ضمير +ضمير [ع ب د]যেন ইবাদত করে তারা আমার	ح. حصرছাড়া

ও জিন জাতি সৃষ্টি করেছি।

وَمَآ	رِّزْقٍ	مِّن	مِّنْهُم	أُرِيدُ	مَآ
ح.عطف +ح. نفيএবং না	اسم مجرور [ر ز ق]জীবিকা	جرّ হতে	جرّ +ضمير তাদের থেকে	فعل مضارع [ر و د IV] চাই আমি	ح. نفي না

51|57|আমি তাদের কাছে জীবিকা চাই না এবং এটাও চাই না যে,

يُطْعِمُونِ ﴿57﴾	أَن	أُرِيدُ
فعل مضارع منصوب +ضمير +ضمير [ط ع م] খাওয়াবে তারা আমাকে	ح. مصدرية যে	فعل مضارع [ر و د IV] চাই আমিয

তারা আমাকে আহার্য যোগাবে।

ٱلرَّزَّاقُ	هُوَ	ٱللَّهَ	إِنَّ

معرفة اسم مرفوع [ر ز ق] **রিযিকদাতা**	ضمير منفصل **তিনিই**	لفظ الجلالة منصوب **[اله]আল্লাহ**	ح. مشبه بفعل **নিশ্চয়ই**
51|58|আল্লাহ তা’আলাই তো জীবিকাদাতা			

ٱلْمَتِينُ ﴿58﴾	ٱلْقُوَّةِ	ذُو
[م ت ن] معرفة اسم مرفوع**প্রবল পরাক্রান্ত**	معرفة اسم مجرور [ق و ي] **শক্তি র**	اسم مرفوع **অধিকারী**
শক্তির আধার, পরাক্রান্ত।		

ذَنُوبِ	مِّثْلَ	ذَنُوبًا	ظَلَمُواْ	لِلَّذِينَ	فَإِنَّ
اسم مجرور [ذ ن ب] **গুনার শাস্তি**	اسم منصوب [م ث ل] **যেমন**	اسم منصوب [ذ ن ب] **গুনার শাস্তি**	فعل ماض +ضمير [ظ ل م] **যুলুম করেছে**	جرّ +اسم موصول **তাদের জন্য**	ح. استئنافية +ح. مشبه بفعل **অতএব নিশ্চয়ই**
51|59|অতএব, এই যালেমদের প্রাপ্য তাই, যা ওদের অতীত সহচরদের প্রাপ্য ছিল।					

يَسْتَعْجِلُونِ ﴿59﴾	فَلَا	أَصْحَٰبِهِمْ
[Xفعل مضارع +ضمير [ع ج ل] **তাড়াহুড়া করের তারা আমার কাছে**	ح. استئنافية +ح. نق অতএব **না**	اسم مجرور +ضمير [ص ح ب] **তাদের সাথীদের**
কাজেই ওরা যেন আমার কাছে তা তাড়াতাড়ি না চায়।		

يَوْمِهِمُ	مِن	كَفَرُواْ	لِّلَّذِينَ	فَوَيْلٌ
اسم مجرور +ضمير [ي و م]তাদের দিনের	جرّ হতে	فعل ماض +ضمير [ك ف ر]কুফরী করেছে	جرّ +اسم موصولতাদের জন্য	ح. استئنافية +اسم مرفوعঅতঃপর দুর্ভোগ
51|60|অতএব, কাফেরদের জন্যে দুর্ভোগ সেই দিনের,				

يُوعَدُونَ ﴿60﴾	ٱلَّذِى
فعل مضارع مجهول +ضمير [و ع د]	اسم موصولযার
যেদিনের প্রতিশ্রুতি ওদেরকে দেয়া হয়েছে।	

।।সূরা আয্ – যারিয়াহ সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ

৫২। সূরা আত্-তুর : মাদানী

রুকু: ০২ আয়াত: ৪৯

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴾2﴿ مَّسْطُورٍ	وَكِتَٰبٍ	﴾1﴿ وَٱلطُّورِ
اسم مجرور [س ط ر]লিখিত	ح.عطف +اسم مجرور [ك ت ب]এবং একখানা কিতাবের	ح. القسم +معرفة اسم مجرور [ط و ر]শপথ, তুর পর্বতের

52|1|কসম তূরপর্বতের,
52|2|এবং লিখিত কিতাবের,

﴾4﴿ ٱلْمَعْمُورِ	وَٱلْبَيْتِ	﴾3﴿ مَّنشُورٍ	رَقٍّ	فِى
معرفة اسم مجرور [ع م ر]চির আবাদ	ح.عطف +معرفة اسم مجرور[ب س ت]এবং ঘরের	اسم مجرور [ن ش ر]উন্মুক্ত	اسم مجرور [ر ق ق]চামড়ার কাগজের	جرّ মধ্যে

52|3|প্রশস্ত পত্রে,
52|4|কসম বায়তুল-মামুর তথা আবাদ গৃহের,

﴾6﴿ ٱلْمَسْجُورِ	وَٱلْبَحْرِ	﴾5﴿ ٱلْمَرْفُوعِ	وَٱلسَّقْفِ
معرفة اسم مجرور [س ج ر]উদ্বলিত	ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ب ح ر]এবং সমুদ্রের	معرفة اسم مجرور [ر ف ع]সুউচ্চ	ح.عطف +معرفة اسم مجرور [س ق ف]এবং ছাদের

52|5|এবং সমুন্নত ছাদের,
52|6|এবং উত্তাল সমুদ্রের,

﴾7﴿ لَوَٰقِعٌ	رَبِّكَ	عَذَابَ	إِنَّ
ل-تاكيد +اسم مرفوع [و ق ع]অবশ্যই ঘটবে	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমার রবের	اسم منصوب [ع ذ ب]আযাব	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই

52|7|আপনার পালনকর্তার শাস্তি অবশ্যম্ভাবী,

مَّا	لَهُۥ	مِن	دَافِعٍ ﴿8﴾	يَوْمَ	تَمُورُ
ح. نفي নাই	جرّ +ضمير তার জন্য	جرّ হতে	اسم مجرور [د ف ع] প্রতিরোধকারী	اسم منصوب [ي و م] সেদিন	فعل مضارع [م و ر]প্রকম্পিত হবে
52|8|তা কেউ প্রতিরোধ করতে পারবে না। 52|9|সেদিন আকাশ প্রকম্পিত					

ٱلسَّمَآءُ	مَوْرًا ﴿9﴾	وَتَسِيرُ	ٱلْجِبَالُ	سَيْرًا ﴿10﴾
معرفة اسم مرفوع [س م و] আকাশ	اسم منصوب [م و ر]প্রবল কম্পনে	ح.عطف +فعل مضارع [س ي ر] এবং চলবে	معرفة اسم مرفوع [ج ب ل] পর্বতসমূহ	اسم منصوب [س ي ر] চলনে
হবে প্রবলভাবে। 52|10|এবং পর্বতমালা হবে চলমান,				

فَوَيْلٌ	يَوْمَئِذٍ	لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿11﴾
ح. استئنافية +اسم مرفوعঅতঃপর ধ্বংস	ظ. زمانসেদিন	جرّ +معرفة اسم مجرور [ك ذ ب II] মিথ্যাবাদীদের জন্য
52|11|সেদিন মিথ্যারোপকারীদের দুর্ভোগ হবে,		

ٱلَّذِينَ	هُمْ	فِى	خَوْضٍ	يَلْعَبُونَ ﴿12﴾
اسم موصول যারা	ضمير منفصل তারা	جرّ মধ্যে	اسم مجرور [خ و ض]নির র্থক	فعل مضارع +ضمير [ل ع ب] ক্রিয়া – কৌতুক করে তারা
52|12|যারা ক্রীড়াচ্ছলে মিছেমিছি কথা বানায়।				

نَارِ	إِلَىٰ	يُدَعُّونَ	يَوْمَ
اسم د[ن و ر] আগুনের	جرّ প্রতি	[فعل مضارع مجهول +ضمير [د ع و || ধাক্কা দেওয়া হবে তাদের	اسم منصوب [ي و م]সেদিন
52|13|সেদিন তোমাদেরকে জাহান্নামের অগ্নির দিকে ধাক্কা মেরে			

﴾13﴿ دَعًّا	جَهَنَّمَ
[د ع ع] اسم منصوبপ্রচন্ড ধাক্কা	(ممنوع) اسم علم مجرور بالفتحةজাহান্নামের
মেরে নিয়ে যাওয়া হবে।	

كُنتُم	ٱلَّتِي	ٱلنَّارُ	هَٰذِهِ
[ك و ن]فعل ماض +هছিলে তোমরা	اسم موصول যা	معرفة اسم مرفوع [ن و ر] আগুন	اسم اشارةএই সেই
52|14|এবং বলা হবেঃ এই সেই অগ্নি, যাকে			

﴾14﴿ تُكَذِّبُونَ	بِهَا
[ك ذ ب] فعل مضارع +ضمير|| মিথ্যা বলতে তোমরা	جرّ +ضميرতাকে
তোমরা মিথ্যা বলতে,	

أَنتُمْ	أَمْ	هَٰذَآ	أَفَسِحْرٌ
ضمير منفصل তোমরা	ح.عطف অথবা	اسم اشارة এটা	ح. استفهام +ح. زائدة +اسم مرفوع [س ح ر]তবে কি যাদু
52|15|এটা কি জাদু, না তোমরা			

تُبْصِرُونَ ﴿15﴾	لَا
فعل مضارع +ضمير [ب ص ر]দেখ তোমরা	ح. نفي না
চোখে দেখছ না?	

تَصْبِرُوا۟	لَا	أَوْ	فَٱصْبِرُوٓا۟	ٱصْلَوْهَا
فعل مضارع مجزوم [ص ب ر]সহ্য করতে পার তোমরা	ح. نهي না	ح.عطف অথবা	ح. استئنافية +فعل أ+ضمير [ص ب ر]অতঃপর সহ্য করতে পার তোমরা	فعل أمر +ضمير+ضمير [ص ل ي]ভষ্ম হও তোমরা তাতে
52|16|এতে প্রবেশ কর অতঃপর তোমরা সবর কর অথবা না কর,				

تُجْزَوْنَ	إِنَّمَا	عَلَيْكُمْ ۖ	سَوَآءٌ
فعل مضارع مجهول +ضمير [ج ز ي]প্রতিফল দেওয়া হচ্ছে তোমাদের	ح. مشبه بفعل +ما-كافة প্রকৃত পক্ষে	جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	اسم مرفوع [س و ي]সমান
উভয়ই তোমাদের জন্য সমান। তোমরা			

﴿16﴾ تَعْمَلُونَ	كُنتُمْ	مَا
[ع م ل] ضمير+ فعل مضارعসম্পাদন কর তোমরা	[ك و ن] ضمير+ فعل ماضছিলে তোমরা	اسم موصول যা
যা করতে তোমাদেরকে কেবল তারই প্রতিফল দেয়া হবে।		

﴿17﴾ وَنَعِيمٍ	جَنَّٰتٍ	فِي	ٱلْمُتَّقِينَ	إِنَّ
ح.عطف +اسم مجرور [ن ع م]নিয়ামত সমূহের	اسم علم مجرور [ج ن ن]জান্নাতের	جرّ মধ্যে	معرفة اسم منصوب [و ق ي VIII] মুত্তাকীরা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
52|17|নিশ্চয় খোদাভীরুরা থাকবে জান্নাতে ও নেয়ামতে।				

رَبُّهُمْ	وَوَقَىٰهُمْ	رَبُّهُمْ	ءَاتَىٰهُمْ	بِمَآ	فَٰكِهِينَ
اسم مرفوع +ضمير [ر ب ب] তাদের রব	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [و ق ي]এবং রক্ষা করবেন তাদের	اسم منصوب +ضمير [ر ب ب] তাদের রব	فعل ماض +ضمير [ا ت ي IV] দান করবেন তাদের	جرّ +اسم موصول তার যা	اسم منصوب [ف ك ه]স্বাদ গ্রহনকারীরা
52|18|তারা উপভোগ করবে যা তাদের পালনকর্তা তাদের দেবেন এবং					

﴿18﴾ ٱلْجَحِيمِ	عَذَابَ
[ج ح م] معرفة اسم مجرورদোযখের	[ع ذ ب] اسم منصوبশাস্তি
তিনি জাহান্নামের আযাব থেকে তাদেরকে রক্ষা করবেন	

بِمَا	هَنِيٓـًٔا	وَٱشْرَبُوا۟	كُلُوا۟
جرّ +اسم موصولতা যা	اسم منصوب [ه ن ا]মজা করে	ح.عطف +فعل أمر+ضمير [ش ر ب]ও পান কর তোমরা	فعل أمر+ضمير [ا ك ل]খাও তোমরা
52|19|তাদেরকে বলা হবেঃ তোমরা যা করতে তার প্রতিফলস্বরূপ তোমরা			

تَعْمَلُونَ ﴿19﴾	كُنتُمْ
[ع م ل] فعل مضارع +ضمير সম্পাদন কর তোমরা	[ك و ن] فعل ماض +ضمير ছিলে তোমরা
তৃপ্ত হয়ে পানাহার কর।	

وَزَوَّجْنَٰهُم	مَّصْفُوفَةٍ ۖ	سُرُرٍ	عَلَىٰ	مُتَّكِـِٔينَ
ح.عطف +فعل ماض +ضمير +ضمير [ز و ج II] বিবাহদিব তাদের আমরা	اسم مجرور [ص ف ف] সারিবদ্ধভাবে	اسم مجرور [س ر ر]আসনসমূহের	جرّ উপ্রর	اسم منصوب[و ك ا VIII] হেলান দানকারীরা
52|20|তারা শ্রেণীবদ্ধ সিংহাসনে হেলান দিয়ে বসবে। আমি তাদেরকে আয়তলোচনা হুরদের				

عِينٍ ﴿20﴾	بِحُورٍ
[ع ي ن] اسم مجرور সুলোচনা	[ح و ر] جرّ +اسم مجرور হুরদের সাথে

সাথে বিবাহবন্ধনে আবদ্ধ করে দেব।

بِإِيمَٰنٍ	ذُرِّيَّتُهُم	وَٱتَّبَعَتْهُمْ	ءَامَنُوا۟	وَٱلَّذِينَ
جرّ +اسم مجرور [ا م ن IV] ঈমান সহ	اسم مرفوع +ضمير [ذ ر ر]তাদের সন্তানরা	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ت ب ع VIII] অনুসরন করেছে তাদের	فعل ماض +ضمير [ا م ن]IV] ঈমান এনেছে	ح.عطف +اسم موصولএবং যারা
52|21|যারা ঈমানদার এবং যাদের সন্তানরা ঈমানে তাদের অনুগামী,				

مِّنْ	أَلَتْنَٰهُم	وَمَآ	ذُرِّيَّتَهُمْ	بِهِمْ	أَلْحَقْنَا
جرّ হতে	فعل ماض +ضمير +ضمير [ا ل ت] হ্রাস করব আমরা তাদের	ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم منصوب +ضمير [ذ ر ر] তাদের সন্তানদের	جرّ +ضمير তাদের সাথে	فعل ماض +ضمير [ل ح قIV] মিলাব আমরা
আমি তাদেরকে তাদের পিতৃপুরুষদের সাথে মিলিত করে দেব এবং তাদের আমল					

بِمَا	ٱمْرِئٍۭ	كُلُّ ج	شَىْءٍ	مِّن	عَمَلِهِم
جرّ +اسم موصولতা যা	اسم مجرور [م ر ا ة]ব্যক্তি	اسم مرفوع [ك ل]প্রত্যেক	اسم ج[ش ي ا]কিছুই	جرّ হতে	اسم مجرور +ضمير [ع م ل]তাদের আমল
বিন্দুমাত্রও হ্রাস করব না। প্রত্যেক ব্যক্ত					

﴾21﴿ رَهِينٌ	كَسَبَ
اسم مرفوع [ر ه ن] **বন্ধক**	فعل ماض [ك س ب] **অর্জন করেছে সে**
নিজ কৃত কর্মের জন্য দায়ী।	

﴾22﴿ يَشْتَهُونَ	مِّمَّا	وَلَحْمٍ	بِفَٰكِهَةٍ	وَأَمْدَدْنَٰهُم
فعل مضارع +ضمير [VIII]ش ه و **পছন্দ করে তারা**	جرّ +اسم موصول **হতে যা**	ح.عطف +اسم مجرور [ل ه م] **গোশত**	جرّ +اسم مجرور [ف ك ه] **ফলমূল**	ح.عطف +فعل ماض +ضمير +ضمير [م د د] **দেব আমরা**
52|22|আমি তাদেরকে দেব ফল-মূল এবং মাংস যা তারা চাইবে।				

لَغْوٌ	لَّا	كَأْسًا	فِيهَا	يَتَنَٰزَعُونَ
اسم مرفوع [ل غ و] **বেহুদা কথা**	ح. نفي **না**	اسم منصوب [ك ا س] **পানপাত্র**	جرّ +ضمير **তার মধ্যে**	فعل مضارع +ضمير [ن ز ع VI] **গ্রহন করবে পরষ্পর তারা**
52|23|সেখানে তারা একে অপরকে পানপাত্র দেবে; যাতে অসার বকাবকি নেই				

﴾23﴿ تَأْثِيمٌ	وَلَا	فِيهَا
اسم مرفوع [ا ث م] **পাপকর্ম**	ح.عطف +ح. نفي **এবং না**	جرّ +ضمير **তার মধ্যে**
এবং পাপকর্মও নেই।		

وَيَطُوفُ	عَلَيْهِمْ	غِلْمَانٌ	لَّهُمْ	كَأَنَّهُمْ
ح. عطف + فعل مضارع[ط و ف] ঘুরতে থাকবে	جرّ +ضمير তাদের কাছে	اسم مرفوع [غ ل م]বালকরা	جرّ +ضمير তাদের জন্য	جرّ +ح. مشبه بفعل+ ضمير যেন তারা
52|24|সুরক্ষিত মোতিসদৃশ কিশোররা তাদের				

لُؤْلُؤٌ	مَّكْنُونٌ ﴿24﴾
اسم مرفوع [ل ا ل]মুক্তা	اسم مرفوع [ك ن ن]লুকিয়ে রাখা
সেবায় ঘুরাফেরা করবে।	

وَأَقْبَلَ	بَعْضُهُمْ	عَلَىٰ	بَعْضٍ	يَتَسَآءَلُونَ ﴿25﴾
ح.عطف +فعل ماض [ق ب ل IV] সামনা সামনি হবে	اسم مرفوع +ضمير [ب ع ض]তাদের একে	جرّউপর	اسم مجرور [ب ع ض] অপরের	فعل مضارع +ضمير [س ا ل VI] পরষ্পর জিজ্ঞাসা বাদ করবে
52|25|তারা একে অপরের দিকে মুখ করে জিজ্ঞাসাবাদ করবে।				

قَالُوٓاْ	إِنَّا	كُنَّا	قَبْلُ	فِىٓ
فعل ماض +ضمير [ق و ل]বলবে তারা	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমরা	فعل ماض +ضمير]ছিলাম আমরা	اسم مرفوع [ق ب ل]পূর্বে	جرّ মধ্যে
52|26|তারা বলবেঃ আমরা ইতিপূর্বে নিজেদের বাসগৃহে				

مُشْفِقِينَ ﴿26﴾	أَهْلِنَا
اسم منصوب [ش ف ق IV] শঙ্কিত	اسم مجرور +ضمير [ا ه ل]আমাদের পরিবারের
ভীত-কম্পিত ছিলাম।	

وَوَقَىٰنَا	عَلَيْنَا	ٱللَّهُ	فَمَنَّ
ح.عطف +فعل ماض +ضمير [و ق ي]এবং রক্ষা করেছেন আমাদের	جرّ +ضمير আমাদের উপর	لفظ الجلالة مرفوع [اله] আল্লাহ	ح. استئنافية +فعل ماض [م ن]অতঃপর অনুগ্রহ করেছেন
52|27|অতঃপর আল্লাহ আমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন এবং আমাদেরকে			

ٱلسَّمُومِ ﴿27﴾	عَذَابَ
معرفة اسم مجرور [س م و]ঝলসান লু-হাওয়ার	اسم منصوب [ع ذ ب]শাস্তি
আগুনের শাস্তি থেকে রক্ষা করেছেন।	

هُوَ	إِنَّهُۥ	نَدْعُوهُ ۖ	قَبْلُ	مِن	كُنَّا	إِنَّا
ضمير منفصل তিনিই	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই তিনি	فعل مضارع+ضمير [د ع و]ডাকতাম আমরা তাদের	اسم مرفوع [ق ب ل]পূর্বে	جرّ হতে	فعل ماض +ضمير [ك و ن] ছিলাম আমরা	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমরা
52|28|আমরা পূর্বেও আল্লাহকে ডাকতাম। তিনি						

ٱلرَّحِيمُ ﴿28﴾	ٱلْبَرُّ
معرفة صفة مرفوعة [ح ر م]অতিব মেহেরবান	معرفة اسم مرفوع [ب ر ر]বড়ই অনুগ্রহকারী
সৌজন্যশীল, পরম দয়ালু।	

بِكَاهِنٍ	رَبِّكَ	بِنِعْمَتِ	أَنتَ	فَمَآ	فَذَكِّرْ
جرّ +اسم مجرور [ك ه ن]কোন গণক	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমার রবের	جرّ +اسم مجرور [ن ع م]অনুগ্রহে	ضمير منفصل তুমি	ح. استئنافية +ح. نفي অতঃপর না	ح. استئنافية +فعل أمر [ذ ك ر]IIঅতএব উপদেশ দাও
52|29|অতএব, আপনি উপদেশ দান করুন। আপনার পালনকর্তার কৃপায় আপনি					

مَجْنُونٍ ﴿29﴾	وَلَا
اسم مجرور [ج ن ن]উন্মাদ	ح.عطف +ح. نفيএবং না
অতীন্দ্রিয়বাদী নন এবং উন্মাদও নন	

بِهِۦ	نَّتَرَبَّصُ	شَاعِرٌ	يَقُولُونَ	أَمْ
جرّ +ضمير এ জন্য	فعل مضارع +ضمير [ر ب ص	اسم مرفوع [ش ع ر]একজন কবি	فعل مضارع +ضمير [ق و ل]বলে তারা	ح.عطف অথবা

	V] অপেক্ষা করছি আমরা			

52|30|তারা কি বলতে চায়ঃ সে একজন কবি আমরা

ٱلْمَنُونِ ﴿30﴾	رَيْبَ
معرفة اسم مرفوع [م ن ن]কালের	اسم منصوب [ر ي ب]বিপর্যয়ের

তার মৃত্যু-দুর্ঘটনার প্রতীক্ষা করছি।

مَعَكُم	فَإِنِّ	تَرَبَّصُواْ	قُلْ
ظ. مكان منصوب +ضميرতোমাদের সাথে	ح. استئنافية +ح. مشبه بفعل +ضميرঅতঃপর নিশ্চয়ই আমি	فعل ماض +ضمير [ر ب صV] অপেক্ষা কর তোমরা	فعل أمر [ق و ل] বল

52|31|বলুনঃ তোমরা প্রতীক্ষা কর, আমিও তোমাদের সাথে

ٱلْمُتَرَبِّصِينَ ﴿31﴾	مِّنَ
معرفة اسم مجرور [ر ب صV] অপেক্ষাকারীদের	جرّহতে

প্রতীক্ষারত আছি।

بِهَٰذَآ ۚ	أَحْلَٰمُهُم	تَأْمُرُهُم	أَمْ
جرّ +اسم اشارة এ বিষয়ে	اسم مرفوع +ضمير [ح ل م] তাদের বিবেক	فعل مضارع +ضمير [ا م ر] নির্দেশ দেয় তাদের	ح.عطف অথবা
52|32|তাদের বুদ্ধি কি এ বিষয়ে তাদেরকে আদেশ করে,			

طَاغُونَ ﴿32﴾	قَوْمٌ	هُمْ	أَمْ
اسم مرفوع [ط غ ي] সীমালংঘনকারী	اسم مرفوع [ق و م] সম্প্রদায়	ضمير منفصلতারা	ح.عطف অথবা কি
না তারা সীমালংঘনকারী সম্প্রদায়?			

يُؤْمِنُونَ ﴿33﴾	لَّا	بَل	تَقَوَّلَهُۥ ۚ	يَقُولُونَ	أَمْ
فعل مضارع +ضمير [ا م ن][IV] ঈমান আনবে তারা	ح. نفي না	ح. إضراب বরং	فعل ماض +ضمير [ق و ل][V] রচনা করেছে তা সে	فعل مضارع +ضمير [ق و ل] বলে তারা	ح.عطف অথবা
52|33|না তারা বলেঃ এই কোরআন সে নিজে রচনা করেছে? বরং তারা অবিশ্বাসী।					

إِن	مِّثْلِهِۦٓ	بِحَدِيثٍ	فَلْيَأْتُوا۟
ح. شرط যদি	شاسم مجرور +ضمير [م ث ل] এই রূপ	جرّ +اسم مجرور[ح د ث]কোন কালাম	ح. استئنافية +ل-أمر +فعل مضارع مجزومঅতঃপর +ضمير[ا ت ي] আনুক তারা
52|34|যদি তারা সত্যবাদী হয়ে থাকে, তবেএর			

﴿34﴾ صَٰدِقِينَ	كَانُواْ
[ص د ق] اسم منصوبসত্যবাদী	[ك و ن] ضمير +فعل ماضহয় তারা
অনুরূপ কোন রচনা উপস্থিত করুক।	

شَيْءٍ	غَيْرِ	مِنْ	خُلِقُواْ	أَمْ
اسم مجرور [ش ي ا] কিছু	اسم مجرور [غ ي ر] ব্যতীত	جرّ হতে	فعل ماض مجهول +ضمير[خ ل ق] সৃষ্ট হয়েছে তারা	ح.عطف অথবা
52|35|তারা কি আপনা-আপনিই সৃজিত হয়ে গেছে,				

﴿35﴾ ٱلْخَٰلِقُونَ	هُمُ	أَمْ
[خ ل ق] معرفة اسم مرفوعসৃষ্টিকারী	ضمير منفصلতারা	ح.عطفঅথবা
না তারা নিজেরাই স্রষ্টা		

وَٱلْأَرْضَ ۚ	ٱلسَّمَٰوَٰتِ	خَلَقُواْ	أَمْ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ا ر ض] পৃথিবী	معرفة اسم مجرور [س ط و] আকাশ মন্ডলী	فعل ماض +ضمير [خ ل ق] সৃষ্টি করেছে	ح.عطف অথবা
52|36|না তারা নভোমন্ডল ও ভূমন্ডল সৃষ্টি করেছে?			

﴿36﴾ يُوقِنُونَ	لَّا	بَل

فعل مضارع +ضمير [ي ق ن] প্রত্যয় রাখে তারা	ح. نفي না	ح. إضراب বরং
বরং তারা বিশ্বাস করে না।		

أَمْ	رَبِّكَ	خَزَآئِنُ	عِندَهُمْ	أَمْ
ح.عطف অথবা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তামার রবের	اسم مرفوع [خ ز ن]ধনভান্ডার	ظ. مكان منصوب +ضمير [ع ن د] তাদের কাছে	ح.عطف অথবা
52|37|তাদের কাছে কি আপনার পালনকর্তার ভান্ডার রয়েছে,				

ٱلْمُصَيْطِرُونَ ﴿37﴾	هُمُ
معرفة اسم مرفوع [س ط ر IV] শাসক	ضمير منفصل তারাই
না তারাই সবকিছুর তত্ত্বাবধায়ক?	

فَلْيَأْتِ	فِيهِ ۖ	يَسْتَمِعُونَ	سُلَّمٌ	لَهُمْ	أَمْ
ح. استئنافية+ل-أمر +فعل مضارع مجزوم [ا ت ي] অতঃপর আনুক	جرّ +ضمير তার মধ্যে	فعل مضارع +ضمير [س م ع X] শুনে নেয় তারা	اسم مرفوع [س ل م] কোন সিঁড়ি	جرّ +ضمير তাদের জন্য	ح.عطف অথবা
52|38|না তাদের কোন সিঁড়ি আছে, যাতে					

﴿38﴾ مُّبِينٍ	بِسُلْطَٰنٍ	مُسْتَمِعُهُم
اسم مجرور [ب ي ن IV] সুস্পষ্ট	جرّ +اسم مجرور [س ل ط] দলীল সহ	اسم مرفوع +ضمير [س م ع VIII] তাদের কোন স্রোতা
আরোহণ করে তারা শ্রবণ করে? থাকলে তাদের শ্রোতা সুস্পষ্ট প্রমাণ উপস্থিত করুক		

﴿39﴾ ٱلْبَنُونَ	وَلَكُمُ	ٱلْبَنَٰتُ	لَهُ	أَمْ
معرفة اسم منصوب [ب ن ي] পুত্ররা	ح.عطف +جرّ +ضمير এবং তোমাদের জন্য	معرفة اسم مرفوع [ب ن ي]কন্যারা	جرّ +ضمير তাঁর জন্য	ح.عطف অথবা
52|39|না তার কন্যা-সন্তান আছে আর তোমাদের আছে পুত্রসন্তান?				

مِّن	فَهُم	أَجْرًا	تَسْـَٔلُهُمْ	أَمْ
جرّ হতে	ح. استئنافية +ضمير অতঃপর তারা	اسم منصوب [ا ج ر] কোন পারিশ্রমিক	فعل مضارع +ضمير [س ا ل]চাচ্ছ তুমি তাদের কাছে	ح.عطف অথবা
52|40|না আপনি তাদের কাছে পারিশ্রমিক চান যে,				

﴿40﴾ مُّثْقَلُونَ	مَّغْرَمٍ
[ث ق ل] اسم مرفوعভারগ্রস্থ	[غ ر م] اسم مجرورজরিমানা
তাদের উপর জরিমানার বোঝা চেপে বসে?	

﴾41﴿ يَكۡتُبُونَ	فَهُمۡ	ٱلۡغَيۡبُ	عِندَهُمُ	أَمۡ
فعل مضارع +ضمير [ك ت ب] লিখে তারা	ح. استئنافية +ضميرঅতএব তারা	معرفة اسم مرفوع [غ ي ب]অদৃশ্যের জ্ঞান	ظ. مكان منصوب +ضمير [ع ن د] তাদের কাছে	ح.عطف অথবা

52|41|না তাদের কাছে অদৃশ্য বিষয়ের জ্ঞান আছে যে, তারাই তা লিপিবদ্ধ করে?

كَفَرُواْ	فَٱلَّذِينَ	كَيۡدًاۖ	يُرِيدُونَ	أَمۡ
فعل ماض +ضمير [ك ف ر]কুফরী করেছে	ح. استئنافية +اسم موصولঅতঃপর যারা	اسم منصوب [ك ي د]কোন ষড়যন্ত্র	فعل مضارع +ضمير [ر و د] চায় তারা	ح.عطف অথবা

52|42|না তারা চক্রান্ত করতে চায়? অতএব যারা কাফের,

﴾42﴿ ٱلۡمَكِيدُونَ	هُمُ
معرفة اسم مرفوع [ك ي د]ষড়যন্ত্রের শিকার	ضمير منفصلতারাই

তারই চক্রান্তের শিকার হবে।

سُبۡحَٰنَ	ٱللَّهِۚ	غَيۡرُ	إِلَٰهٌ	لَهُمۡ	أَمۡ
اسم منصوب [س ب ح]মহান পবিত্র	لفظ الجلالة [اله]আল্লাহ	اسم مرفوع [غ ي ر]ব্যতীত	اسم مرفوع [ا ل ه] ইলাহ	جرّ +ضمير তাদের জন্য	ح.عطف অথবা

52|43|না তাদের আল্লাহ তা'আলা ব্যতীত কোন উপাস্য আছে?

﴾43﴿ يُشْرِكُونَ	عَمَّا	ٱللَّهِ
فعل مضارع +ضمير [ش ر ك] শরীক করে তারা	جرّ +اسم موصولহতে যার	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহ
তারা যাকে শরীক করে, আল্লাহ তা’আলা তা থেকে পবিত্র।		

سَاقِطًا	ٱلسَّمَآءِ	مِّنَ	كِسْفًا	يَرَوْاْ	وَإِن
اسم منصوب [س ق ط] পড়তে	معرفة اسم مجرور [س م و]আকাশ মন্ডলী	جرّ হতে	اسم منصوب [ك س ف] এক অংশ	فعل مضارع منصوب [ر ا ي]দেখে তারা	ح.عطف +ح. شرطএবং যদি
52|44|তারা যদি আকাশের কোন খন্ডকে পতিত হতে দেখে,					

﴾44﴿ مَّرْكُومٌ	سَحَابٌ	يَقُولُواْ
اسم مرفوع [ر ك م] পুন্জীভূত	اسم مرفوع [س ح ب]মেঘ	فعل مضارع +ضمير [ق و ل] বলবে তারা
তবে বলে এটা তো পুঞ্জীভুত মেঘ।		

ٱلَّذِى	يَوْمَهُمُ	يُلَٰقُواْ	حَتَّىٰ	فَذَرْهُمْ
اسم موصول যা	اسم منصوب +ضمير [ي و م] তাদের সে দিনের	فعل مضارع منصوب [ل ق ي]IIII সাক্ষাৎ করবে তারা	جرّ যতক্ষন না	ح. استئنافية +فعل أمر +ضمير [و ذ ر]অতএব ছেড়ে দাও তাদের

52|45|তাদেরকে ছেড়ে দিন সেদিন পর্যন্ত,

فِيهِ	يُصْعَقُونَ ﴿45﴾
جرّ +ضميرতার মধ্যে	فعل مضارع مجهول +ضمير [ص ت ق]বেহুশ করা হবে তাদের
যেদিন তাদের উপর বজ্রাঘাত পতিত হবে।	

يَوْمَ	لَا	يُغْنِي	عَنْهُمْ	كَيْدُهُمْ	شَيْـًٔا	وَلَا
اسم منصوب [ي و م]সে দিন	ح. نفي না	فعل مضارع [غ ن ي IV] আসবে কাজে	جرّ +ضمير তাদের জন্য	اسم مرفوع +ضمير 5ك ي [-তাদের ষড়যন্ত্র	اسم منصوب [ش ي ا] কিছু মাত্র	ح.عطف +ح. نفي এবং না
52|46|সেদিন তাদের চক্রান্ত তাদের কোন উপকারে আসবে না						

هُمْ	يُنصَرُونَ ﴿46﴾
ضمير منفصلতাদের	فعل مضارع مجهول [ن ص ر]সাহায্য করা হবে
এবং তারা সাহায্যপ্রাপ্তও হবে না	

وَإِنَّ	لِلَّذِينَ	ظَلَمُوا۟	عَذَابًا	دُونَ	ذَٰلِكَ

اسم اشارة এটা	[اسم منصوب [د و ن ছাড়াও	اسم منصوب [ع ذ ب] শাস্তি	فعل ماض +ضمير [ظ ل م]জুলুম করেছে	جرّ +اسم موصولজন্য যারা	ح.عطف +ح. مشبه بفعلএবং নিশ্চয়ই
52|47|গোনাহগারদের জন্যে এছাড়া আরও শাস্তি রয়েছে, কি					

﴾47﴿ يَعْلَمُونَ	لَا	أَكْثَرَهُمْ	وَلَٰكِنَّ
فعل مضارع +ضمير [ع ل م] জানে তারা	ح. نفيনা	اسم منصوب +ضمير [ك ث ر]তাদের অধিকাংশই	ح.عطف+ح. مشبه بفعل কিন্তু
কিন্তু তাদের অধিকাংশই তা জানে না			

وَسَبِّحْ	بِأَعْيُنِنَا ۖ	فَإِنَّكَ	رَبِّكَ	لِحُكْمِ	وَٱصْبِرْ
ح.عطف +فعل أمر [س ب ح]এবং পবিত্রতা ঘোষনা কর	جرّ +اسم مجرور +ضمير [ع ي ن] আমাদের দৃষ্টিতে	ح. استئنافية +ح. مشبه بفعل +ضمير অতঃপর নিশ্চয়ই তুমি	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমার রবের	جرّ +اسم مجرور [ح ك م]ফয়সালার জন্য	ح.عطف +فعل أمر [ص ب ر] এবং ধৈর্য ধর
52|48|আপনি আপনার পালনকর্তার নির্দেশের অপেক্ষায় সবর করুন। আপনি আমার দৃষ্টির সামনে আছেন এবং আপনি আপনার					

﴾48﴿ تَقُومُ	حِينَ	رَبِّكَ	بِحَمْدِ
فعل مضارع [ق و م]উঠ তুমি	اسم منصوب [ح ي ن]যখন	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমার রবের	جرّ +اسم مجرور [ح م د]প্রশংসা সহ
পালনকর্তার র সপ্রশংস পবিত্রতা ঘোষণা করুন যখন আপনি গাত্রোত্থান করেন।			

ٱلنُّجُومِ ﴿49﴾	وَإِدْبَٰرَ	فَسَبِّحْهُ	ٱلَّيْلِ	وَمِنَ
معرفة اسم مجرور[ن ج م] তারকাসমূহের	ح.عطف +اسم منصوب [د ب ر] অস্তগমনে	ح. استئنافية +فعل أمر +ضمير [س ب ح] অতঃপর তসবিহ কর তার	معرفة اسم مجرور [ل ي ل]রাতের	ح.عطف +جرّ এবং হতে
52|49|এবং রাত্রির কিছু অংশে এবং তারকা অস্তমিত হওয়ার সময় তাঁর পবিত্রতা ঘোষণা করুন।				

।।সূরা আত্-তুর সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ

৫৩। সূরা আন্-নাজম : মাক্কী

রুকু: ০৩ আয়াত:৬২

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ضَلَّ	مَا	هَوَىٰ ﴿1﴾	إِذَا	وَٱلنَّجْمِ
فعل ماض [ض ل ل]পথভ্রষ্ট হয়েছে	ح. نفي না	فعل ماض [ه و ي] অস্তমিত হয়	ظ. زمان যখন	ح. القسم +معرفة اسم مجرور [ن ج م]শপথ, তারকার
53|1|নক্ষত্রের কসম, যখন অস্তমিত হয়। 53|2|তোমাদের সংগী পথভ্রষ্ট				

غَوَىٰ ﴿2﴾	وَمَا	صَاحِبُكُمْ
فعل ماض [غ و ي] বিপ্রথগামী	ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم مرفوع +ضمير [ص ح ب]তোমাদের সঙ্গী
হননি এবং বিপথগামীও হননি।		

﴾3﴿ ٱلْهَوَىٰٓ	عَنِ	يَنطِقُ	وَمَا
معرفة اسم مجرور [ه و ي] প্রবৃত্তি	جرّ হতে	فعل مضارع [ن ط ق]কথা বলে সে	ح.عطف +ح. نفي এবং না
53|3|এবং প্রবৃত্তির তাড়নায় কথা বলেন না।			

﴾4﴿ يُوحَىٰ	وَحْىٌ	إِلَّا	هُوَ	إِنْ
فعل مضارع مجهول [و ح ي IV] অবতীর্ণ করা হয়	اسم مرفوع [و ح ي]ওহী	ح. حصر ছাড়া	ضمير منفصلতা	ح. نفي নয়
53|4|কোরআন ওহী, যা প্রত্যাদেশ হয়।				

﴾5﴿ ٱلْقُوَىٰ	شَدِيدُ	عَلَّمَهُۥ
معرفة اسم مجرور [ق و ي]শক্তিতে	اسم مرفوع [ش د د] অত্যন্ত প্রবল	فعل ماض +ضمير [ع ل م II] শিক্ষা দিয়েছে তাকে
53|5|তাঁকে শিক্ষা দান করে এক শক্তিশালী ফেরেশতা,		

﴾6﴿ فَٱسْتَوَىٰ	مِرَّةٍ	ذُو
ح. استئنافية +فعل ماض [س و ي VIII] অতঃপর স্থির হয়ছিল সে	اسم مجرور [م ر ر]কৌশলের	اسم مرفوعঅধিকারী
53|6|সহজাত শক্তিসম্পন্ন, সে নিজ আকৃতিতে প্রকাশ পেল।		

﴾7﴿ ٱلۡأَعۡلَىٰ	بِٱلۡأُفُقِ	وَهُوَ
معرفة اسم مرفوع [ع ل و] উর্দ্ধ	جرّ +معرفة اسم مجرور [ا ف ق] দিগন্তে	ح.عطف +ضمير منفصل এবং তিনি
53|7|উর্ধব দিগন্তে,		

﴾8﴿ فَتَدَلَّىٰ	دَنَا	ثُمَّ
ح. عطف +فعل ماض [د ل و V] এবং ঝচলে থাকল উপরে	فعل ماض [د ن و]নিকটবর্তী হল সে	ح.عطفঅতঃপর
53|8|অতঃপর নিকটবর্তী হল ও ঝুলে গেল।		

﴾9﴿ أَدۡنَىٰ	أَوۡ	قَوۡسَيۡنِ	قَابَ	فَكَانَ
اسم منصوب [د ن و]কিছু কম	ح.عطف অথবা	اسم مرفوع [ق و س]দুই ধনুকের	اسم منصوب [ق و ب]দূরত্বে	ح. استئنافية +فعل ماض [ك و ن] অতঃপর
53|9|তখন দুই ধনুকের ব্যবধান ছিল অথবা আরও কম।হল সে				

﴾10﴿ أَوۡحَىٰ	مَآ	عَبۡدِهِۦ	إِلَىٰ	فَأَوۡحَىٰٓ
فعل ماض [و ح ي IV] ওহী পৌঁছায়েছিলেন	اسم موصول যা	اسم مجرور +ضمير [ع ب د] তাঁর বান্দার	جرّ প্রতি	ح. استئنافية +فعل ماض [و ح ي IV]অতঃপর ওহী পৌঁছাল
53|10|তখন আল্লাহ তাঁর দাসের প্রতি যা প্রত্যাদেশ করবার, তা প্রত্যাদেশ করলেন।				

﴾11﴿ رَأَىٰٓ	مَا	ٱلْفُؤَادُ	كَذَبَ	مَا
فعل ماض [ر ا ي]দেখেছে সে	اسم موصول যা	معرفة اسم مرفوع [ف ا د] অন্তর	فعل ماض [ك ذ ب]মিথ্যা বলেছে	ح. نفيনা
53|11|রসূলের অন্তর মিথ্যা বলেনি যা সে দেখেছে।				

﴾12﴿ يَرَىٰ	مَا	عَلَىٰ	أَفَتُمَٰرُونَهُۥ
فعل مضارع [ر ا ي]দেখেছে সে	اسم موصول যা	حرف جرউপর	ح. استفهام +ح. زائدة +فعل مضارع +ضمير +ضمير [م ر ي]অতএব কি ঝগড়া করছ তোমরা তার সাথে
53|12|তোমরা কি বিষয়ে বিতর্ক করবে যা সে দেখেছে?			

﴾13﴿ أُخْرَىٰ	نَزْلَةً	رَءَاهُ	وَلَقَدْ
اسم مرفوع [ا خ ر] আর একবার	اسم منصوب [ن ز ل]অবতরনে	فعل ماض +ضمير [ر ا ي]দেখেছে তাকে সে	ح.عطف +ل-تاكيد +ح. تحقيقএবং নিশ্চয়ই
53|13|নিশ্চয় সে তাকে আরেকবার দেখেছিল,			

﴾14﴿ ٱلْمُنتَهَىٰ	سِدْرَةِ	عِندَ
[VIII]معرفة اسم مجرور [ن ه ي] শেষপ্রান্তে	اسم مجرور +ضمير [س د ر] কুলগাছের	ظ. مكان منصوب [ع ن د]কাছে
53|14|সিদরাতুলমুন্তাহার নিকটে,		

﴾15﴿ ٱلْمَأْوَىٰٓ	جَنَّةُ	عِندَهَا
معرفة اسم مجرور[ا و ي] বসবাসের	اسم مرفوع [ج ن ن] জান্নাত	ظ. مكان منصوب +ضمير [ع ن د] তার কাছেই আছে
53|15|যার কাছে অবস্থিত বসবাসের জান্নাত।		

﴾16﴿ يَغْشَىٰ	مَا	ٱلسِّدْرَةَ	يَغْشَى	إِذْ
فعل مضارع [غ ش و]আচ্ছন্ন করেছিল	اسم موصول যা	معرفة اسم منصوب [س د ر]কুলগাছটিকে	فعل مضارع [غ ش و]আচ্ছন্ন করেছিল	ظ. زمانযখন
53|16|যখন বৃক্ষটি দ্বারা আচ্ছন্ন হওয়ার, তদ্দ্বারা আচ্ছন্ন ছিল।				

﴾17﴿ طَغَىٰ	وَمَا	ٱلْبَصَرُ	زَاغَ	مَا
فعل ماض [ط غ ي] সীমালঙ্ঘন করেছে	ح.عطف +ح. نفيএবং না	معرفة اسم مرفوع [ب ص ر]দৃষ্টি	فعل ماض [ز ي غ]বিভ্রম হয়েছে	ح. نفيনা
53|17|তাঁর দৃষ্টিবিভ্রম হয় নি এবং সীমালংঘনও করেনি				

﴾18﴿ ٱلْكُبْرَىٰٓ	رَبِّهِ	ءَايَٰتِ	مِنْ	رَأَىٰ	لَقَدْ
معرفة صفة منصوبة [ك ب ر]বড়বড়	اسم ج+ضمير [ر ب ب]তার রবের	اسم مجرور [ا ي ي]নিদর্শনাবলী	جرّ হতে	فعل ماض [ر ا ي]দেখেছে সে	ح. تحقيق নিশ্চয়ই
53|18|নিশ্চয় সে তার পালনকর্তার মহান নিদর্শনাবলী অবলোকন করেছে।					

﴿19﴾ وَٱلْعُزَّىٰ	ٱللَّٰتَ	أَفَرَءَيْتُمُ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور **উয্ যার**	اسم علم منصوب **লাত**	ح. استفهام +ح. زائدة +فعل ماض +ضمير [ر ا ي]**অতঃপর কি দেখছ তোমরা**
53|19|তোমরা কি ভেবে দেখেছ লাত ও ওযযা সম্পর্কে		

﴿20﴾ ٱلْأُخْرَىٰٓ	ٱلثَّالِثَةَ	وَمَنَوٰةَ
معرفة اسم مرفوع [ا خ ر] **আরও**	معرفة اسم مجرور [ث ل ث] **তৃতীয়**	ح.عطف +اسم علم مجرور **মানাত**
53|20|এবং তৃতীয় আরেকটি মানাত সম্পর্কে?		

﴿21﴾ ٱلْأُنثَىٰ	وَلَهُ	ٱلذَّكَرُ	أَلَكُمُ
معرفة اسم مرفوع [ن ث ي]**কন্যা সন্তান**	ح.عطف +جرّ +ضمير**+তাঁর জন্য**	معرفة اسم مرفوع [ذ ك ر]**পুত্র সন্তান**	ح. استفهام +جرّ +ضمير **কি তোমাদের জন্য**
53|21|পুত্র-সন্তান কি তোমাদের জন্যে এবং কন্যা-সন্তান আল্লাহর জন্য?			

﴿22﴾ ضِيزَىٰٓ	قِسْمَةٌ	إِذًا	تِلْكَ
صفة مرفوعة [ض ي ز]**বড় প্রতারণাপূর্ণ**	اسم مرفوع[ق س م]**বন্টন**	ظ. زمان **তাহলে**	اسم اشارة **এটা**
53|22|এমতাবস্থায় এটা তো হবে খুবই অসংগত বন্টন।			

أَنتُمْ	سَمَّيْتُمُوهَآ	أَسْمَآءٌ	إِلَّآ	هِىَ	إِنْ
ضمير منفصل **তোমরা**	فعل ماض +ضمير +ضمير [س م و]**নাম দিয়েছ তোমরা**	اسم مرفوع [س م و]**নাম সমূহ**	ح. حصر **ছাড়া**	اسم اشارة **তা**	ح. نفي **নয়**
53|23|এগুলো কতগুলো নাম বৈ নয়, যা তোমরা এবং					

إِن	سُلْطَٰنٍ ج	مِن	بِهَا	ٱللَّهُ	أَنزَلَ	مَّآ	وَءَابَآؤُكُم
ح. نفي **না**	شاسم مجرور [س ل ط]**সনদ**	جرّ **হতে**	جرّ +اسم موصول **তা যা**	لفظ الجلالة مرفوع [اله] **আল্লাহ**	فعل ماض +[ن ز ل]IV **নাযিল করেছেন**	ح. نفي **না**	مح.عطف +اسم مرفوع [ا ب و]**তোমাদের পূর্ব পরুষরা**
তোমাদের পূর্ব-পুরুষদের রেখেছ। এর সমর্থনে আল্লাহ কোন দলীল নাযিল করেননি।							

ٱلْأَنفُسُ صلے	تَهْوَى	وَمَا	ٱلظَّنَّ	إِلَّا	يَتَّبِعُونَ
معرفة اسم مرفوع [ن ف س]**প্রবৃত্তির**	فعل مضارع [ه ي و] **কামনা**	ح.عطف +اسم موصول **এবং যা**	معرفة اسم منصوب [ظ ن ن]**অনুমান**	ح. حصر **ছাড়া**	فعل مضارع +ضمير [ت ب ع]VIII **অনুসরন করে তারা**
তারা অনুমান এবং প্রবৃত্তিরই অনুসরণ করে।					

ٱلْهُدَىٰٓ ﴿23﴾	رَّبِّهِمُ	مِّن	جَآءَهُم	وَلَقَدْ
معرفة اسم مجرور [ه د ي]**হেদায়াত**	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]**তাদের রবের**	جرّ **হতে**	فعل ماض +ضمير [ج ي ا] **এসেছে তাদের কাছে**	ح.عطف +ل- تاكيد+ح. تحقيق **এবং নিশ্চয়ই**

অথচ তাদের কাছে তাদের পালনকর্তার পক্ষ থেকে পথ নির্দেশ এসেছে।

تَمَنَّىٰ ﴿24﴾	مَا	لِلْإِنسَٰنِ	أَمْ
فعل ماضV] [م ن ن কামনা করে সে	اسم موصول যা	جرّ +معرفة اسم مجرور [ا ن س] মানুষের জন্য	ح.عطف অথবা
53|24|মানুষ যা চায়, তাই কি পায়?			

وَٱلْأُولَىٰ ﴿25﴾	ٱلْءَاخِرَةُ	فَلِلَّهِ
ج+معرفة اسم مرفوع [ا [ل وইহকাল	معرفة اسم مرفوع[ا خ [রপরকাল	ح. استئنافية +جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله]অতঃপর আল্লাহর জন্য
53|25|অতএব, পরবর্তী ও পূর্ববর্তী সব মঙ্গলই আল্লাহর হাতে।		

تُغْنِى	لَا	ٱلسَّمَٰوَٰتِ	فِى	مَّلَكٍ	مِّن	وَكَم
فعل مضارع [غ ن ي IV]	ح. نفي না	معرفة اسم مجرور[س م و আকাশ মন্ডলীর	جرّ মধ্যে	اسم مجرور] م ل [كফেরেশতা	جرّ হতে	ح.عطف ح.عطف +ح.+ استفهامএবং কত
53|26|আকাশে অনেক ফেরেশতা রয়েছে।						

يَأْذَنَ	أَن	بَعْدِ	مِنۢ	إِلَّا	شَيْـًٔا	شَفَٰعَتُهُمْ
فعل مضارع منصوب [ا ذ ن] অনুমতি দিবেন	ح. مصدرية যে	اسم مجرور [ب ع د] পরে	جرّহতে	ح. حصر ছাড়া	اسم منصوب [ش ي ا] কিছুই	اسم مرفوع ضمير +] ش ف [عতাদের সুপারিশ

তাদের কোন সুপারিশ ফলপ্রসূ হয় না যতক্ষণ

﴾26﴿ وَيَرْضَىٰٓ	يَشَآءُ	لِمَن	ٱللَّهُ
ح.عطف +فعل مضارع [ر ض و]পছন্দ করবেন	فعل مضارع [ش ي ا] ইচ্ছা করেন তিনি	جرّ +اسم موصولযার জন্য	لفظ الجلالة مرفوع [اله]আল্লাহ
আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছা ও যাকে পছন্দ করেন, অনুমতি না দেন।			

لَيُسَمُّونَ	بِٱلْءَاخِرَةِ	يُؤْمِنُونَ	لَا	ٱلَّذِينَ	إِنَّ
ل-تاكيد +فعل مضارع +ضمير [س م م] অবশ্যই নাম রাখে তারা	جرّ +اسم مجرور [ا خ ر]আখেরাতের উপর	فعل مضارع +ضمير [ا م ن IV] ঈমান আনে	ح. نفي না	اسم موصول যারা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
53|27|যারা পরকালে বিশ্বাস করে না,					

﴾27﴿ ٱلْأُنثَىٰ	تَسْمِيَةَ	ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ
معرفة اسم مرفوع [ا ن ث]নারীর	اسم منصوب [س م و] নামকরণ	معرفة اسم منصوب [م ل ك] ফেরেশতাদের
তারাই ফেরেশতাকে নারীবাচক নাম দিয়ে থাকে।		

إِن	عِلْمٍ ۖ	مِنْ	بِهِۦ	لَهُم	وَمَا

ح. نفي না	اسم مجرور [ع ل م] জ্ঞান	جرّ হতে	جرّ +ضمير তা যা	جرّ +ضمير তাদের জন্য	ح.عطف +ح. نفي এবং নাই

53|28|অথচ এ বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞান নেই। প্র

يُغْنِى	لَا	ٱلظَّنَّ	وَإِنَّ	ٱلظَّنَّ ۖ	إِلَّا	يَتَّبِعُونَ
فعل مضارع [غ ن ي IV] কাজে আসে	ح. نفي না	معرفة اسم منصوب [ظ ن ن] ধারনা	ح.عطف +ح. مشبه بفعل এবং নিশ্চয়ই	معرفة اسم منصوب [ظ ن ن] ধারনার	ح. حصر ছাড়া	فعل مضارع +ضمير [ت ب ع] অনুসরন করে তারা

তারা কেবল অনুমানের উপর চলে।

شَيْـًٔا ﴿28﴾	ٱلْحَقِّ	مِنَ
اسم منصوب [ش ي ا]কিছু	معرفة اسم مجرور [ح ق ق]সত্যের	جرّহতে

অথচ সত্যের ব্যাপারে অনুমান মোটেই ফলপ্রসূ নয়।

ذِكْرِنَا	عَن	تَوَلَّىٰ	مَّن	عَن	فَأَعْرِضْ
اسم مجرور +ضمير [ذ ك ر]আমাদের স্মলণ	جرّ হতে	فعل ماض [و ل ي V] মুখ ফিরায়	اسم موصول যে	جرّ হতে	ح. استئنافية +فعل أمر [ع ر ض]

53|29|অতএব যে আমার স্মরণে বিমুখ এবং কেবল পার্থিব

﴾29﴿ ٱلدُّنْيَا	ٱلْحَيَوٰةَ	إِلَّا	يُرِدْ	وَلَمْ
معرفة صفة منصوبة [د و ن]দুনিয়ায়	معرفة اسم منصوب [ح ي ي]জীবন	ح. حصر ছাড়া	فعل مضارع مجزوم [ر و د IV] চায়	ح.عطف +ح. نفيএবং না

জীবনই কামনা করে তার তরফ থেকে আপনি মুখ ফিরিয়ে নিন।

رَبَّكَ	إِنَّ	ٱلْعِلْمِ ج	مِّنَ	ذَٰلِكَ
اسم منصوب +ضمير [ر ب ب]তোমার রব	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	معرفة اسم مجرور [ع ل م]জ্ঞানের	جرّ হতে	اسم اشارة এটা

53|30|তাদের জ্ঞানের পরিধি এ পর্যন্তই। নিশ্চয় আপনার পালনকর্তা

سَبِيلِهِۦ	عَن	ضَلَّ	بِمَن	أَعْلَمُ	هُوَ
اسم مجرور +ضمير [س ب ل] তার পথ	جرّ হতে	فعل ماض [ض ل ل]বিচ্যুত হয়েছে	جرّ +اسم موصولতা যা	اسم مرفوع [ع ل م]খুব জানেন	ضمير منفصل তিনিই

ভাল জানেন, কে তাঁর পথ থেকে বিচ্যুত হয়েছে

﴾30﴿ ٱهْتَدَىٰ	بِمَنِ	أَعْلَمُ	وَهُوَ
VIII]فعل ماض [ه د ي সৎপথ প্রাপ্ত	جرّ +اسم موصول তাকে যে	اسم مرفوع [ع ل م] খুব অবহিত	ح.عطف +ضمير منفصلএবং তিনি

এবং তিনিই ভাল জানেন কে সুপথপ্রাপ্ত হয়েছে।

ٱلْأَرْضِ	فِى	وَمَا	ٱلسَّمَٰوَٰتِ	فِى	مَا	وَلِلَّهِ
معرفة اسم مجرور [ا ر ض] পৃথিবীর	جرّ মধ্যে	ح.عطف +اسم موصول এবং যা	معرفة اسم مجرور [س م و]আকাশ মন্ডলীর	جرّ মধ্যে	اسم موصول যা	ح.عطف +جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله]এবং আল্লাহর জন্য
53|31|নভোমন্ডল ও ভূমন্ডলে যা কিছু আছে, সবই আল্লাহর,						

وَيَجْزِىَ	عَمِلُوا۟	بِمَا	أَسَٰٓـُٔوا۟	ٱلَّذِينَ	لِيَجْزِىَ
ح.عطف +فعل مضارع منصوب [ج ز ي]এবং প্রতিফল দেন	فعل ماض +ضمير [ع م ل] [সম্পাদন করেছে তারা	جرّ +اسم موصول তা যা	فعل ماض+ضمير [س و ا IV] মন্দ করেছে তারা	اسم موصول যারা	ل-تعليل +فعل مضارع منصوب [ج ز ي]যেন প্রতিফল দেন
যাতে তিনি মন্দকর্মীদেরকে তাদের কর্মের প্রতিফল দেন					

بِٱلْحُسْنَى ﴿31﴾	أَحْسَنُوا۟	ٱلَّذِينَ
جرّ +معرفة اسم منصوب [ح س ن]উত্তম	IV]فعل ماض +ه[ح س ن সৎকাজ করেছে	اسم موصولযারা
এবং সৎকর্মীদেরকে দেন ভাল ফল।		

ٱلْإِثْمِ	كَبَٰٓئِرَ	يَجْتَنِبُونَ	ٱلَّذِينَ
معرفة اسم مجرور [ا ث م] গুনাহ	اسم منصوب [ك ب ر] বড়বড়	فعل مضارع +ضمير [ج ن ب VIII] বিরত থাকে	اسم موصول যারা
53|32|যারা বড় বড় গোনাহ ও অশ্লীলকার্য থেকে বেঁচে থাকে			

إِنَّ	ٱللَّمَمَ ۚ	إِلَّا	وَٱلْفَوَٰحِشَ
ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	معرفة +اسم منصوب [ل م م] ছোট গুনাহ	ح. حصر ছাড়া	ح.عطف +معرفة اسم منصوب [ف ح ش] ও অশ্লীল কাজ সমূহ
ছোটখাট অপরাধ করলেও নিশ্চয় আপনার পালনকর্তার ক্ষমা			

بِكُمْ	أَعْلَمُ	هُوَ	ٱلْمَغْفِرَةِ ۚ	وَٰسِعُ	رَبَّكَ
جرّ +ضمير তোমাদের	اسم مرفوع [ع ل م] খুব জানেন	ضمير منفصل তিনি	معرفة اسم مجرور [غ ف ر] ক্ষমায়	اسم مرفوع [و س ع] ব্যাপক	اسم منصوب [ر ب ب] +ضمير তোমার রব
সুদূর বিস্তৃত। তিনি তোমাদের সম্পর্কে ভাল জানেন, যখন তিনি					

أَنتُمْ	وَإِذْ	ٱلْأَرْضِ	مِّنَ	أَنشَأَكُم	إِذْ
ضمير منفصل তোমরা	ح.عطف +ظ. زمان এবং যখন	معرفة اسم مجرور [ا ر ض] মাটি	جرّ হতে	فعل ماض +ضمير [ن ش ا IV] সৃষ্টি করেছেন তোমাদের	ظ. زمان যখন
তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন মৃত্তিকা থেকে এবং যখন					

تُزَكُّوٓاْ	فَلَا	أُمَّهَٰتِكُمْۖ	بُطُونِ	فِى	أَجِنَّةٌ
فعل مضارع مجزوم +ضمير [ز ك و II] প্রশংসা কর তোমরা	ح. استئنافية +ح. نهي অতএব না	اسم مجرور +ضمير [ا م م]তোমাদের মায়েদের	اسم مجرور [ب ط ن] গর্ভের	جرّ মধ্যে	اسم مرفوع [ج ن ن]ভ্রূন অবস্থায়
তোমরা মাতৃগর্ভে কচি শিশু ছিলে। অতএব তোমরা আত্নপ্রশংসা করো না।					

﴾32﴿ ٱتَّقَىٰٓ	بِمَنِ	أَعْلَمُ	هُوَ	أَنفُسَكُمْۖ
فعل ماض [و ق ي VIII] পরহেজগারী করে	جرّ +اسم موصولতার সম্পর্কে	اسم مرفوع [ع ل م]খুব জানেন	ضمير منفصل তিনি	اسم منصوب +ضمير [ن ف س]তোমাদের নিজেদের
তিনি ভাল জানেন কে সংযমী।				

﴾33﴿ تَوَلَّىٰ	ٱلَّذِى	أَفَرَءَيْتَ
فعل ماض [و ل ي V] মুখফিরায়	اسم موصول যে	ح. استفهام +ح. زائدة +فعل ماض [ر ا ي] অতঃপর কি দেখে তুমি
53|33|আপনি কি তাকে দেখেছেন, যে মুখ ফিরিয়ে নেয়।		

﴾34﴿ وَأَكْدَىٰٓ	قَلِيلًا	وَأَعْطَىٰ

ح.عطف +فعل ماض [ك د يIV] ক্ষান্ত হয়	اسم منصوب [ق ل ل] সামান্য	ح.عطف +فعل ماض [ع ط وIV] এবং দেয়	
53|34|এবং দেয় সামান্যই ও পাষাণ হয়ে যায়।			

يَرَىٰٓ ﴿35﴾	فَهُوَ	ٱلْغَيْبِ	عِلْمُ	أَعِندَهُۥ
فعل مضارع منصوب [ر ا ي] দেখেছে	ح. استئنافية +ضمير منفصل অতএব সে	معرفة اسم مجرور [غ ي ب] অদৃশ্যের	اسم مرفوع [ع ل م] জ্ঞান	ح. استفهام +ظ. مكان منصوب +ضمير [ع ن د] কি আছে তার কাছে
53|35|তার কাছে কি অদৃশ্যের জ্ঞান আছে যে, সে দেখে?				

مُوسَىٰٓ ﴿36﴾	صُحُفِ	فِى	بِمَا	يُنَبَّأْ	لَمْ	أَمْ
اسم علم مجرور মুসার	اسم مجرور [ص ح ف] সহীফাসমূহের	جرّ মধ্যে	جرّ +اسم موصول তা যা	فعل مضارع مجزوم [ن ب ا] অবহিত করা হয়	ح. نفي না	ح.عطف অথবা
53|36|তাকে কি জানানো হয়নি যা আছে মূসার কিতাবে,						

وَفَّىٰٓ ﴿37﴾	ٱلَّذِى	وَإِبْرَٰهِيمَ
فعل ماضII [و ف ي] পূর্ণ করেছে	اسم موصول যে	ح3.عطف +اسم علم مجرور بالفتحة ইব্রাহীমের
53|37|এবং ইব্রাহীমের কিতাবে, যে তার দায়িত্ব পালন করেছিল?		

﴾38﴿ أُخْرَىٰ	وِزْرَ	وَازِرَةٌ	تَزِرُ	أَلَّا
اسم مرفوع [ا خ ر]অন্যের	اسم منصوب [ة ز ر] বোঝা	اسم مرفوع [و ز ر] কোন বহনকারী	فعل مضارع [و ز ر]বহন করবে	ح. مصدرية +ح. نفي যে না
53|38|কিতাবে এই আছে যে, কোন ব্যক্তি কারও গোনাহ নিজে বহন করবে না।				

﴾39﴿ سَعَىٰ	مَا	إِلَّا	لِلْإِنسَٰنِ	لَّيْسَ	وَأَن
فعل ماض [س ع ي] চেষ্টা করের সে	اسم موصول যা	ح. حصر ছাড়া	جرّ +معرفة اسم مجرور [ا ن س] মানুষের জন্য	فعل ماض «كان» [ل ي س]নাই	ح.عطف +ح. مصدرية এবং যে
53|39|এবং মানুষ তাই পায়, যা সে করে,					

﴾40﴿ يُرَىٰ	سَوْفَ	سَعْيَهُۥ	وَأَنَّ
فعل مضارع مجهول منصوب [ر ا ي] দেখান হবে	ح. استقبال শীঘ্রই	اسم منصوب +ضمير [س ع ي]তার চেষ্টা	ح.عطف +ح. مشبه بفعل এবং যে
53|40|তার কর্ম শীঘ্রই দেখা হবে।			

﴾41﴿ ٱلْأَوْفَىٰ	ٱلْجَزَآءَ	يُجْزَىٰهُ	ثُمَّ
معرفة صفة مرفوعة [و ف ي]পূর্ণ	اسم منصوب [ج ز ي]প্রতিফল	فعل مضارع مجهول +ضمير [ج ز ي]প্রতিফল দেওয়া হবে	ح.عطف অতঃপর

53|41|অতঃপর তাকে পূর্ণ প্রতিদান দেয়া হবে।

﴾42﴿ ٱلْمُنتَهَىٰ	رَبِّكَ	إِلَىٰ	وَأَنَّ
معرفة اسم منصوب [ن ه ي VIII] সমাপ্তি	اسم منصوب +ضمير [ر ب ب]তোমার রবের	جرّকাছেই	ح.عطف +ح. مشبه بفعل এবং যে
53|42|তোমার পালনকর্তার কাছে সবকিছুর সমাপ্তি,			

﴾43﴿ وَأَبْكَىٰ	أَضْحَكَ	هُوَ	وَأَنَّهُۥ
ح.عطف +فعل ماض [ب ك يIV] কাঁদান তিনিই	فعل ماض +ضمير [ض ح كIV] হাসিয়ে থাকেন	ضمير منفصل তিনিই	ح.عطف +ح. مشبه بفعلএবং যে +ضمير
53|43|এবং তিনিই হাসান ও কাঁদান			

﴾44﴿ وَأَحْيَا	أَمَاتَ	هُوَ	وَأَنَّهُۥ
ح.عطف +فعل ماض [ح ي ي IV] বাঁচান তিনিই	فعل ماض [م و ت IV] মারেন	ضمير منفصل তিনিই	ح.عطف +ح. مشبه بفعل +ضميرএবং যে
53|44|এবং তিনিই মারেন ও বাঁচান,			

﴾45﴿ وَٱلْأُنثَىٰ	ٱلذَّكَرَ	ٱلزَّوْجَيْنِ	خَلَقَ	وَأَنَّهُۥ
ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ا ن ثও নারী]	معرفة اسم منصوب [ذ ك ر]পুরুষ	معرفة اسم مرفوع [ز و ج] জোড়া	فعل ماض [خ ل ق] সৃষ্টি করেছেন তিনি	ح. مشبه بفعل +ضميرএবং যে

53|45|এবং তিনিই সৃষ্টি করেন যুগল-পুরুষ ও নারী।

﴾46﴿ تُمْنَىٰ	إِذَا	نُّطْفَةٍ	مِن
فعل مضارع مجهول [م ن ي]IV **স্খলিত হয়**	ظ. زمان **যখন**	اسم مجرور [ن ط ف]**একফোটা শুক্র বিন্দু**	جرّ **হতে**
53|46|একবিন্দু বীর্য থেকে যখন স্খলিত করা হয়।			

﴾47﴿ ٱلْأُخْرَىٰ	ٱلنَّشْأَةَ	عَلَيْهِ	وَأَنَّ
معرفة اسم مرفوع [ا خ ر] **পুণরায়**	اسم منصوب [ن ش ا] **উঠানোর**	جرّ +ضمير **তারই উপর**	ح.عطف +ح. مشبه بفعل **এবং যে**
53|47|পুনরুত্থানের দায়িত্ব তাঁরই,			

﴾48﴿ وَأَقْنَىٰ	أَغْنَىٰ	هُوَ	وَأَنَّهُۥ
ح.عطف +فعل ماض [ق ن ي]IV **সম্পদ দেন**	فعل ماض [غ ن ي]IV **ধনী করেন**	ضمير منفصل **তিনিই**	ح. مشبه بفعل ضمير+**এবং যে**
53|48|এবং তিনিই ধনবান করেন ও সম্পদ দান করেন।			

﴾49﴿ ٱلشِّعْرَىٰ	رَبُّ	هُوَ	وَأَنَّهُۥ
معرفة اسم منصوب [ش ع ر] **শি'রা নক্ষত্র**	اسم مرفوع [ر ب ب]**রব**	ضمير منفصل **তিনিই**	ح.عطف +ح. مشبه بفعل ضمير+**এবং যে**
53|49|তিনি শিরা নক্ষত্রের মালিক।			

﴾50﴿ ٱلْأُولَىٰ	عَادًا	أَهْلَكَ	وَأَنَّهُۥ
معرفة اسم مرفوع [و ل ي]প্রথম	اسم علم منصوبআদকে	[IVفعل ماض [ه ل ك ধ্বংস করেছেন তিনি	ح.عطف +ح. مشبه بفعلএবং যে +ضمير

53|50|তিনিই প্রথম আদ সম্প্রদায়কে ধ্বংস করেছেন,

﴾51﴿ أَبْقَىٰ	فَمَآ	وَثَمُودَاْ
[IVفعل ماض [ب ق ي] বাকী রেখেছেন	ح. استئنافية +ح. نفي অতঃপর না	ح.عطف +اسم علم مجرور সামুদকেও

53|51|এবং সামুদকেও; অতঃপর কাউকে অব্যহতি দেননি।

كَانُواْ	إِنَّهُمْ	قَبْلُ ۖ	مِّن	نُوحٍ	وَقَوْمَ
فعل ماض +ضمير [ك و ن]ছিল তারা	ح. مشبه بفعل +ضميرনিশ্চয়ই তারা	اسم مرفوع [ق ب ل] পূর্বে	جرّ হতে	اسم علم مجرور নূহের	ح.عطف +اسم منصوب [ق و م] এবং জাতিকে

53|52|এবং তাদের পূর্বে নূহের সম্প্রদায়কে, তারা ছিল

﴾52﴿ وَأَطْغَىٰ	أَظْلَمَ	هُمْ
اسم تفضيل منصوب [ط غ ي] অতি অবাধ্য	اسم تفضيل منصوب [ظ ل م]অতি জালেম	ضمير منفصل তারা

আরও জালেম ও অবাধ্য।

﴾53﴿ أَهْوَىٰ	وَٱلْمُؤْتَفِكَةَ

فعل ماض [ه و ي IV] উঠিয়ে নিক্ষেপ করেছিলেন	ح.عطف +اسم منصوب [ا ف ك VIII] এবং উল্টদেওয়া জনবসতি গুলি
53|53|তিনিই জনপদকে শুন্যে উত্তোলন করে নিক্ষেপ করেছেন।	

غَشَّىٰ ﴿54﴾	مَا	فَغَشَّىٰهَا
فعل ماض [غ ش و II] আচ্ছন্ন করেছিল	اسم موصول যা	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [غ ش و II] অতঃপর আচ্ছন্ন করল তাকে
53|54|অতঃপর তাকে আচ্ছন্ন করে নেয় যা আচ্ছন্ন করার।		

تَتَمَارَىٰ ﴿55﴾	رَبِّكَ	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع [م ر ي VI] সন্দেহ করবে তুমি	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমার রবের	اسم مجرور [ا ل و] নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور [أيّ] অতএব কোন
53|55|অতঃপর তুমি তোমার পালনকর্তার কোন অনুগ্রহকে মিথ্যা বলবে?			

ٱلْأُولَىٰٓ ﴿56﴾	ٱلنُّذُرِ	مِّنَ	نَذِيرٌ	هَٰذَا
معرفة اسم مرفوع [ا و ل] পূর্বে	معرفة اسم مجرور [ن ذ ر] সতর্কবাণী সমূহের	جرّ হতে	اسم مرفوع [ن ذ ر] সতর্কবাণীও	اسم اشارة এই
53|56|অতীতের সতর্ককারীদের মধ্যে সে-ও একজন সতর্ককারী।				

ٱلْءَازِفَةُ ﴿57﴾	أَزِفَتِ
معرفة اسم مرفوع [ا ز ف] নিকটে আগমনী	فعل ماض [ا ز ف] নিকটে এসেছে

53|57|কেয়ামত নিকটে এসে গেছে।

كَاشِفَةٌ ﴿58﴾	ٱللَّهِ	دُونِ	مِن	لَهَا	لَيْسَ
اسم مرفوع [ك ش ف]কোন অপসারনকারী	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহ	اسم ج[د و ن]ছাড়া	جرّহতে	جرّ +ضمير তার জন্য	فعل ماض «كان» [ل ي س]নাই
53|58|আল্লাহ ব্যতীত কেউ একে প্রকাশ করতে সক্ষম নয়।					

تَعْجَبُونَ ﴿59﴾	ٱلْحَدِيثِ	هَٰذَا	أَفَمِنْ
فعل مضارع +ضمير [ع ج ب] বিস্ময় বোধ করছ তোমরা	معرفة اسم مجرور [ح د ث]কথা	اسم اشارة এই	ح. استفهام +ح. زائدة +اسم موصولতবে কি হতে
53|59|তোমরা কি এই বিষয়ে আশ্চর্যবোধ করছ?			

تَبْكُونَ ﴿60﴾	وَلَا	وَتَضْحَكُونَ
فعل مضارع +ضمير [ب ك ي]কাঁদছ তোমরা	ح. عطف +ح. نفيএবং না	ح.عطف +فعل مضارع +ضمير [ض ح ك] এবং হাসি ঠাট্টা করছ তোমরা
53|60|এবং হাসছ-ক্রন্দন করছ না?		

سَٰمِدُونَ ﴿61﴾	وَأَنتُمْ
اسم مرفوع [س م د]উদাসীন	ح.عطف +ضمير منفصلএবং তোমরা
53|61|তোমরা ক্রীড়া-কৌতুক করছ,	

وَٱعْبُدُوا۟ ۩السجدة ﴿62﴾	لِلَّهِ	فَٱسْجُدُوا۟
ح.عطف +فعل أمر +ضمير [ع ب د]ইবাদত কর তোমরা	جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর জন্য	ح. استئنافية +فعل أمر+ضمير [س ج د]অতএব সিজদা কর তোমরা
53|62|অতএব আল্লাহকে সেজদা কর এবং তাঁর এবাদত কর।		

||সূরা আন্-নাজম সমাপ্ত ||

سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ

৫৪। সূরা আল্-ক্বামার : মাক্কী

রুকু: ০৩ আয়াত:৫৫

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

﴾1﴿ ٱلْقَمَرُ	وَٱنشَقَّ	ٱلسَّاعَةُ	ٱقْتَرَبَتِ
معرفة اسم مرفوع [ق م ر] চাঁদ	ح.عطف +فعل ماض [ش ق قVII] বিদীর্ণ হয়েছে	معرفة اسم مرفوع [س و ع] কিয়ামত	فعل ماض [ق ر بVIII] নিকটবর্তী হয়েছে
54|1|কেয়ামত আসন্ন, চন্দ্র বিদীর্ণ হয়েছে।			

وَيَقُولُوا۟	يُعْرِضُوا۟	ءَايَةً	يَرَوْا۟	وَإِن
ح.عطف +فعل مضارع منصوب +ضمير[ق و ل]এবং বলে তারা	فعل مضارع منصوب +ضمير [ع ر ضIV] মুখ ফিরিয়ে নেয় তারা	اسم منصوب [ا ي ي]কোন নিদর্শন	فعل مضارع منصوب [ر ا ي]দেখেও তারা	ح.عطف +ح. شرط এবং যদি
54|2|তারা যদি কোন নিদর্শন দেখে তবে মুখ ফিরিয়ে নেয় এবং বলে,				

﴾2﴿ مُّسْتَمِرٌّ	سِحْرٌ
اسم مرفوع [م ر رX] চিরাচরিত	اسم مرفوع [س ح ر]যাদু
এটা তো চিরাগত জাদু।	

وَكُلٌّ	أَهْوَآءَهُمْ ۚ	وَٱتَّبَعُوٓا۟	وَكَذَّبُوا۟

ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ك ذ ب II] মিথ্যারোপ করেছে তারা	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ت ب ع VIII] অনুসরন করেছে	اسم منصوب +ضمير [ه و ي]তাদের কামনা বাসনার	ح.عطف +اسم مرفوع [ك ل ل]এবং প্রত্যেক
54|3|তারা মিথ্যারোপ করছে এবং নিজেদের খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করছে।			

أَمْرٍ	مُّسْتَقِرٌّ ﴿3﴾
اسم مجرور [ا م ر]কাজ	اسم مرفوع [ق ر ر X] লক্ষ্যে পৌঁছবে
প্রত্যেক কাজ যথাসময়ে স্থিরীকৃত হয়।	

وَلَقَدْ	جَآءَهُم	مِّنَ	ٱلْأَنۢبَآءِ	مَا
ح.عطف +ل-تاكيد +ح. تحقيقএবং নিশ্চয়ই	فعل ماض +ضمير [ج ي ا]এসেছে তাদের কাছে	جرّ হতে	معرفة اسم مجرور [ن ب ا]সংবাদ গুলি	اسم موصول যার
54|4|তাদের কাছে এমন সংবাদ এসে গেছে,				

فِيهِ	مُزْدَجَرٌ ﴿4﴾
جرّ +ضميرমধ্যে আছে	اسم مرفوع [ز ج ر VIII] হুশিয়ারী
যাতে সাবধানবাণী রয়েছে।	

حِكْمَةٌۢ	بَٰلِغَةٌ ۖ	فَمَا	تُغْنِ	ٱلنُّذُرُ ﴿5﴾

معرفة اسم مرفوع [ن ذ ر]সতর্কবাণী	فعل مضارع [غ ن ي IV] কাজে আসে	ج. استئنافية +ح. نفيअতঃপর না	اسم مرفوع [ب ل غ]উদ্দেশ্য পূর্ণকারী	اسم مرفوع [ح ك م] যুক্তি
54|5|এটা পরিপূর্ণ জ্ঞান, তবে সতর্ককারীগণ তাদের কোন উপকারে আসে না।				

إِلَىٰ	ٱلدَّاعِ	يَدْعُ	يَوْمَ	عَنْهُمْ ۘ	فَتَوَلَّ
جرّ দিকে	معرفة اسم مرفوع[د ع و]এক আহবানকারী	فعل مضارع [د ع و] আহ্বান করবে	اسم منصوب [ي و م] যেদিন	جرّ +ضمير তাদের হতে	ح. استئنافية +فعل أمر [و ل ي V]অতএব মুখ ফিরাও
54|6|অতএব, আপনি তাদের থেকে মুখ ফিরিয়ে নিন। যেদিন আহবানকারী আহবান করবে					

نُّكُرٍ ﴿6﴾	شَىْءٍ
صفة مجرورة [ن ك ر]কঠিন	اسم مجرور [ش ي ا]একটি জিনিষের
এক অপ্রিয় পরিণামের দিকে,	

ٱلْأَجْدَاثِ	مِنَ	يَخْرُجُونَ	أَبْصَٰرُهُمْ	خُشَّعًا
معرفة اسم مجرور [ج د ث]কবর সমূহ	جرّ হতে	فعل مضارع آل [خ ر ج]বের হবে তারা	اسم مرفوع +ضمير [ب ص ر]দৃষ্টি	اسم منصوب [خ ش ع]অবনমিত অবস্থায়
54|7|তারা তখন অবনমিত নেত্রে কবর থেকে				

مُّنتَشِرٌ ﴿7﴾	جَرَادٌ	كَأَنَّهُمْ
صفة مرفوعة [ن ش ر VIII] বিক্ষিপ্ত	اسم مرفوع [ج ر د]পঙ্গপাল	جرّ +ح. مشبه بفعل ضمير+যেন তারা
বের হবে বিক্ষিপ্ত পংগপাল সদৃশ।		

ٱلْكَٰفِرُونَ	يَقُولُ	ٱلدَّاعِ ۖ	إِلَى	مُّهْطِعِينَ
معرفة اسم مرفوع [ك ف ر]কাফেররা	فعل مضارع [ق و ل]বলবে	معرفة اسم مجرور [د ع و]আহবান কারীর	جرّ দিকে	اسم منصوب [ه ط ع IV] দৌড়াবে তারা
54|8|তারা আহবানকারীর দিকে দৌড়াতে থাকবে।				

عَسِرٌ ﴿8﴾	يَوْمٌ	هَٰذَا
اسم مرفوع [ع س ر]কঠিন	اسم مرفوع [ي و م]দিন	اسم اشارة এটা
কাফেরা বলবেঃ এটা কঠিন দিন।		

عَبْدَنَا	فَكَذَّبُوا۟	قَوْمُ	قَبْلَهُمْ	كَذَّبَتْ
اسم منصوب +ضمير [ع ب د] আমাদের বান্দাকে	ح. عطف +فعل ماض +ضمير [ك ذ ب II] এবং অমান্য করেছিল তারা	اسم مرفوع [ق و م] জাতি	اسم منصوب +ضمير [ق ب ل]তাদের পূর্বে	فعل ماض [ك ذ ب II] মিথ্যারোপ করেছিল
54|9|তাদের পূর্বে নূহের সম্প্রদায়ও মিথ্যারোপ করেছিল। তারা মিথ্যারোপ করেছিল আমার				

وَٱزْدُجِرَ ﴿9﴾	مَجْنُونٌ	وَقَالُواْ
ح.عطف +فعل ماض [ز ج ر VIII] ধমকান হয়েছিল তাকে	اسم مرفوع [ج ن ن] উন্মাদ	د+فعل ماض +ضمير [ق ة ل] বলেছিল
বান্দা নূহের প্রতি এবং বলেছিলঃ এ তো উম্মাদ। তাঁরা তাকে হুমকি প্রদর্শন করেছিল।		

فَٱنتَصِرْ ﴿10﴾	مَغْلُوبٌ	أَنِّى	رَبَّهُۥٓ	فَدَعَا
ح. استئنافية +فعل أمر [ن ص ر VIII] প্রতিশোধ নাও	اسم مرفوع [غ ل ب] পরাভূত হয়েছি	ح. مشبه بفعل +ضمير যে আমি	اسم منصوب +ضمير [ر ب ب] তার রবকে	ح. استئنافية +فعل ماض [د ع و] অতঃপর ডেকেছিল সে
54|10|অতঃপর সে তার পালনকর্তাকে ডেকে বললঃ আমি অক্ষম, অতএব, তুমি প্রতিবিধান কর।				

مُّنْهَمِرٍ ﴿11﴾	بِمَآءٍ	ٱلسَّمَآءِ	أَبْوَٰبَ	فَفَتَحْنَآ
اسم مجرور [ن م ر IV] প্রবল বর্ষনের	جرّ +اسم مجرور [م و ه] বৃষ্টি দ্বারা	معرفة اسم مجرور [س م و] আকাশের	اسم منصوب [ب و ب] দরজা সমূহের	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ف ت ح] অতঃপর খুলে দিয়েছিলাম আমরা
54|11|তখন আমি খুলে দিলাম আকাশের দ্বার প্রবল বারিবর্ষণের মাধ্যমে।				

﴿12﴾ فَٱلْتَقَى	عُيُونًا	ٱلْأَرْضَ	وَفَجَّرْنَا
ح. استئنافية +فعل ماض [ل ق يVIII] অতঃপর মিলে গেল	اسم منصوب [ع ي ن]প্রস্রবন সমূহ	معرفة اسم منصوب [ا ر ض]যমীন	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ف ج ر II] এবং দীর্ণ করে বের করলাম আমরা
54|12|এবং ভুমি থেকে প্রবাহিত করলাম প্রস্রবণ। অতঃপর সব পানি মিলিত হল			

﴿12﴾ قُدِرَ	قَدْ	أَمْرٍ	عَلَىٰٓ	ٱلْمَآءُ
فعل ماض مجهول [ق د ر]নির্দিষ্ট কৃত	ح. تحقيق নিশ্চয়ই	اسم مجرور [ا م ر] এক কাজ	جرّ উপর	معرفة اسم مرفوع [م و ه]পানি
এক পরিকল্পিত কাজে।				

﴿13﴾ وَدُسُرٍ	أَلْوَٰحٍ	ذَاتِ	عَلَىٰ	وَحَمَلْنَٰهُ
ح.عطف +اسم مجرور [د ر س] পেরেক	معرفة اسم مجرور [ل و ح]তক্তা	اسم مجرور বিশিষ্ট	جرّ উপর	د+فعل ماض +ضمير +ضمير [ح م ل]আরোহন করালাম আমরা তাকে
54|13|আমি নূহকে আরোহণ করালাম এক কাষ্ঠ ও পেরেক নির্মিত জলযানে।				

﴿14﴾ كُفِرَ	كَانَ	لِّمَن	جَزَآءً	بِأَعْيُنِنَا	تَجْرِى

اسم منصوب [ك ف ر] প্রত্যাখ্যাত	فعل ماض [ك و ن] ছিল	جرّ +اسم موصول জন্য যে	اسم منصوب [ج ز ي] পুরস্কার	جرّ +اسم مجرور +ضمير [ع ي ن] আমাদের পর্যবেক্ষণে	فعل مضارع [ج ز ي] চলে
54|14|যা চলত আমার দৃষ্টি সামনে। এটা তার পক্ষ থেকে প্রতিশোধ ছিল, যাকে প্রত্যখ্যান করা হয়েছিল।					

مُّدَّكِرٍ ﴿15﴾	مِن	فَهَلْ	ءَايَةً	تَّرَكْنَٰهَآ	وَلَقَد
اسم مجرور [د ك رIV] উপদেশ গ্রহনকারী	جرّ হতে	ح. استئنافية +ك. استفهام অতঃপর কি	اسم منصوب [ا ي ي] একটি নিদর্শন হিসাবে	فعل ماض +ضمير +ضمير [ت ر ك] রেখেছি আমরা তা	ح.عطف +ل-تاكيد +ح. تحقيق এবং নিশ্চয়ই
54|15|আমি একে এক নিদর্শনরূপে রেখে দিয়েছি। অতএব, কোন চিন্তাশীল আছে কি?					

وَنُذُرِ ﴿16﴾	عَذَابِى	كَانَ	فَكَيْفَ
ح.عطف +اسم مجرور [ن ذ ر] আমার সতর্ক বাণী	اسم مجرور +ضمير [ع ذ ب] আমার শাস্তি	فعل ماض [ك و ن] ছিল	ح. استئنافية +ح. استفهام [ك ي ف] অতঃপর কেমন
54|16|কেমন কঠোর ছিল আমার শাস্তি ও সতর্কবাণী।			

لِلذِّكْرِ	ٱلْقُرْءَانَ	يَسَّرْنَا	وَلَقَدْ
جرّ +معرفة اسم مجرور [ذ ك ر]উপদেশ গ্রহনের জন্য	معرفة اسم منصوب [ق ر ا]কুরআন	فعل مضارع +ضمير [ي س ر II] সহজ করেছি আমরা	ح.عطف +ل-تاكيد +ح. تحقيق এবং নিশ্চয়ই

54|17|আমি কোরআনকে সহজ করে দিয়েছি বোঝার জন্যে।

﴿17﴾ مُّدَّكِرٍ	مِن	فَهَلْ
اسم مجرور [IV] [د ك ر উপদেশ গ্রহনকারী	جرّ হতে	ح. استئنافية +ح. استفهام অতঃপর কি
অতএব, কোন চিন্তাশীল আছে কি?		

كَانَ	فَكَيْفَ	عَادٌ	كَذَّبَتْ
فعل ماض [ك و ن] ছিল	ح. استئنافية +ح.استفهام অতঃপর কেমন	اسم علم مرفوع আদ	فعل ماض [ك ذ ب] II মিথ্যারোপ করেছিল
54|18|আদ সম্প্রদায় মিথ্যারোপ করেছিল, অতঃপর কেমন কঠোর			

﴿18﴾ وَنُذُرِ	عَذَابِي
ح.عطف +اسم مجرور [ن ذ ر] ও আমার সতর্ক বাণী	اسم مجرور +ضمير [ع ذ ب] আমার শাস্তি
হয়েছিল আমার শাস্তি ও সতর্কবাণী।	

فِي	صَرْصَرًا	رِيحًا	عَلَيْهِمْ	أَرْسَلْنَا	إِنَّا
جرّ মধ্যে	صفة منصوبة [ص ر ص ر] QI প্রবল বেগে	اسم منصوب [ر و ح] ঝড়ো বাতাস	جرّ +ضمير তাদের উপর	فعل ماض +ضمير [ر س ل] প্রেরণ করেছিলাম আমরা	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমরা
54|19|আমি তাদের উপর প্রেরণ করেছিলাম ঝঞ্জাবায়ু					

﴾19﴿ مُّسْتَمِرٍّ	نَحْسٍ	يَوْمِ
اسم مجرور [م ر ر X] ক্রমাগত	اسم مجرور [ن ح س]অশুভ	اسم منصوب [ي و م]দিনে
এক চিরাচরিত অশুভ দিনে।		

أَعْجَازُ	كَأَنَّهُمْ	ٱلنَّاسَ	تَنزِعُ
اسم مرفوع [ع ج ز]কান্ডসমূহ	جرّ +ح. مشبه بفعل +ضمير যেন তারা	معرفة اسم منصوب [ن و س]মানুষদের	فعل مضارع [ن ز ع] উঠিয়ে নিক্ষেপ কর
54|20|তা মানুষকে উৎখাত করছিল, যেন তারা উৎপাটিত			

﴾20﴿ مُّنقَعِرٍ	نَخْلٍ
اسم مجرور [ق ع ر VII] উৎপাটিত	اسم مجرور [ن خ ل]খেজুর গাছের
খর্জুর বৃক্ষের কান্ড।	

﴾21﴿ وَنُذُرِ	عَذَابِى	كَانَ	فَكَيْفَ
ح.عطف +اسم مجرور [ن ذ ر]আমার সতর্কবাণী	اسم مجرور +ضمير [ع ذ ب]আমার শাস্তি	فعل ماض [ك و ن]ছিল	ح. استئنافية +ح. استفهامঅতএব কেমন
54|21|অতঃপর কেমন কঠোর ছিল আমার শাস্তি ও সতর্কবাণী।			

فَهَلْ	لِلذِّكْرِ	ٱلْقُرْءَانَ	يَسَّرْنَا	وَلَقَدْ
ح. استئنافية +ح. استفهام অতঃপর কি	جرّ +معرفة اسم مجرور [ذ ك ر] উপদেশ গ্রহন করার জন্য	معرفة اسم منصوب [ق ر ا]কুরআন	فعل ماض +ضمير [II]ي س ر সহজ করেছি আমরা	ح.عطف +ل- تاكيد +ح. تحقيقএবং নিশ্চয়ই
54|22|আমি কোরআনকে বোঝার জন্যে সহজ করে দিয়েছি। অতএব,				

مُّدَّكِرٍ ﴿22﴾	مِن
اسم مجرور [IV] উপদেশ গ্রহনকারী [د ك ر	جرّহতে
কোন চিন্তাশীল আছে কি?	

بِٱلنُّذُرِ ﴿23﴾	ثَمُودُ	كَذَّبَتْ
جرّ +معرفة اسم مجرورসতর্কবাণীসমূহ	اسم علم مرفوعসামুদ	فعل ماض [ك ذ ب]II মিথ্যারোপ করেছিল
54|23|সামুদ সম্প্রদায় সতর্ককারীদের প্রতি মিথ্যারোপ করেছিল।		

إِنَّآ	نَّتَّبِعُهُۥٓ	وَٰحِدًا	مِّنَّا	أَبَشَرًا	فَقَالُوٓاْ
ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমরা	فعل مضارع +ضمير [ت ب ع]VIII	اسم منصوب[و ح د] একজন	جرّ +ضمير আমাদের হতে	ح. استفهام +اسم منصوب [ب	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ق و ل]

	অনুসরন করব আমরা যাকে			[ش ر মানুষ কি	অতঃপর বলেছিল তারা
54|24|তারা বলেছিলঃ আমরা কি আমাদেরই একজনের অনুসরণ করব?					

﴾24﴿ وَسُعُرٍ	ضَلَٰلٍ	لَّفِى	إِذًا
ح.عطف+اسم مجرور [س ع ر] ও বিকৃত বুদ্ধি র	اسم ج[ص ل ل] ভ্রান্তির	جرّ+ تاكيد-لঅবশ্যই মধ্যে	ح. فجاءةতখন
তবে তো আমরা বিপথগামী ও বিকার গ্রস্থরূপে গণ্য হব।			

بَلْ	بَيْنِنَا	مِنۢ	عَلَيْهِ	ٱلذِّكْرُ	أَءُلْقِىَ
ح. إضراب বরং	اسم مجرور+ضمير [ب ي ن] আমাদের মাঝে	جرّ হতে	جرّ +ضمير তার উপর	معرفة اسم مرفوع [ذ ك ر] উপদেশ	ح. استفهام+فعل ماض مجهولIV] [ل ق ي] অবতীর্ণ করা হয়েছে কি
54|25|আমাদের মধ্যে কি তারই প্রতি উপদেশ নাযিল করা হয়েছে?					

﴾25﴿ أَشِرٌ	كَذَّابٌ	هُوَ
صفة مرفوعة [ا ش ر] দাম্ভিক	اسم مرفوع II] [ك ذ ب] মিথ্যাবাদী	ضمير منفصلসে
বরং সে একজন মিথ্যাবাদী, দাম্ভিক		

سَيَعْلَمُونَ	غَدًا	مَّنِ	ٱلْكَذَّابُ	ٱلْأَشِرُ ﴿26﴾
ح. استقبال +فعل مضارع +ضمير [ع ل م] শীঘ্রই জানবে তারা	اسم منصوب [غ د و] কালই	اسم موصول কে	معرفة اسم مرفوع [ك ذ ب] মিথ্যাবাদী	معرفة صفة مرفوعة [ا ش ر] দাম্ভিক
54|26|এখন আগামীকল্যই তারা জানতে পারবে কে মিথ্যাবাদী, দাম্ভিক।				

إِنَّا	مُرْسِلُواْ	ٱلنَّاقَةِ	فِتْنَةً	لَّهُمْ
ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমরা	اسم مرفوع [ر س ل IV] প্রেরণকারী	معرفة اسم مجرور [ن و ق] একটী উষ্ট্রী	اسم منصوب [ف ت ن] পরীক্ষা	جرّ +ضمير তাদের জন্য
54|27|আমি তাদের পরীক্ষার জন্য এক উষ্ট্রী প্রেরণ করব, অতএব				

فَٱرْتَقِبْهُمْ	وَٱصْطَبِرْ ﴿27﴾
ح. استئنافية+فعل ماض +ضمير [ر ق ب VIII] অতএব লক্ষ্য রাখ তাদের প্রতি	ح.عطف +فعل أمر [ص ب ر VIII] ও ধৈর্য ধর
, তাদের প্রতি লক্ষ্য রাখ এবং সবর কর।	

وَنَبِّئْهُمْ	أَنَّ	ٱلْمَآءَ	قِسْمَةٌۢ
ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ن ب ا II] জানিয়ে দাও তাদের	ح. مشبه بفعل যে	معرفة اسم منصوب [م و ہ] পানি	اسم مرفوع [ق س م] বন্টন
54|28|এবং তাদেরকে জানিয়ে দাও যে, তাদের মধ্যে পানির পালা নির্ধারিত			

﴾28﴿ مُّحْتَضَرٌ	شِرْبٍ	كُلُّ	بَيْنَهُمْ ۚ
اسم مرفوع [ح ض ر VIII] হাজির	اسم مجرور [س ر ب]পালনকারী	اسم مرفوع [ك ل ل] প্রত্যেকে	ظ. مكان منصوب +ضمير তাদের মাঝে
হয়েছে এবং পালাক্রমে উপস্থিত হতে হবে।			

﴾29﴿ فَعَقَرَ	فَتَعَاطَىٰ	صَاحِبَهُمْ	فَنَادَوْا
ح.عطف +فعل ماض [ع ق ر]এবং হত্যা করল	ح. عطف +فعل ماض[ع ط و]এবং দায়িত্ব নিল সে	اسم منصوب +ضمير [ث ح ب]তাদের সঙ্গীকে	ح. استئنافية +فعل ماض [ن د و].ضمير+অতঃপর ডাকল তারা
54|29|অতঃপর তারা তাদের সঙ্গীকে ডাকল। সে তাকে ধরল এবং বধ করল।			

﴾30﴿ وَنُذُرِ	عَذَابِي	كَانَ	فَكَيْفَ
ح.عطف +اسم مجرور [ن ذ ر]ও আমার সতর্কবাণী	اسم مجرور +ضمير [ع ذ ب]আমার শাস্তি	فعل ماض [ك و ن]ছিল	ح. استئنافية +ح. استفهامঅতঃপর কেমন
54|30|অতঃপর কেমন কঠোর ছিল আমার শাস্তি ও সতর্কবাণী।			

وَٰحِدَةً	صَيْحَةً	عَلَيْهِمْ	أَرْسَلْنَا	إِنَّا
اسم منصوب [و ح د] একটি	اسم منصوب [ص ي ح] প্রচন্ড শব্দ	جرّ +ضمير তাদের উপর	فعل ماض +ضمير [ر س ل IV] আমরা পাঠাই	ح. مشبه بفعل +ضمير+নিশ্চয়ই আমরা
54|31|আমি তাদের প্রতি একটিমাত্র নিনাদ প্রেরণ করেছিলাম। এতেই তারা হয়ে গেল শুষ্ক				

﴾31﴿ ٱلْمُحْتَظِرِ	كَهَشِيمِ	فَكَانُوا۟
IV]معرفة اسم مجرور [ح ظ ر খোয়ার প্রস্তকারীর	جرّ +اسم مجرور [ه ش م]শুষ্কপল্লব	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ك و ن]অতঃপর হয়ে গেল তারা
শাখাপল্লব নির্মিত দলিত খোয়াড়ের ন্যায়।		

لِلذِّكْرِ	ٱلْقُرْءَانَ	يَسَّرْنَا	وَلَقَدْ
جرّ +معرفة اسم مجرور [ذ ك ر]উপদেশ গ্রহনের জন্য	معرفة اسم منصوب [ق ر ا]কুরআন	فعل مضارع +ضمير [ي س ر]II সহজ করেছি আমরা	ح.عطف +ل-تاكيد ح. تحقيق+এবং নিশ্চয়ই
54|32|আমি কোরআনকে বোঝার জন্যে সহজ করে দিয়েছি।			

﴾32﴿ مُّدَّكِرٍ	مِن	فَهَلْ
IV]اسم مجرور [د ك ر উপদেশ গ্রহনকারী	جرّহতে	ح. استئنافية +ح. استفهام তবে কি
অতএব, কোন চিন্তাশীল আছে কি?		

﴾33﴿ بِٱلنُّذُرِ	لُوطٍۭ	قَوْمُ	كَذَّبَتْ
جرّ +معرفة اسم مجرور [ن ذ ر]সতর্কবাণী	اسم علم مجرورলূতের	اسم مرفوع [ق و م]জাতি	فعل ماض [ك ذ ب]II মিথ্যারোপ করেছিল
54|33|লূত-সম্প্রদায় সতর্ককারীদের প্রতি মিথ্যারোপ করেছিল।			

ءَالَ	إِلَّآ	حَاصِبًا	عَلَيْهِمْ	أَرْسَلْنَا	إِنَّآ
اسم منصوب [ا و ل]পরিবারকে	ح. حصر ছাড়া	اسم منصوب [ح ص ب]প্রস্তর বর্ষণকারী ঝটিকা	جرّ +ضمير তাদের উপর	فعل ماض +ضمير [ر س ل IV] পাঠাই আমরা	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমরা
54|34|আমি তাদের প্রতি প্রেরণ করেছিলাম প্রস্তর বর্ষণকারী প্রচন্ড ঘূর্ণিবায়ু;					

بِسَحَرٍ ﴿34﴾	نَّجَّيْنَٰهُم	لُوطٍ ۖ
جرّ +اسم مجرور [س ح ر] রাতের শেষে	فعل ماض +ضمير +ضمير [ن ج و] উদ্ধার করেছিলাম আমরা তাদের	اسم علم مجرورলুতের
কিন্তু লূত পরিবারের উপর নয়। আমি তাদেরকে রাতের শেষপ্রহরে উদ্ধার করেছিলাম।		

نَجْزِى	كَذَٰلِكَ	عِندِنَا ۚ	مِّنْ	نِّعْمَةً
فعل مضارع [ج ز ي] পুরষ্কার দেই আমরা	جرّ +اسم اشراة এভাবেই	اسم مجرور +ضمير [ع ن د]আমাদের নিকট	جرّ হতে	اسم منصوب [ن ع م]অনুগ্রহে
54|35|আমার পক্ষ থেকে অনুগ্রহ স্বরূপ। যারা কৃতজ্ঞতা স্বীকার করে,				

شَكَرَ ﴿35﴾	مَن
فعل ماض [س ك ر]শোকর করে	اسم موصولযে
আমি তাদেরকে এভাবে পুরস্কৃত করে থকি।	

بِٱلنُّذُرِ ﴿36﴾	فَتَمَارَوْاْ	بَطْشَتَنَا	أَنذَرَهُم	وَلَقَدْ
جرّ +معرفة اسم مجرور [ن ذ ر] সতর্কবাণী	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [م ر يVI] অতঃপর সন্দেহ করেছিল তারা	اسم منصوب +ضمير [ب ط ش]আমাদের পাকড়াও	فعل ماض +ضمير [ن ذ رIV] সতর্ক করেছিল তাদের	ح.عطف +ل- تاكيد +ح. تحقيقএবং নিশ্চয়ই
54|36|লূত (আঃ) তাদেরকে আমার প্রচন্ড পাকড়াও সম্পর্কে সতর্ক করেছিল। অতঃপর তারা সতর্কবাণী সম্পর্কে বাকবিতন্ডা করেছিল।				

فَطَمَسْنَآ	ضَيْفِهِۦ	عَن	رَٰوَدُوهُ	وَلَقَدْ
ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ط م س] অতঃপর নিষ্প্রভ করেছিলাম আমরা	اسم مجرور +ضمير [ض ي ف]তার মেহমান	جرّ হতে	فعل ماض +ضمير +ضمير [ر و د]চেষ্টা করেছিল তারা তার হতে	ح.عطف +ل- تاكيد +ح. تحقيقএবং নিশ্চয়ই
54|37|তারা লূতের (আঃ) কাছে তার মেহমানদেরকে দাবী করেছিল।				

وَنُذُرِ ﴿37﴾	عَذَابِى	فَذُوقُواْ	أَعْيُنَهُمْ
ح.عطف +اسم مجرور [ن ذ ر] ও আমার সতর্কবাণীর	اسم ج+ضمير [ع ذ ب]আমার শাস্তির	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ذ و ق]+অতঃপর স্বাদ গ্রহণ কর তোমরা	اسم منصوب +ضمير [ع ي ن]তাদের চোখগুলি
তখন আমি তাদের চক্ষু লোপ করে দিলাম। অতএব, আস্বাদন কর আমার শাস্তি ও সতর্কবাণী।			

مُّسْتَقِرٌّ ﴿38﴾	عَذَابٌ	بُكْرَةً	صَبَّحَهُم	وَلَقَدْ

اسم مرفوع [ق ر Xر] বিরামহীন	اسم مرفوع [ع ذ ب] শাস্তি	اسم منصوب[ب ك ر] খুব ভোরে	فعل ماض +ضمير [ص ب ح III] এসেছিল ভোরে তাদের	ح.عطف +ل-تاكيد +ح. تحقيق এবং নিশ্চয়ই
54|**38**|তাদেরকে প্রত্যুষে নির্ধারিত শাস্তি আঘাত হেনেছিল।				

وَنُذُرِ ﴿39﴾	عَذَابِى	فَذُوقُوا۟
ح.عطف +اسم مجرور [ن ذ ر] ও আমার সতর্কবাণী	اسم مجرور +ه[ع ذ ب]আমার শাস্তি	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ذ و ق]অতঃপর স্বাদ গ্রহণ কর তোমরা
54|**39**|অতএব, আমার শাস্তি ও সতর্কবাণী আস্বাদন কর।		

فَهَلْ	لِلذِّكْرِ	ٱلْقُرْءَانَ	يَسَّرْنَا	وَلَقَدْ
ح. استئنافية +ح. استفهام তবে কি	جرّ +معرفة اسم مجرور [ذ ك ر] উপদেশ গ্রহনের জন্য	معرفة اسم منصوب [ق ر ا]কুরআন	فعل مضارع +ضمير [ي س ر II] সহজ করেছি আমরা	ح.عطف +ل-تاكيد +ح. تحقيق এবং নিশ্চয়ই
54|**40**|আমি কোরআনকে বোঝবার জন্যে সহজ করে দিয়েছি।				

مُّدَّكِرٍ ﴿40﴾	مِن
اسم مجرور [د ك ر IV] উপদেশ গ্রহনকারী	جرّহতে
অতএব, কোন চিন্তাশীল আছে কি?	

ٱلنُّذُرُ ﴿41﴾	فِرْعَوْنَ	ءَالَ	جَآءَ	وَلَقَدْ

معرفة اسم مرفوع [ن ذ ر] সতর্কবাণী	اسم علم منصوب ফেরাউনের	اسم منصوب [ا ل و]সম্প্রদায়	فعل ماض [ج ي ا]এসেছিল	د+ل-تاكيد +ح. تحقيقএবং নিশ্চয়ই
54|41|ফেরাউন সম্প্রদায়ের কাছেও সতর্ককারীগণ আগমন করেছিল।				

أَخْذَ	فَأَخَذْنَٰهُمْ	كُلِّهَا	بِـَٔايَٰتِنَا	كَذَّبُواْ
اسم منصوب [ا خ ذ] ধরা	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ا خ ذ] অতঃপর ধরেছিলাম আমরা তাদের	اسم مجرور +ضمير [ك ل ل] সবগুলিকেই	جرّ +اسم مجرور +ضمير [ا ي ي] আমাদের নিদর্শনের	فعل ماض +ضمير [ك ذ ب II] মিথ্যা বলেছিল তারা
54|42|তারা আমার সকল নিদর্শনের প্রতি মিথ্যারোপ করেছিল। অতঃপর আমি পরাভূতকারী,				

مُّقْتَدِرٍ ﴿42﴾	عَزِيزٍ
اسم مجرور [ق د ر VIII] মহাশক্তিমানের	[ع ز ز] اسم مجرورপরাক্রমশালীর
পরাক্রমশালীর ন্যায় তাদেরকে পাকড়াও করলাম।	

لَكُم	أَمْ	أُوْلَٰٓئِكُمْ	مِّنْ	خَيْرٌ	أَكُفَّارُكُمْ

جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	ح.عطف অথবা	اسم اشارة +ضمير তাদের	جرّ হতে	اسم مرفوع [خ ي ر] উত্তম	ح. استفهام +اسم مرفوع +ضمير [ك ف ر] তোমাদের কাফেররা কি
54|43|তোমাদের মধ্যকার কাফেররা কি তাদের চাইতে শ্রেষ্ঠ ?					

ٱلزُّبُرِ ﴿43﴾	فِى	بَرَآءَةٌ
معرفة اسم مجرور [ز ب ر] গ্রন্থ সমূহের	جرّমধ্যে	اسم مرفوع [ب ر ا] অব্যাহতি
না তোমাদের মুক্তির সনদপত্র রয়েছে কিতাবসমূহে?		

مُّنتَصِرٌ ﴿44﴾	جَمِيعٌ	نَحْنُ	يَقُولُونَ	أَمْ
اسم مرفوع [نص ر VIII] প্রতিরোধে সক্ষম	اسم مرفوع [ج م ع] সংঘবদ্ধ দল	ضمير منفصل আমরা	فعل مضارع +ضمير [ق و ل]বলে তারা	ح.عطف অথবা
54|44|না তারা বলে যে, আমারা এক অপরাজেয় দল?				

ٱلدُّبُرَ ﴿45﴾	وَيُوَلُّونَ	ٱلْجَمْعُ	سَيُهْزَمُ

معرفة اسم منصوب [د ب ر]পৃষ্ঠ	ح.عطف +فعل مضارع +ضمير [و ل ي II]ফিরাবে তারা	معرفة اسم مرفوع [ج م ع]সংঘবদ্ধ দলকে	ح. استقبال +فعل مضارع مجهول [ه ز م]শীঘ্রই পরাজিত হবে

54|45|এ দল তো সত্ত্বরই পরাজিত হবে এবং পৃষ্ঠপ্রদর্শন করবে।

وَٱلسَّاعَةُ	مَوْعِدُهُمْ	ٱلسَّاعَةُ	بَلِ
ح.عطف ++معرفة اسم مرفوع [س و ع]এবং কিয়ামত	اسم مرفوع +ضمير [و ع د] তাদের নির্ধারিত সময়	معرفة اسم مرفوع [س و ع]কিয়ামত	ح. إضراب বরং

54|46|বরং কেয়ামত তাদের প্রতিশ্রুত সময় এবং

وَأَمَرُّ ﴿46﴾	أَدْهَىٰ
ح.عطف +اسم مرفوع [م ر ر]তিক্ততর	صفة مرفوعة [د ه ي] বড় ভয়াবহ

কেয়ামত ঘোরতর বিপদ ও তিক্ততর।

وَسُعُرٍ ﴿47﴾	ضَلَٰلٍ	فِي	ٱلْمُجْرِمِينَ	إِنَّ
ح.عطف +اسم مجرور [س ع ر]বিকৃত বুদ্ধির	اسم مجرور [ض ل ل]বিভ্রান্তির	جرّ মধ্যে	معرفة اسم منصوب [ج ر م IV] অপরাধীরা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই

54|47|নিশ্চয় অপরাধীরা পথভ্রষ্ট ও বিকারগ্রস্ত।

يَوْمَ	يُسْحَبُونَ	فِي	ٱلنَّارِ	عَلَىٰ	وُجُوهِهِمْ
اسم منصوب [ي و م] যেদিন	فعل مضارع مجهول +ضمير [س ح ب] টেনে হিঁচড়ে নেওয়া হবে	جرّ মধ্যে	معرفة اسم مجرور [ن و ر] আগুনের	جرّ উপর	اسم مجرور +ضمير [و ج ه]তাদের মুখমন্ডলে
54|48|যেদিন তাদেরকে মুখ হিঁচড়ে টেনে নেয়া হবে জাহান্নামে, বলা হবেঃ					

ذُوقُواْ	مَسَّ	سَقَرَ ﴿47﴾
فعل ماض +ضمير [ذ و ق]স্বাদ নাও	اسم منصوب [م س س] স্পর্শের	اسم منصوب [س ق ر] দোযখের
অগ্নির খাদ্য আস্বাদন কর।		

إِنَّا	كُلَّ	شَيْءٍ	خَلَقْنَٰهُ	بِقَدَرٍ ﴿49﴾
ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	اسم منصوب [ك ل ل] প্রত্যেক	اسم مجرور [ش ي ا] জিনিস	فعل ماض +ضمير +ضمير [خ ل ق] সৃষ্টি করেছি আমরা তা	جرّ +اسم مجرور [ق د ر] নির্ধারিত পরিমাণে
54|49|আমি প্রত্যেক বস্তুকে পরিমিতরূপে সৃষ্টি করেছি।				

وَمَآ	أَمْرُنَآ	إِلَّا	وَٰحِدَةٌ
ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم مرفوع +ضمير [ا م ر] আমাদের নির্দেশ	ح. حصر ছাড়া	اسم مرفوع [و ح د] একবার

54|50|আমার কাজ তো এক মুহূর্তে

بِٱلْبَصَرِ ﴿50﴾	كَلَمْحِ
[ب ص ر] معرفة اسم مجرور+ جرّ চোখের	[ل م ح] اسم مجرور+ جرّ পলকের মত
চোখের পলকের মত।	

فَهَلْ	أَشْيَاعَكُمْ	أَهْلَكْنَآ	وَلَقَدْ
ح. استئنافية +ح. استفهام অতঃপর কি	اسم منصوب +ضمير [س ي ع] তোমাদের দলগুলি	فعل ماض +ضمير [ه ل ك IV] ধ্বংস করেছি আমরা	ج+ل-تاكيد +ح. تحقيق এবং নিশ্চয়ই
54|51|আমি তোমাদের সমমনা লোকদেরকে ধ্বংস করেছি, অতএব,			

مُّدَّكِرٍ ﴿51﴾	مِن
[د ك ر IV] اسم مجرور উপদেশ গ্রহনকারী	جرّ হতে
কোন চিন্তাশীল আছে কি	

ٱلزُّبُرِ ﴿52﴾	فِى	فَعَلُوهُ	شَىْءٍ	وَكُلُّ
معرفة اسم مجرور [ز ب ر] হখাতা সমূহের	جرّ মধ্যে	فعل ماض +ضمير +ضمير [ف ع ل] করছে তারা যা	اسم مجرور [ش ي ا] জিনিষ	ح.عطف +اسم مرفوع [ك ل ل] এবং প্রত্যেক
54|52|তারা যা কিছু করেছে, সবই আমলনামায় লিপিবদ্ধ আছে।				

مُّسْتَطَرٌ ﴿53﴾	وَكَبِيرٍ	صَغِيرٍ	وَكُلُّ
اسم مرفوع [س ط ر VIII] লিপিবদ্ধ	ح.عطف +اسم مجرور [ك ب ر]বড়	اسم مجرور[ص غ ر]ছোট	ح.عطف +اسم مرفوع [ك ل ل]এবং প্রত্যেক
54|53|ছোট ও বড় সবই লিপিবদ্ধ।			

وَنَهَرٍ ﴿54﴾	جَنَّٰتٍ	فِي	ٱلْمُتَّقِينَ	إِنَّ
ح.عطف +اسم مجرور [ن ه ر]ও ঝর্ণা সমূহের	[ج ن ن] اسم مجرور জান্নাত সমূহের	جرّ মধ্যে য	معرفة اسم منصوب [و ق ي VIII] মুত্তাকীরা	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
54|54|খোদাভীরুরা থাকবে জান্নাতে ও নির্ঝরিণীতে।				

	عِندَ	صِدْقٍ	مَقْعَدِ	فِي
	ظ. مكان منصوب [ع ن د] নিকটে	اسم مجرور [ص د ق] যোগ্য	اسم مجرور [ق ع د] আসনে	جرّ মধ্যে
54|55|যোগ্য আসনে,				

مُّقْتَدِرٍ ﴿55﴾	مَلِيكٍ
اسم مجرور [ق د ر VIII] মহাশক্তিমান	اسم د[م ل ك]সম্রাটের
সর্বাধিপতি সম্রাটের সান্নিধ্যে।	

।।সূরা আল্-ক্কামার সমাপ্ত ।।

سُوْرَةُ الرَّحمانِ مدَنِيَّةٌ

৫৫। সূরা আর্-রহমান : মাদানী

রুকু: ০৩ আয়াত:৭৮

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ٱلْإِنسَٰنَ ﴿3﴾	خَلَقَ	ٱلْقُرْءَانَ ﴿2﴾	عَلَّمَ	ٱلرَّحْمَٰنُ ﴿1﴾
معرفة اسم منصوب [ا ن س] মানুষদের কে	فعل ماض [خ ل ق]সৃষ্টি করেছেন তিনি	معرفة اسم منصوب [ق ر ا]কুরআন	فعل ماض [ع ل م II] শিক্ষা দিয়েছেন	معرفة اسم مرفوع [ر ح م] অশেষ দয়ালু

55|1|করুনাময় আল্লাহ।

55|2|শিক্ষা দিয়েছেন কোরআন,

55|3|সৃষ্টি করেছেন মানুষ,

بِحُسْبَانٍ ﴿5﴾	وَٱلْقَمَرُ	ٱلشَّمْسُ	ٱلْبَيَانَ ﴿4﴾	عَلَّمَهُ

فعل ماض +ضمير [ع ل م] শিখিয়েছেন তিনি	معرفة اسم منصوب [ب ي ن]ভাব প্রকাশ করতে	معرفة اسم مرفوع [ش م س]সূর্য	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ق م ر]ও চন্দ্র	جرّ +اسم مجرور [ح س ب]হিসাব মত
55|4|তাকে শিখিয়েছেন বর্ণনা। 55|5|সূর্য ও চন্দ্র হিসাবমত চলে।				

وَٱلنَّجْمُ	وَٱلشَّجَرُ	يَسْجُدَانِ ﴿6﴾
ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ن ج م]এবং তারকা	ح.عطف+معرفة اسم مرفوع [ش ج ر]ও গাছপালা	فعل مضارع +ضمير [س ج د] উভয়ে সিজদা রত
55|6|এবং তৃণলতা ও বৃক্ষাদি সেজদারত আছে।		

وَٱلسَّمَآءَ	رَفَعَهَا	وَوَضَعَ	ٱلْمِيزَانَ ﴿٧7﴾
ح.عطف +معرفة اسم منصوب [س م و]এবং আকাশকে	فعل ماض +ضمير [ر ف ع]সমুন্নত করেছেন তা	ح.عطف +فعل ماض [و ض ع]ও স্থাপন করেছেন	معرفة اسم منصوب [م ز ن] মানদন্ড
55|7|তিনি আকাশকে করেছেন সমুন্নত এবং স্থাপন করেছেন তুলাদন্ড।			

أَلَّا	تَطْغَوْا۟	فِى	ٱلْمِيزَانِ ﴿8﴾
ح. تفسير+ح. نهي যেন না	فعل مضارع مجزوم +ضمير [ط غ ي] সীমালঙ্ঘন কর তোমরা	جرّমধ্যে	معرفة اسم مجرور [م ز ن]মানদন্ড
55|8|যাতে তোমরা সীমালংঘন না কর তুলাদন্ডে।			

وَلَا	بِٱلْقِسْطِ	ٱلْوَزْنَ	وَأَقِيمُوا۟
ح.عطف +ح. نهيএবং না	جرّ +معرفة اسم مجرور [ق س ط]ন্যায্যভাবে	معرفة اسم منصوب [و ز ن] ওজন	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ق و م]প্রতিষ্ঠা কর তোমরা
55|9|তোমরা ন্যায্য ওজন কায়েম কর			

ٱلْمِيزَانَ ﴿9﴾	تُخْسِرُوا۟
معرفة اسم منصوب [م ز ن]দাড়িপাল্লায়	فعل مضارع مجزوم +ضمير [خ س ر] কম দিও তোমরা
এবং ওজনে কম দিয়ো না	

لِلْأَنَامِ ﴿10﴾	وَضَعَهَا	وَٱلْأَرْضَ
جرّ معرفة اس م مجرور [ا ن م]সৃষ্টজীবের জন্য	فعل ماض +ضمير [و ض ع] স্থাপন করেছেন তিনি তা	د+معرفة اسم منصوب [ا ر ض]এবং পৃথিবী
55|10|তিনি পৃথিবীকে স্থাপন করেছেন সৃষ্টজীবের জন্যে।		

ٱلْأَكْمَامِ ﴿11﴾	ذَاتُ	وَٱلنَّخْلُ	فَٰكِهَةٌ	فِيهَا
معرفة اسم مجرور [ك م م]আবরন	اسم مرفوع বিশিষ্ট	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ن خ ل]ও খেজুর গাছ	اسم مرفوع [ف ك ه]ফলমূল	جرّ +ضمير তার মধ্যে
55|11|এতে আছে ফলমূল এবং বহিরাবরণবিশিষ্ট খর্জুর বৃক্ষ।				

﴿12﴾ وَٱلرَّيْحَانُ	ٱلْعَصْفِ	ذُو	وَٱلْحَبُّ
ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ر و ح] সুগন্ধ	معرفة اسم مجرور [ع غ ص] ভূষি	اسم مرفوع বিশিষ্ট	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ح ب ب] এবং শস্য
55|12|আর আছে খোসাবিশিষ্ট শস্য ও সুগন্ধি ফুল।			

﴿13﴾ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَىِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]II অস্বীকার করবে উভয়ে	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و] নিয়ামত সমূহ	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতএব কোন কোন
55|13|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অনুগ্রহকে অস্বীকার করবে?			

﴿14﴾ كَٱلْفَخَّارِ	صَلْصَٰلٍ	مِن	ٱلْإِنسَٰنَ	خَلَقَ
جرّ +معرفة اسم مجرور [ف خ ر] পোড়ামাটির মত	اسم مجرور [ص ل ص ل QI] শুষ্ক ঠনঠনে মাটি	جرّ হতে	معرفة اسم منصوب [ا ن س] মানুষকে	فعل ماض [خ ل ق] সৃষ্টি করেছেন তিনি
55|14|তিনি মানুষকে সৃষ্টি করেছেন পোড়া মাটির ন্যায় শুষ্ক মৃত্তিকা থেকে।				

﴿15﴾ نَّارٍ	مِّن	مَّارِجٍ	مِن	ٱلْجَآنَّ	وَخَلَقَ

اسم مجرور [ن و ر]আগুনের	جرّ হতে	اسم مجرور [م ر ج] শিখা	جرّ হতে	معرفة اسم منصوب [ج ن ن] জ্বিনকে	ح.عطف +فعل ماض [خ ل ق]এবং সৃষ্টি করেছেন
55|15|এবং জিনকে সৃষ্টি করেছেন অগ্নিশিখা থেকে।					

﴾16﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ بII] অস্বীকার করবে উভয়ে	اسم مرفوع +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ى و]শক্তি ক্ষমতা কে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতএব কোন কোন
55|16|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অনুগ্রহ অস্বীকার করবে?			

﴾17﴿ ٱلْمَغْرِبَيْنِ	وَرَبُّ	ٱلْمَشْرِقَيْنِ	رَبُّ
معرفة اسم مرفوع [غ ر ب]দুই অস্তাচলের	ح.عطف +اسم مرفوع [ر ب ب]ও মালিক	معرفة اسم مرفوع [ش ر ق]দুই উদয়াচলের	اسم مرفوع [ر ب ب]মালিক
55|17|তিনি দুই উদয়াচল ও দুই অস্তাচলের মালিক।			

﴾18﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب II] অস্বীকার করবে উভয়ে	اسم مرفوع +ضمير [ر ب ب] তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতএব কোন
55|18|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

﴾19﴿ يَلْتَقِيَانِ	ٱلْبَحْرَيْنِ	مَرَجَ
فعل مضارع +ضمير [ل ق ي VIII] মিলিত হওয়া উভয়ে	معرفة اسم منصوب [ب ح ر] দুই সমূদ্র	فعل ماض [م ر ج] প্রবাহিত করেছেন
55|19|তিনি পাশাপাশি দুই দরিয়া প্রবাহিত করেছেন।		

﴾20﴿ يَبْغِيَانِ	لَّا	بَرْزَخٌ	بَيْنَهُمَا
فعل مضارع +ضمير [ب غ ي] সীমা লঙ্ঘন করে উভয়ৌ	ح. نفي না	اسم مرفوع অন্তরাল	ظ. مكان منصوب +ضمير [ب ي ن] তাদের উভয়ের মাঝে
55|20|উভয়ের মাঝখানে রয়েছে এক অন্তরাল, যা তারা অতিক্রম করে না।			

﴾21﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَىِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب II] অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و] নিয়ামত সমূহ	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|21|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

﴾22﴿ وَٱلْمَرْجَانُ	ٱللُّؤْلُؤُ	مِنْهُمَا	يَخْرُجُ
ج+معرفة اسم مرفوع [م ر ج] প্রবাল	معرفة اسم مرفوع [ل ا ل ا] মুক্তা	جرّ +ضمير তা থেকে	فعل مضارع [خ ر ج] বের হয়

55|22|উভয় দরিয়া থেকে উৎপন্ন হয় মোতি ও প্রবাল।

﴾23﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير]অস্বীকার করবে উভয়ে	اسم مرفوع +ضمير [ر ب ب]উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و] নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرورঅতঃপর কোন
55|23|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

﴾24﴿ كَٱلْأَعْلَٰمِ	ٱلْبَحْرِ	فِى	ٱلْمُنشَـَٔاتُ	ٱلْجَوَارِ	وَلَهُ
جرّ +معرفة اسم مجرور [ع ل م] পাহাড়ের ন্যায়	معرفة اسم مجرور[ب ح ر]সাগরের	جرّ মধ্যে	معرفة اسم مرفوع [ن ش ا]সুউচ্চ	معرفة اسم مجرور [ج و ر]জাহাজ সমূহ	ح.عطف +جرّ +ضمير+এবং তাঁরই
55|24|দরিয়ায় বিচরণশীল পর্বতদৃশ্য জাহাজসমূহ তাঁরই (নিয়ন্ত্রনাধীন)					

﴾25﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب] অস্বীকার করবে তোমরা উভয়ে	اسم مجرور +ضمير[ر ب ب] উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|25|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

فَانٍ ﴿26﴾	عَلَيْـهَا	مَنْ	كُلُّ
اسم مجرور [ف ن ي] ধ্বংসশীল	ضمير+ جرّতার উপর	اسم موصولযা	اسم مرفوع [ك ل ل] প্রত্যেক
55|26|ভূপৃষ্টের সবকিছুই ধ্বংসশীল।			

ذُو	رَبِّكَ	وَجْهُ	وَيَبْقَىٰ
اسم مرفوع অধিকারী	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমার রবের	اسم مرفوع[و ج ه] সত্তা	ح.عطف +فعل مضارع [ب ق ي]এবং অবশিষ্ট থাকবেন
55|27|একমাত্র আপনার মহিমায় ও করবে?			

وَٱلْإِكْرَامِ ﴿27﴾	ٱلْجَلَٰلِ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ك ر م]মহানুভব	معرفة اسم مجرور [ذ ل ل]মহিমার
মহানুভব পালনকর্তার সত্তা ছাড়া।	

تُكَذِّبَانِ ﴿28﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]اا অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مرفوع +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|28|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে			

وَٱلْأَرْضِ ۚ	ٱلسَّمَٰوَٰتِ	فِي	مَن	يَسْـَٔلُهُۥ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ا ر ض] ও পৃথিবীর	معرفة اسم مجرور [س م و]আকাশ মন্ডলীর	جرّ মধ্যে	اسم موصول যা	فعل مضارع +ضمير [س ا ل]প্রার্থনা করে তাঁরই কাছে
55|29|নভোমন্ডল ও ভূমন্ডলের সবাই তাঁর কাছে প্রার্থী।				

شَأْنٍ ﴿39﴾	فِي	هُوَ	يَوْمٍ	كُلَّ
اسم مجرور [س ا ن] অবস্থায়	جرّ মধ্যে	ضمير منفصل তিনি	اسم مجرور [ي و م]মূহূর্তে	اسم منصوب[ك ل ل] প্রত্যেক
তিনি সর্বদাই কোন না কোন কাজে রত আছেন।				

تُكَذِّبَانِ ﴿30﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب] অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مرفوع +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم ج[ا ل و] নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|30|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

ٱلثَّقَلَانِ ﴿31﴾	أَيُّهَ	لَكُمْ	سَنَفْرُغُ

معرفة اسم مرفوع [ث ق [لবোঝাদ্বয়	اسم مرفوع ওহে	جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	ح. استقبال +فعل مضارع [ف ر [غশীঘ্রই অবসর নিব আমরা
55|31|হে জিন ও মানব! আমি শীঘ্রই তোমাদের জন্যে কর্মমুক্ত হয়ে যাব।			

تُكَذِّبَانِ ﴿32﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]اا অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم ج+ضمير [ر ب [بতোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل [وনিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|32|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

ٱسْتَطَعْتُمْ	إِنِ	وَٱلْإِنسِ	ٱلْجِنِّ	يَٰمَعْشَرَ
فعل ماض +ضمير [ط [ع وসমর্থ হও তোমরা	ح. شرط যদি	ح.عطف +معرفة اسم [ا نزس] مجرورও মানবের	معرفة اسم مجرور [ج ن [نজিনের	ح. نداء +اسم مرفوع [ع ش ر]হে সম্প্রদায়
55|33|হে জিন ও মানবকূল, নভোমন্ডল ও ভূমন্ডলের প্রান্ত অতিক্রম করা				

ٱلسَّمَٰوَٰتِ	أَقْطَارِ	مِنْ	تَنفُذُوا۟	أَن
معرفة اسم مجرور [س [م وআকাশ মন্ডলীর	اسم مجرور [ق ط [رসীমাসমূহ	جرّ হতে	فعل مضارع منصوب +ضمير [ن ف ذ]অতিক্রম করে পালাতে	ح. مصدرية যে
যদি তোমাদের সাধ্যে কুলায়, তবে অতিক্রম কর।				

﴾33﴿ بِسُلْطَٰنٍ	إِلَّا	تَنفُذُونَ	لَا	فَٱنفُذُواْ ۚ	وَٱلْأَرْضِ
جرّ +اسم مجرور[س ل ط]শক্তি	ح. حصر ছাড়া	فعل مضارع +ضمير [ن ف ذ]অতিক্রম করে পালাতে পারবে তোমরা	ح. نفي না	ح. استئنافية +فعل أمر +ضمير [ن ف ذ] অতিক্রম কর তোমরা	ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ا ر ض]ও পৃথিবীর
কিন্তু ছাড়পত্র ব্যতীত তোমরা তা অতিক্রম করতে পারবে না।					

﴾34﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]II] অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|34|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

وَنُحَاسٌ	نَّارٍ	مِّن	شُوَاظٌ	عَلَيْكُمَا	يُرْسَلُ
ح.عطف +اسم مرفوع [ن ح س]ধূঁয়া	اسم مجرور [ن و ر] আগুনের	جرّ হতে	اسم مرفوع [ش و ظ] শিখা	جرّ +ضمير তোমাদের উভয়ের উপর	فعل مضارع مجهول [ر س ل]IV] প্রেরিত হবে
55|35|ছাড়া হবে তোমাদের প্রতি অগ্নিস্ফুলিঙ্গ ও ধুম্রকুঞ্জ					

تَنتَصِرَانِ ﴿35﴾	فَلَا
فعل مضارع +ضمير [ن ص ر VIII] প্রতিরোধ করতে তোমাদের পারবে তোমরা	ح. استئنافية +ح. نفي অতঃপর না
তখন তোমরা সেসব প্রতিহত করতে পারবে না।	

تُكَذِّبَانِ ﴿36﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب II] অস্বীকার করবে তোমরা উভয়ে	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و] নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|36|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

فَكَانَتْ	ٱلسَّمَآءُ	ٱنشَقَّتِ	فَإِذَا
ح. عطف +فعل ماض [ك ة ن] এবং হবে	معرفة اسم مرفوع [س م و] আকাশ মন্ডলী	فعل ماض [ش ق ق VII] বিদীর্ণ হবে	ح. استئنافية +ظ. زمان অতঃপর যখন
55|37|যেদিন আকাশ বিদীর্ণ হবে তখন			

كَٱلدِّهَانِ ﴿37﴾	وَرْدَةً
جرّ +اسم مجرور [د ه ن] লালচামড়ার মত	اسم منصوب [و ر د] রক্তবর্ণ
সেটি রক্তবর্ণে রঞ্জিত চামড়ার মত হয়ে যাবে।	

تُكَذِّبَانِ ﴿38﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ب ذ] অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা করবে উভয়ে তো	اسم مجرور +ضمير [رب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন

55|38|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?

إِنسٌ	ذَنۢبِهِۦٓ	عَن	يُسْـَٔلُ	لَّا	فَيَوْمَئِذٍ
اسم مرفوع [ا ن س]কোন মানবকে	اسم مجرور +ضمير [ذ ن ب]তার গুনাহ	جرّ হতে	فعل مضارع مجهول [س ا ل]জিজ্ঞাসা করা হবে	ح. نفي না	ح. استئنافية +ظ. زمانঅতঃপর যখন

55|39|সেদিন মানুষ না তার অপরাধ সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত

جَآنٌّ ﴿39﴾	وَلَا
اسم مرفوع [ج ن ن]কোন জ্বিনকে	ح.عطف +ح. نفيএবং না

হবে, না জিন।

تُكَذِّبَانِ ﴿40﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন

55|40|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?

فَيُؤْخَذُ	بِسِيمَٰهُمْ	ٱلْمُجْرِمُونَ	يُعْرَفُ
ح. عطف +فعل مضارع مجهول [ا خ ذ]ধরা হবে	جرّ +اسم مجرور +ضمير[س و م]তাদের চেহারা দ্বারা	معرفة اسم مرفوع [ج ر م]অপরাধীদের	فعل مضارع مجهول [ع ر ف] চেনা যাবে

55|41|অপরাধীদের পরিচয় পাওয়া যাবে তাদের চেহারা থেকে; অতঃপর তাদের

وَٱلْأَقْدَامِ ﴿41﴾	بِٱلنَّوَٰصِى
ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ق د م] কদমসমূহ	جرّ +معرفة اسم مجرور [ن ص ي] সম্মুখের চুল

কপালের চুল ও পা ধরে টেনে নেয়া হবে।

تُكَذِّبَانِ ﴿42﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন

55|42|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?

يُكَذِّبُ	ٱلَّتِى	جَهَنَّمُ	هَٰذِهِۦ
فعل مضارع مجهول [ك ذ ب]।।মিথ্যা বলত	اسم اشارة যা	اسم علم مرفوعজাহান্নাম	اسم اشارةএই সেই
55|43|এটাই জাহান্নাম, যাকে			

ٱلْمُجْرِمُونَ ﴿43﴾	بِهَا
معرفة اسم مرفوع [ج ر م]অপরাধীরা	جرّ +ضميرযাকে
অপরাধীরা মিথ্যা বলত।	

حَمِيمٍ ءَانٍ ﴿44﴾		وَبَيْنَ	بَيْنَهَا	يَطُوفُونَ
اسم مجرور [ا ن ي] ফুটন্ত	اسم مجرور [ح م م]গরম পানি	ح.عطف +ظ. مكان منصوب [ب ي ن] মাঝে	ظ. مكان منصوب +ضمير [ب ي ن] তার মাঝে	فعل مضارع +ضمير [ط و ف]আবর্তন করবে তারা
55|44|তারা জাহান্নামের অগ্নি ও ফুটন্ত পানির মাঝখানে প্রদক্ষিণ করবে।				

تُكَذِّبَانِ ﴿45﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَىِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]।। অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|45|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

جَنَّتَانِ ﴿46﴾	رَبِّهِۦ	مَقَامَ	خَافَ	وَلِمَنْ
اسم مرفوع [ج ن ن]দুই বাগান	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তার রবের	اسم منصوب [ق و م]দাঁড়াতে	فعل ماض [خ و ف]ভয় করে	ح.عطف +جرّ +اسم موصولএবং তার জন্য
55|46|যে ব্যক্তি তার পালনকর্তার সামনে পেশ হওয়ার ভয় রাখে, তার জন্যে রয়েছে দু'টি উদ্যান।				

تُكَذِّبَانِ ﴿47﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]। অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|42|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

أَفْنَانٍ ﴿48﴾	ذَوَاتَآ
اسم مجرور [ف ن ن]ঘনপল্লব	اسم مرفوعবিশিষ্ট
55|48|উভয় উদ্যানই ঘন শাখা-পল্লববিশিষ্ট।	

تُكَذِّبَانِ ﴿49﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]। অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন

55|49|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?

تَجْرِيَانِ ﴿50﴾	عَيْنَانِ	فِيهِمَا
فعل مضارع +ضمير [ك ر ي] প্রবাহমান	اسم مرفوع [ع ي ن]দুই প্রস্রবন	جرّ +ضمير উভয়ের মধ্যে
55|50|উভয় উদ্যানে আছে বহমান দুই প্রস্রবন।		

تُكَذِّبَانِ ﴿51﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]।। অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|51|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

زَوْجَانِ ﴿52﴾	فَٰكِهَةٍ	كُلِّ	مِن	فِيهِمَا

اسم مرفوع [ز و ج] দুই প্রকার	اسم مجرور [ف ك ه]ফল	اسم مجرور [ك ل ل] প্রত্যেক	جرّ হতে	جرّ +ضمير উভয়ের মধ্যে
55|52|উভয়ের মধ্যে প্রত্যেক ফল বিভিন্ন রকমের হবে।				

تُكَذِّبَانِ ﴿53﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَىِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]II অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|53|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

إِسْتَبْرَقٍ ج	مِنْ	بَطَآئِنُهَا	فُرُشٍۭ	عَلَىٰ	مُتَّكِـِٔينَ
اسم مجرور মোটা পশমের	جرّ হতে	اسم مرفوع +ضمير [ب ط ن]তার আস্তরণ	اسم مجرور [ف ر ش]শয্যাসমূহের	جرّ উপর	اسم منصوب [و ك ا] VIII] হেলান দিয়ে বসবে
55|54|তারা তথায় রেশমের আস্তরবিশিষ্ট বিছানায় হেলান দিয়ে বসবে।					

دَانٍ ﴿54﴾	ٱلْجَنَّتَيْنِ	وَجَنَى
اسم مجرور [د ن و]নিকটে	معرفة اسم منصوب [ج ن ن] দুই বাগানের	ح.عطف +اسم منصوب [ج ن ي]ফল সমূহ
উভয় উদ্যানের ফল তাদের নিকট ঝুলবে।		

﴾55﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]اাا অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|55|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

يَطْمِثْهُنَّ	لَمْ	ٱلطَّرْفِ	قَٰصِرَٰتُ	فِيهِنَّ
فعل مضارع مجزوم +ضمير [ط م ث]স্পর্শ করেছে তাকে	ح. نفي নাই	نفسي معرفة اسم مجرور [ط ر ف] দৃষ্টির	اسم مرفوع [ق ص ر] লজ্জা বনত	جرّ +ضمير তার মধ্যে
55|56|তথায় থাকবে আনতনয়ন রমনীগন, কোন জিন				

﴾56﴿ جَآنٌّ	وَلَا	قَبْلَهُمْ	إِنسٌ
اسم مرفوع [ج ن ن] কোন জ্বিন	ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم منصوب +ضمير [ق ب ل]তাদের পূর্বে	اسم مرفوع [ا ن س] কোন মানব
ও মানব পূর্বে যাদের ব্যবহার করেনি।			

﴾57﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]ااا অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|57|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

وَٱلْمَرْجَانُ ﴿58﴾	ٱلْيَاقُوتُ	كَأَنَّهُنَّ
ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [م ر ج] মুক্তার	معرفة اسم مرفوعহিরা	جرّ +ح. مشبه بفعل +ضمير যেন তারা
55|58|প্রবাল ও পদ্মরাগ সদৃশ রমণীগণ।		

تُكَذِّبَانِ ﴿59﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب] || অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و] নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|59|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

ٱلْإِحْسَٰنُ ﴿60﴾	إِلَّا	ٱلْإِحْسَٰنِ	جَزَآءُ	هَلْ
معرفة اسم مرفوع [ح س ن] উত্তম	ح. حصر ছাড়া	معرفة اسم مجرور [ح س ن] উত্তম	اسم مرفوع [ج ز ي] পুরস্কার	ح. استفهامকি

55|60|সৎকাজের প্রতিদান উত্তম পুরস্কার ব্যতীত কি হতে পারে?

تُكَذِّبَانِ ﴿61﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]ا অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|61|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

جَنَّتَانِ ﴿62﴾	دُونِهِمَا	وَمِن
اسم مرفوع [ج ن ن]দুই উদ্যান	اسم مجرور +ضمير [د و ن] সে দুটি ছাড়ার	ح.عطف +جرّ এবং হতে
55|62|এই দু'টি ছাড়া আরও দু'টি উদ্যান রয়েছে।		

تُكَذِّبَانِ ﴿63﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]ا অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|63|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

مُدْهَآمَّتَانِ ﴿64﴾
اسم مرفوع [د ه م XI] ঘন সবুজ উদ্যান
এ দুই ঘন সবুজ উদ্যান

تُكَذِّبَانِ ﴿65﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب II] অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و] নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|65|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

نَضَّاخَتَانِ ﴿66﴾	عَيْنَانِ	فِيهِمَا
صفة مرفوعة [ن ض خ] উচ্ছলিত উভয়ে	اسم مرفوع [ت ي ن] দুই প্রস্রবন	جرّ +ضمير উভয়ের যর মধ্যে
55|66|তথায় আছে উদ্বেলিত দুই প্রস্রবণ।		

تُكَذِّبَانِ ﴿67﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ

فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]ا অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|67|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

﴾68﴿ وَرُمَّانٌ	وَنَخْلٌ	فَٰكِهَةٌ	فِيهِمَا
ح.عطف +اسم مرفوع [ر م ن]ডালিম	ح.عطف +اسم مرفوع [ن خ ل]ও খেজুর	اسم مرفوع [ف ك ه]ফলমূল	جرّ +ضميرমধ্যে উভয়ের
55|68|তথায় আছে ফল-মূল, খর্জুর ও আনার।			

﴾69﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَىِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]ا অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|69|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

﴾70﴿ حِسَانٌ	خَيْرَٰتٌ	فِيهِنَّ
اسم مرفوع [ح س ن] সুদর্শনা	اسم مرفوع [خ ي ر] সচ্চরিত্রা	جث+ضميرতাদের মধ্যে

55|70|সেখানে থাকবে সচ্চরিত্রা সুন্দরী রমণীগণ।

تُكَذِّبَانِ ﴿71﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]] অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|71|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

ٱلْخِيَامِ ﴿72﴾	فِى	مَّقْصُورَٰتٌ	حُورٌ
معرفة اسم مجرور [خ ي م] তাবু সমূহেরর	جرّমধ্যে	اسم مرفوع [ق ص ر] সুরক্ষিতা	اسم مرفوع [ح و ر] হুর সমূহ
55|72|তাঁবুতে অবস্থানকারিণী হুরগণ।			

تُكَذِّبَانِ ﴿73﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]] অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|73|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

﴾74﴿ جَآنٌّ	وَلَا	قَبْلَهُمْ	إِنسٌ	يَطْمِثْهُنَّ	لَمْ
اسم مرفوع [ج ن ن]কোন জিন	ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم منصوب +ضمير 5ق ب ل] তাদের পূর্বে	اسم مرفوع [ا ن س]কোন মানব	فعل مضارع مجزوم +ضمير [ط م ث] স্পর্শ করেছে তাদের	ح. نفي নাই
55|74|কোন জিন ও মানব পূর্বে তাদেরকে স্পর্শ করেনি।					

﴾75﴿ تُكَذِّبَانِ	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب II] অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و]নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|75|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

خُضْرٍ	رَفْرَفٍ	عَلَىٰ	مُتَّكِئِينَ
اسم مجرور[خ ض ر] সবুজ	اسم مجرور[ر ف ف] গালিচার	جرّ উপর	اسم منصوب [و ك ا VIII] হেলান দিয়ে বসা
55|76|তারা সবুজ মসনদে এবং উৎকৃষ্ট মূল্যবান			

﴾76﴿ حِسَانٍ	وَعَبْقَرِيٍّ
صفة مجرورة [ح س ن]সুন্দর	ح.عطف +اسم مجرور [ع ب ق]অমূল্য চাদরের

বিছানায় হেলান দিয়ে বসবে।

তُكَذِّبَانِ ﴿77﴾	رَبِّكُمَا	ءَالَآءِ	فَبِأَيِّ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]] অস্বীকার করবে উভয়ে তোমরা	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমাদের উভয়ের রবের	اسم مجرور [ا ل و] নিয়ামত সমূহকে	ح. استئنافية +جرّ +اسم مجرور অতঃপর কোন
55|77|অতএব, তোমরা উভয়ে তোমাদের পালনকর্তার কোন কোন অবদানকে অস্বীকার করবে?			

ذِى	رَبِّكَ	ٱسْمُ	تَبَـٰرَكَ
اسم مرفوع অধিকারী	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমাদের রবের	اسم مرفوع [س م و] নাম	اسم منصوب +ضمير [ت ب ر] বড়ই বরকতশালী
55|78|কত পূণ্যময় আপনার পালনকর্তার			

وَٱلْإِكْرَامِ ﴿78﴾	ٱلْجَلَـٰلِ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ك ى م] মহাসম্মানিত	معرفة اسم مجرور [ج ل ل] মহত্বপূর্ণ
নাম, যিনি মহিমাময় ও মহানুভব।	

||সূরা আর্-রহমান সমাপ্ত||

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ

৫৬। সূরা ওয়াকিয়া : মাক্কী

রুকু: ০৩ আয়াত:৯৬

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

ٱلْوَاقِعَةُ ﴿1﴾	وَقَعَتِ	إِذَا
معرفة اسم مرفوع [و ق ع] ঘটনাটি	فعل ماض [و ق ع]ঘটবে	ظ. زمان যখন
56|1|যখন কিয়ামতের ঘটনা ঘটবে,		

كَاذِبَةٌ ﴿2﴾	لِوَقْعَتِهَا	لَيْسَ
اسم مرفوع [ك ذ ب] অস্বীকারকারী	جرّ +اسم مجرور +ضمير [و ق ع]তার সংঘটনের জন্য	فعل ماض «كان» [ل ي س] না
56|2|যার বাস্তবতায় কোন সংশয় নেই।		

رَجًّا ﴿4﴾	ٱلْأَرْضُ	رُجَّتِ	إِذَا	رَّافِعَةٌ ﴿3﴾	خَافِضَةٌ
اسم منصوب [ر ج ج] কম্পনে	معرفة اسم مرفوع [ا ر ض] পৃথিবী	فعل ماض مجهول [ر ج ج] প্রকম্পিত করা হবে	ظ. زمان যখন	اسم مرفوع [ر ف ع] সমুন্নতকারী	اسم مرفوع [خ ف ض] অবনতকারী
56|3|এটা নীচু করে দেবে, সমুন্নত করে দেবে। 56|4|যখন প্রবলভাবে প্রকম্পিত হবে পৃথিবী।					

﴾6﴿ مُّنۢبَثًّا	هَبَآءً	فَكَانَتْ	﴾5﴿ بَسًّا	ٱلْجِبَالُ	وَبُسَّتِ
اسم منصوب [ن ب ث IV] বিক্ষিপ্ত	اسم منصوب [ه ب و] ধুলিকণা	ح. استئنافية +فعل ماض [ك و ن]অতঃপর হবে তা	اسم منصوب [ب س س] চূর্ণবিচূর্ণ	معرفة اسم مرفوع [ج ب ل]পর্ব্বত সমূহ	ح.عطف +فعل ماض مجهول [ب س س]বিচূর্ণ করা হবে
56|5|এবং পর্বতমালা ভেঙ্গে চুরমার হয়ে যাবে। 56|6|অতঃপর তা হয়ে যাবে উৎক্ষিপ্ত ধূলিকণা।					

مَآ	ٱلْمَيْمَنَةِ	فَأَصْحَٰبُ	﴾7﴿ ثَلَٰثَةً	أَزْوَٰجًا	وَكُنتُمْ
ح. استفهام কি	معرفة اسم مجرور [ي م ن]ডানদিকের	ح. استئنافية +اسم مرفوع [ص ح ب]অতঃপর মানুষ	اسم منصوب [ث ل ث] তিনটি	اسم منصوب [ز و ج] শ্রেনীতে	د+فعل ماض +ضمير [ك و ن]এবং হবে তোমরা
56|7|এবং তোমরা তিনভাবে বিভক্ত হয়ে পড়বে। 56|8|যারা ডান দিকে,					

﴾8﴿ ٱلْمَيْمَنَةِ	أَصْحَٰبُ
[ي م ن] معرفة اسم مجرورডানদিকের	[ص ح ب] اسم مرفوعমানুষেরা
কত ভাগ্যবান তারা।	

ٱلْمَشْـَٔمَةِ ﴿9﴾	أَصْحَٰبُ	مَآ	ٱلْمَشْـَٔمَةِ	وَأَصْحَٰبُ
معرفة اسم مجرور [ش ا م]বাম দিকের	اسم مرفوع [ص ح ب]মানুষেরা	ح. استفهام কি	معرفة اسم مجرور [ش ا م]বাম দিকের	ح.عطف +اسم مرفوع [ص ح ب]এবং মানুষেরা
56|9|এবং যারা বামদিকে, কত হতভাগা তারা।				

ٱلسَّٰبِقُونَ ﴿10﴾	وَٱلسَّٰبِقُونَ
معرفة اسم مرفوع [ش ب ق]অগ্রবর্তীই	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ش ب ق] অগ্রবর্তীগণ
56|10|অগ্রবর্তীগণ তো অগ্রবর্তীই।	

ٱلنَّعِيمِ ﴿12﴾	جَنَّٰتِ	فِى	ٱلْمُقَرَّبُونَ ﴿11﴾	أُو۟لَـٰٓئِكَ
معرفة اسم مجرور [ن ع م]সুখের	اسم مجرور [ج ن ن] জান্নাতের	جرّ মধ্যে	معرفة اسم مرفوع [ق ر ب]নৈকট্যপ্রাপ্ত	اسم اشارة তারাই
56|11|তারাই নৈকট্যশীল, 56|12|অবদানের উদ্যানসমূহে,				

ٱلْـَٔاخِرِينَ ﴿14﴾	مِّنَ	وَقَلِيلٌ	ٱلْأَوَّلِينَ ﴿13﴾	مِّنَ	ثُلَّةٌ
معرفة اسم مجرور [ا خ ر]পরবর্তীদের	جرّ হতে	ح.عطف +اسم مرفوع [ق ل ل] অল্পসংখ্যক	معرفة اسم مجرور [ا و ل] পূর্ববর্তীদের	جرّ হতে	اسم مرفوع [ث ل ل]বেশীসংখ্যক

56|13|তারা একদল পূর্ববর্তীদের মধ্য থেকে।

56|14|এবং অল্পসংখ্যক পরবর্তীদের মধ্যে থেকে।

مَّوْضُونَةٍ ﴿15﴾	سُرُرٍ	عَلَىٰ
[و ض ن] اسم مجرور **স্বর্ণখচিত**	[س ر ر] اسم مجرور **আসন সমূহের**	جرّ**উপর**

56|15|স্বর্ণ খচিত সিংহাসন।

مُتَقَٰبِلِينَ ﴿16﴾	عَلَيْهَا	مُّتَّكِـِٔينَ
اسم منصوب [ق ب ل VI] **পরস্পর মুখোমুখি**	جرّ+ضمير**তার উপর**	اسم منصوب [و ك ا IV] **হেলান দিয়ে আসন গ্রহনকারীরা**

56|16|তারা তাতে হেলান দিয়ে বসবে পরস্পর মুখোমুখি হয়ে।

مُّخَلَّدُونَ ﴿17﴾	وِلْدَٰنٌ	عَلَيْهِمْ	يَطُوفُ
اسم مرفوع [خ ل د II] **চিরন্তন**	اسم مرفوع [و ل د] **কিশোররা**	جرّ +ضمير **তাদের কাছে**	فعل مضارع [ط و ف] **ঘুরাফিরা করবে**

56|17|তাদের কাছে ঘোরাফেরা করবে চির কিশোরেরা।

مَّعِينٍ ﴿18﴾	مِّن	وَكَأْسٍ	وَأَبَارِيقَ	بِأَكْوَابٍ

اسم مجرور [ع ي ن] প্রবাহিত ঝর্ণা	جرّ হতে	ح.عطف +اسم مجرور [ك ا س] পেয়ালা	ح.عطف +اسم منصوب এবং হাতাওয়ালা জাগ	جرّ +اسم مجرور [ك و ب]পানপাত্র সহ
56|18|পানপাত্র কুঁজা ও খাঁটি সূরাপূর্ণ পেয়ালা হাতে নিয়ে,				

﴾19﴿ يُنزِفُونَ	وَلَا	عَنْهَا	يُصَدَّعُونَ	لَّا
فعل مضارع +ضمير [ن ز فIV] জ্ঞান হারাবে তারা	ح.عطف +ح.نفي এবং না	جرّ +ضمير তা থেকে	فعل مضارع +ضمير [ص د ع]II মাথা ঘুরাবে	ح.نفي না
56|19|যা পান করলে তাদের শিরঃপীড়া হবে না এবং বিকারগ্রস্ত ও হবে না।				

﴾20﴿ يَتَخَيَّرُونَ	مِّمَّا	وَفَٰكِهَةٍ
فعل مضارع +ضمير [خ ي رV] বেছে নিবে তারা	جرّ +اسم موصول তা হতে	ح.عطف +اسم مجرور [ف ك ه] ফলমূল
56|20|আর তাদের পছন্দমত ফল-মুল নিয়ে,		

	﴾22﴿ عِينٌ	وَحُورٌ	﴾21﴿ يَشْتَهُونَ	مِّمَّا	طَيْرٍ	وَلَحْمِ
	صفة مرفوعة [ع ي ن] সুন্দর চোখ	ح.عطف +اسم مرفوع [ح و ر]এবং হুররা	فعل مضارع +ضمير [ش ه وVIII] চাইবে তারা	جرّ +اسم موصول তা হতে	اسم مجرور [ط ي ر] পাখীর	ح.عطف +اسم مجرور [ل ح م]এবং গোশত
56|21|এবং রুচিমত পাখীর মাংস নিয়ে। **56|22|তথায় থাকবে আনতনয়না হুরগণ,**						

﴾23﴿ ٱلْمَكْنُونِ	ٱللُّؤْلُؤِ	كَأَمْثَٰلِ
معرفة صفة مجرورة [ك ن ن] লুকিয়ে রাখা	معرفة اسم مجرور [ل أ ل]মুক্তার	جرّ +اسم ه[م ث ل] যেমন দৃষ্টান্ত
56|23|আবরণে রক্ষিত মোতির ন্যায়,		

﴾24﴿ يَعْمَلُونَ	كَانُوا۟	بِمَا	جَزَآءًۢ
فعل مضارع +ضمير [ع م ل] সম্পাদন করে তারা	فعل ماض +ضمير [ك و ن]ছিল তারা	جرّ +اسم موصولতা যা	اسم منصوب [ج ز ي]পুরস্কার
56|24|তারা যা কিছু করত, তার পুরস্কারস্বরূপ।			

﴾25﴿ تَأْثِيمًا	وَلَا	لَغْوًا	فِيهَا	يَسْمَعُونَ	لَا
اسم منصوب [ا ث م]পাপের	ح.عطف +ح. نفيএবং না	اسم منصوب [ل غ و]বেহুদা কথা	جرّ +ضمير তার মধ্যে	فعل مضارع +ضمير [س م ع]শুনবে তারা	ح. نفي না
56|25|তারা তথায় অবান্তর ও কোন খারাপ কথা শুনবে না।					

﴾26﴿ سَلَٰمًا	سَلَٰمًا	قِيلًا	إِلَّا
اسم منصوب [س ل م] সালাম	اسم منصوب [س ل م] সালাম	اسم منصوب [ق و ل]কথা একটি	ح. حصر ছাড়া
56|26|কিন্তু শুনবে সালাম আর সালাম।			

﴾27﴿ ٱلْيَمِينِ	أَصْحَٰبُ	مَآ	ٱلْيَمِينِ	وَأَصْحَٰبُ
معرفة اسم مجرور [ي م ن] ডানদিকের	اسم مرفوع [ص ح [بমানুষেরা	ح. استفهام কি	امعرفة اسم مجرور [ي م ن] ডানদিকের	ح.عطف +اسم مرفوع [ص ح ب] এবং মানুষেরা

56|27|যারা ডান দিকে থাকবে, তারা কত ভাগ্যবান।

﴾28﴿ مَّخْضُودٍ	سِدْرٍ	فِى
اسم مجرور [خ ض د] সম্প্রসারিত	اسم مجرور [س د ر]কুলবৃক্ষ সমূহে	جرّমধ্যে

56|28|তারা থাকবে কাঁটাবিহীন বদরিকা বৃক্ষে।

﴾30﴿ مَّمْدُودٍ	وَظِلٍّ	﴾29﴿ مَّنضُودٍ	وَطَلْحٍ
اسم مجرور [م د د] সম্প্রসারিত	ح.عطف +اسم مجرور [ظ ل ل] ছায়ায়	اسم مجرور [ن ض د] থরে থরে সাজান	ح.عطف +اسم مجرور [ط ل ح]কলাগূলি

56|29|এবং কাঁদি কাঁদি কলায়,

56|30|এবং দীর্ঘ ছায়ায়।

﴾32﴿ كَثِيرَةٍ	وَفَٰكِهَةٍ	﴾31﴿ مَّسْكُوبٍ	وَمَآءٍ
اسم مجرور [ك ث [رপ্রচুর	ح.عطف +اسم مجرور [ف ك ه]ফলমূল	اسم ج[س ك ب] প্রবাহমান	ح.عطف +اسم مجرور [م و [ءএবং পানির

56|31|এবং প্রবাহিত পানিতে,

56|32|ও প্রচুর ফল-মূলে,

مَّمْنُوعَةٍ ﴿33﴾	وَلَا	مَقْطُوعَةٍ	لَّا
اسم مجرور [م ن ع] নিষিদ্ধ	ح. عطف +ح. نفي এবং না	اسم مجرور [ب ز ع] শেষ	ح. نفي না
56|33|যা শেষ হবার নয় এবং নিষিদ্ধ ও নয়,			

مَّرْفُوعَةٍ ﴿34﴾	وَفُرُشٍ
اسم مجرور [ر ف ع]সুউচ্চ	ح.عطف +اسم مجرور [ق ر ش]শয্যা সমূহে
56|34|আর থাকবে সমুন্নত শয্যায়।	

أَبْكَارًا ﴿36﴾	فَجَعَلْنَٰهُنَّ	إِنشَآءً ﴿35﴾	أَنشَأْنَٰهُنَّ	إِنَّآ
اسم منصوب [ب ك ر] কুমারী	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير +ضمير [ج ع ل] অতঃপর বানাব আমরা তাদের	اسم منصوب [ن ش ا] সৃষ্টি	فعل ماض +ضمير +ضمير [ن ش ا IV] সৃষ্টি করব আমরা তাদের	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই আমরা
56|35|আমি জান্নাতী রমণীগণকে বিশেষরূপে সৃষ্টি করেছি। 56|36|অতঃপর তাদেরকে করেছি চিরকুমারী।				

ٱلْيَمِينِ ﴿38﴾	لِّأَصْحَٰبِ	أَتْرَابًا ﴿37﴾	عُرُبًا
معرفة اسم مجرور [ي م ن] ডানদিকের	جرّ +اسم مجرور [ص ح ب] মানুষের জন্য	اسم منصوب [ت ر ب] সমবয়স্কা	اسم منصوب [ع ر ب] স্বামী আসক্তা
56|37|কামিনী, সমবয়স্কা। 56|38|ডান দিকের লোকদের জন্যে।			

﴾39﴿ ٱلْأَوَّلِينَ	مِّنَ	ثُلَّةٌ
পূর্ববর্তীদের معرفة اسم مجرور [ا و ل]	হতে جرّ	বহুসংখ্যক اسم مرفوع [ث ل ث]

56|39|তাদের একদল হবে পূর্ববর্তীদের মধ্য থেকে।

﴾40﴿ ٱلْـَٔاخِرِينَ	مِّنَ	وَثُلَّةٌ
معرفة اسم مجرور [ا خ ر] পরবর্তীদের	جرّ হতে	ح.عطف +اسم مرفوع [ث ل ث] বহুসংখ্যক

56|40|এবং একদল পরবর্তীদের মধ্য থেকে।

﴾41﴿ ٱلشِّمَالِ	أَصْحَٰبُ	مَآ	ٱلشِّمَالِ	وَأَصْحَٰبُ
معرفة اسم مجرور [ش م ل] বামদিকের	اسم مرفوع [ص ح ب] মানুষদের	ح. استفهام কি	معرفة اسم مجرور [ش م ل] বামদিকের	ح.عطف +اسم مرفوع [ص ح ب] এবং মানুষেরা

56|41|বামপার্শ্বস্থ লোক, কত না হতভাগা তারা।

﴾42﴿ وَحَمِيمٍ	سَمُومٍ	فِى
ح.عطف +اسم مجرور [ح م م] ও উত্তপ্ত পানির	লু হাওয়ার اسم د[س م م]	মধ্যে جرّ

56|42|তারা থাকবে প্রখর বাষ্পে এবং উত্তপ্ত পানিতে,

﴾43﴿ يَحْمُومٍ	مِّن	وَظِلٍّ
[ح م م] اسم مجرور কালধুয়ার	جرّ হতে	[ظ ل ل] اسم مجرور + ح.عطف এবং ছায়ায়

56|43|এবং ধুম্রকুঞ্জের ছায়ায়।

﴾44﴿ كَرِيمٍ	وَلَا	بَارِدٍ	لَّا
[ك ر م] اسم مجرور আনন্দদায়ক	ح.عطف +ح. نفي এবং না	[ب ر د] اسم مجرور ঠান্ডা	ح. نفي না

56|44|যা শীতল নয় এবং আরামদায়কও নয়।

﴾45﴿ مُتْرَفِينَ	ذَٰلِكَ	قَبْلَ	كَانُوا۟	إِنَّهُمْ
[ت ر ف IV] اسم منصوب স্বাচ্ছন্দপূর্ণ	اسم اشارة এর	[ق ب ل] اسم منصوب পূর্বে	[ك و ن] فعل ماض +ضمير ছিল তারা	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই তারা

56|45|তারা ইতিপূর্বে স্বাচ্ছন্দ্যশীল ছিল।

﴾46﴿ ٱلْعَظِيمِ	ٱلْحِنثِ	عَلَى	يُصِرُّونَ	وَكَانُوا۟
معرفة صفة مجرورة [ع ظ م] ঘোরতর	معرفة اسم مجرور [ح ن ث] গুনাহর	جرّ উপর	فعل مضارع +ضمير [ص ر ر IV] অবিরত লেগে ছিল তারা	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ك ة ن] এবং ছিল তারা

56|46|তারা সদাসর্বদা ঘোরতর পাপকর্মে ডুবে থাকত।

تُرَابًا	وَكُنَّا	مِتْنَا	أَئِذَا	يَقُولُونَ	وَكَانُوا۟
اسم منصوب [ت ر ب] মাটি	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ك و ن]হব আমরা	فعل ماض مجهول+ضمير [م و [তমরে যাব আমরা	ح. استفهام +ظ. زمان যখন কি	فعل مضارع]ه+বলে তারা	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ك و ن]এবং ছিল তারা
56|47|তারা বলতঃ আমরা যখন মরে অস্থি ও মৃত্তিকায়					

﴾47﴿ لَمَبْعُوثُونَ	أَءِنَّا	وَعِظَـٰمًا
[ب ع ث] ل-ص+اسم مرفوع অবশ্যই পুনরুত্থিত হব	ح.কি استفهام +ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই আমরা	ح.عطف +اسم منصوب [ع ظ م]ও অস্থি
পরিণত হয়ে যাব, তখনও কি পুনরুত্থিত হব		

﴾48﴿ ٱلْأَوَّلُونَ	أَوَءَابَآؤُنَا
[ا و ل] معرفة اسم مرفوعপূর্ববর্তীকালের	ح.কি استفهام +ح. زائدة +اسم مرفوع +ضمير অতবা আমাদের পিতাদেরও
56|48|এবং আমাদের পূর্বপুরুষগণও!	

﴾49﴿ وَٱلْـَٔاخِرِينَ	ٱلْأَوَّلِينَ	إِنَّ	قُلْ
ح.عطف +معرفة اسم منصوب [ا خ ر]পরবর্তীদের	معرفة اسم منصوب [ا و ل] পূর্ববর্তীদের	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	فعل أمر [ق و ل]বল
56|49|বলুনঃ পূর্ববর্তী ও পরবর্তীগণ,			

﴾50﴿ مَّعْلُومٍ	يَوْمٍ	مِيقَٰتِ	إِلَىٰ	لَمَجْمُوعُونَ
اسم مجرور [ع ل م]নির্ধারিত	اسم مجرور [ي و م]দিনে	اسم مجرور [و ق ت]সময়ে	جرّপ্রতি	ل-تاكيد +اسم مرفوع [ك م ع] অবশ্যই একত্রিত করা হবে
56|50|সবাই একত্রিত হবে এক নির্দিষ্ট দিনের নির্দিষ্ট সময়ে।				

﴾51﴿ ٱلْمُكَذِّبُونَ	ٱلضَّآلُّونَ	أَيُّهَا	إِنَّكُمْ	ثُمَّ
معرفة اسم مرفوع [ك ذ ب]অস্বীকার কারীরা	معرفة اسم مرفوع [ض ل ل] পথভ্রষ্টরা	اسم مرفوع ওহে	ح. مشبه بفعل ضمير+নিশ্চয়ই তোমরা	ح.عطف অতঃপর
56|51|অতঃপর হে পথভ্রষ্ট, মিথ্যারোপকারীগণ।				

﴾52﴿ زَقُّومٍ	مِّن	شَجَرٍ	مِن	لَءَاكِلُونَ
اسم علم مجرور [ز ق م]যাক্কুমের	جرّ হতে	اسم مجرور [ش ج ر] বৃক্ষ	جرّ হতে	ل-تاكيد +اسم مرفوع [ا ك ل] অবশ্যই আহার করবে
56|52|তোমরা অবশ্যই ভক্ষণ করবে যাক্কুম বৃক্ষ থেকে				

﴾53﴿ ٱلْبُطُونَ	مِنْهَا	فَمَالِـُٔونَ
معرفة اسم منصوب [ب ط ن] পেটগুলি	جرّ +ضمير তা থেকে	ح. استئنافية +اسم مرفوع [م ل ا] পূর্ণ করবে
56|53|অতঃপর তা দ্বারা উদর পূর্ণ করবে,		

﴾54﴿ ٱلْحَمِيمِ	مِنَ	عَلَيْهِ	فَشَٰرِبُونَ
معرفة اسم مجرور [ح م م] ফুটন্ত পানি	جرّ হতে	جرّ +ضمير তার উপর	ح. عطف +اسم مرفوع [ش ر ب] এবং পানকারী
56|54|অতঃপর তার উপর পান করবে উত্তপ্ত পানি।			

﴾55﴿ ٱلْهِيمِ	شُرْبَ	فَشَٰرِبُونَ
معرفة اسم مجرور [ه ي م] তৃষ্ণার্ত উঠের	اسم منصوب [ش ر ب] পান	ح. عطف +اسم مرفوع [ش ر ب] এবং পানকারী
56|55|পান করবে পিপাসিত উটের ন্যায়।		

﴾56﴿ ٱلدِّينِ	يَوْمَ	نُزُلُهُمْ	هَٰذَا
معرفة اسم مجرور [د ي ن] প্রতিফল দানের	اسم منصوب [ي و م] দিনে	اسم مرفوع +ضمير [ن ز ل] তাদের আপ্যায়ন	اسم اشارة এটার
56|56|কেয়ামতের দিন এটাই হবে তাদের আপ্যায়ন।			

﴾57﴿ تُصَدِّقُونَ	فَلَوْلَا	خَلَقْنَٰكُمْ	نَحْنُ
فعل مضارع +ضمير [ص د ق] II سত্য অস্বীকার কর তোমরা	ح. استئنافية +ح. تحضيض অতঃপর কেন না	فعل ماض +ضمير +ه[خ ل ق] সৃষ্টি করেছি তোমরাদের	ضمير منفصل আমরা
56|57|আমি সৃষ্টি করেছি তোমাদেরকে। অতঃপর কেন তোমরা তা সত্য বলে বিশ্বাস কর না।			

﴾58﴿ تُمْنُونَ	مَّا	أَفَرَءَيْتُم
IV فعل مضارع +ضمير [م ن ي] বীর্যপাত কর তোমরা	اسم موصول যা	ح. استفهام +ح. زائدة +فعل ماض +ضمير [ر ا ي] দেখেছ কি তোমরা

56|58|তোমরা কি ভেবে দেখেছ, তোমাদের বীর্যপাত সম্পর্কে।

﴾59﴿ ٱلْخَٰلِقُونَ	نَحْنُ	أَمْ	تَخْلُقُونَهُۥٓ	ءَأَنتُمْ
معرفة اسم مرفوع [خ ل ق] সৃষ্টিকারী	ضمير منفصل আমরা	ح.عطف অথবা	فعل مضارع +ضمير +ضمير [خ ل ق] সৃষ্টি কর তা তোমরা	ح. استفهام +ضمير منفصلকি তোমরা
56|59|তোমরা তাকে সৃষ্টি কর, না আমি সৃষ্টি করি?				

وَمَا	ٱلْمَوْتَ	بَيْنَكُمُ	قَدَّرْنَا	نَحْنُ
ح.عطف +ح. نفيএবং না	معرفة اسم منصوب [م و ت]মৃত্যু	ظ. مكان منصوب +ضمير [ب ي ن]তোমাদের মাঝে	فعل ماض +ضمير [ق د ر] নির্ধারিত করেছি	ضمير منفصل আমরা
56|60|আমি তোমাদের মৃত্যুকাল নির্ধারিত করেছি				

﴾60﴿ بِمَسْبُوقِينَ	نَحْنُ
جرّ +اسم مجرور [س ب ق]অক্ষম হব	ضمير منفصلআমরা
এবং আমি অক্ষম নই।	

وَنُنشِئَكُمْ	أَمْثَٰلَكُمْ	نُّبَدِّلَ	أَن	عَلَىٰٓ
ح.عطف +فعل مضارع منصوب +ضمير [ن ش ا]	اسم منصوب +ضمير [م ث ل]তোমাদের আকৃতি	فعل مضارع منصوب [ب د ل]পরিবর্তন করব আমরা	ح. مصدرية যে	جرّ উপর

সৃষ্টি করব আমরা তোমাদের				
56|61|এ ব্যাপারে যে, তোমাদের পরিবর্তে তোমাদের মত লোককে নিয়ে আসি এবং তোমাদেরকে এমন করে দেই, যা তোমরা জান না।				

﴾61﴿ تَعْلَمُونَ	لَا	مَا	فِى
فعل مضارع +ضمير [ع ل م] জান তোমরা	ح. نفي না	اسم موصول যা	جرّ মধ্যে
56|62|তোমরা অবগত হয়েছ প্রথম সৃষ্টি সম্পর্কে, তবে তোমরা অনুধাবন কর না কেন?			

ٱلْأُولَىٰ	ٱلنَّشْأَةَ	عَلِمْتُمُ	وَلَقَدْ
معرفة اسم منصوب [ا و ل] প্রথম বার	معرفة اسم منصوب [ن ش ا] সৃষ্টিকে	فعل ماض +ضمير [ع ل م] জেনেছ তোমরা	ح.عطف +ل- تاكيد +ح. تحقيق এবং নিশ্চয়ই
56|63|তোমরা যে বীজ বপন কর,			

﴾62﴿ تَذَكَّرُونَ	فَلَوْلَا
فعل ع+ضمير [ذ ك ر V] শিক্ষা গ্রহন কর তোমরা	ح. استئنافية +ح. تحضيض অতঃপর কেন না
সে সম্পর্কে ভেবে দেখেছ কি?	

﴾63﴿ تَحْرُثُونَ	مَّا	أَفَرَءَيْتُم
فعل مضارع +ضمير [ح ر ث] বীজ বপন কর তোমরা	اسم موصول যা	ح. استفهام +ح. زائدة +فعل ماض +ضمير [ر ا ي] এবং দেখেছ কি তোমরা

56|63|তোমরা যে বীজ বপন কর, সে সম্পর্কে ভেবে দেখেছ কি?

﴾64﴿ ٱلزَّٰرِعُونَ	نَحْنُ	أَمْ	تَزْرَعُونَهُۥٓ	ءَأَنتُمْ
معرفة اسم مرفوع [ز ر ع]উৎপাদনকারী	ضمير منفصل আমরা	ح.عطف অথবা	فعل مضارع +ضمير +ضمير [ز ر ع] উৎপাদন কর তোমরা তা	ح. استفهام +ضمير منفصل তোমরা কি
56|64|তোমরা তাকে উৎপন্ন কর, না আমি উৎপন্নকারী ?				

حُطَٰمًا	لَجَعَلْنَٰهُ	نَشَآءُ	لَوْ
اسم منصوب [ح ط م]খড়কুঠা	ل-تاكيد +فعل ماض +ضمير +ضمير [ج ع ل]অবশ্যই বানাতে পারি আমরা	فعل مضارع [ش ي ا]চাই আমরা	ح. شرط যদি
56|65|আমি ইচ্ছা করলে তাকে খড়কুটা করে দিতে পারি,			

﴾65﴿ تَفَكَّهُونَ	فَظَلْتُمْ
فعل مضارع +ضمير [ف ك ه ll] বিস্ময় বোধ করবে তোমরা	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ظ ل ل] অতঃপর থাকবে তোমরা
অতঃপর হয়ে যাবে তোমরা বিস্ময়াবিষ্ট।	

﴾66﴿ لَمُغْرَمُونَ	إِنَّا

ح. مشبه بفعل +ضميرনিশ্চয়ই আমরা	IV] ل-تاكيد +اسم مرفوع [غ ر م অবশ্যই দন্ডগ্রস্থ হয়েছি

56|66|বলবেঃ আমরা তো ঋণের চাপে পড়ে গেলাম;

بَلْ	نَحْنُ	مَحْرُومُونَ ﴿67﴾
ح. إضرابবরং	ضمير منفصلআমরা	اسم مرفوع [ح ر م]হৃত সর্বস্ব

56|67|বরং আমরা হূত সর্বস্ব হয়ে পড়লাম।

أَفَرَءَيْتُمُ	ٱلْمَآءَ	ٱلَّذِى	تَشْرَبُونَ ﴿68﴾
ح. استفهام +ح. زائدة +فعل ماض +ضمير [ر ا ي]অতঃপর দেখেছ কি তোমরা	معرفة اسم منصوب [م و ه] পানি	اسم موصول যা	فعل مضارع +ضمير [ش ر ب]পান কর তোমরা

56|68|তোমরা যে পানি পান কর, সে সম্পর্কে ভেবে দেখেছ কি?

ءَأَنتُمْ	أَنزَلْتُمُوهُ	مِنَ	ٱلْمُزْنِ
ح. استفهام +ضمير منفصلতোমরা কি	IV]فعل ماض +ضمير +ضمير [ن ز ل নামিয়ে আন তোমরা তা	جرّ হতে	معرفة اسم مجرور [م ز ن]মেঘ

56|69|তোমরা তা মেঘ থেকে নামিয়ে আন,

أَمْ	نَحْنُ	ٱلْمُنزِلُونَ ﴿69﴾

IV] معرفة اسم مرفوع [ن ز ل বর্ষণকারী	ضمير منفصل আমরা	ح.عطف অথবা
না আমি বর্ষন করি?		

أُجَاجًا	جَعَلْنَـٰهُ	نَشَآءُ	لَوْ
اسم منصوب [ا ج ج]লবনাক্ত	فعل ماض +ضمير +ضمير [ج ع ل]করতে পারি আমরা তা	فعل مضارع [ي ش ا]চাই আমরা	ح. شرط যদি
56|70|আমি ইচ্ছা করলে তাকে লোনা করে দিতে পারি,			

تَشْكُرُونَ ﴿70﴾	فَلَوْلَا
فعل مضارع +ضمير [ش ك ر]শোকর কর তোমরা	ح. استئنافية +ح. تحضيض অতঃপর কেন না
অতঃপর তোমরা কেন কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর না?	

تُورُونَ ﴿71﴾	ٱلَّتِى	ٱلنَّارَ	أَفَرَءَيْتُمُ
فعل مضارع +ضمير [و ر ي]জ্বালাও তোমরা	اسم موصول যা	معرفة اسم منصوب [ن و ر] আগুন	ح. استفهام +ح. زائدة +فعل ماض +ضمير [ر ا ي]অতঃপর কি তোমরা দেখেছ
56|71|তোমরা যে অগ্নি প্রজ্জ্বলিত কর, সে সম্পর্কে ভেবে দেখেছ কি?			

أَمْ	شَجَرَتَهَآ	أَنشَأْتُمْ	ءَأَنتُمْ

ح. استفهام +ضمير منفصلকি তোমরা	[IVفعل ماض +ضمير [ن ش ا সৃষ্টি করেছ তোমরা	اسم منصوب +ضمير [ش ج ر]তার বৃক্ষ	ح.عطف অথবা

56|72|তোমরা কি এর বৃক্ষ সৃষ্টি করেছ,

نَحْنُ	ٱلْمُنشِـُٔونَ ﴿72﴾
ضمير منفصلআমরা	معرفة اسم مرفوع [ن ش ا]সৃষ্টিকারী

না আমি সৃষ্টি করেছি

نَحْنُ	جَعَلْنَٰهَا	تَذْكِرَةً	وَمَتَٰعًا	لِّلْمُقْوِينَ ﴿73﴾
ضمير منفصل আমরা	فعل ماض +ضمير [ج ع ل] বানিয়েছি আমরা তা	اسم منصوب [ذ ك ر]স্মরণের মাধ্যমে	ح.عطف +اسم منصوب [م ت ع] জীবনোপকরণ	جرّ +معرفة اسم مجرور [ق و ي IV] মরুচারী মুসাফীরদের জন্য

56|73|আমি সেই বৃক্ষকে করেছি স্মরণিকা এবং মরুবাসীদের জন্য সামগ্রী।

فَسَبِّحْ	بِٱسْمِ	رَبِّكَ	ٱلْعَظِيمِ ﴿74﴾
ح. استئنافية +فعل أمر [س ب ح]অতএব তসবিহ কর	جرّ +اسم مجرور [س م و]নামের	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তোমার রবের	معرفة صفة مجرورة [ع ظ م]মহান

56|74|অতএব, আপনি আপনার মহান পালনকর্তার নামে পবিত্রতা ঘোষণা করুন।

﴾75﴿ ٱلنُّجُومِ	بِمَوَٰقِعِ	أُقْسِمُ	فَلَآ
معرفة اسم مجرور [ن ج م]তারকাগুলির	جرّ +اسم مجرور [و ق ع]অবস্থানসমূহের	فعل مضارع[ق س م IV] শপথ করছি আমি	ح. استئنافية +ح. نفيঅতঃপর না
56|75|অতএব, আমি তারকারাজির অস্তাচলের শপথ করছি,			

﴾76﴿ عَظِيمٌ	تَعْلَمُونَ	لَّوْ	لَقَسَمٌ	وَإِنَّهُۥ
اسم مرفوع [ع ظ م]বিরাট	فعل مضارع +ضمير [ع ل م]জান তোমরা	ح. شرط যদি	ل-تاكيد +اسم مرفوع [ق س م]অবশ্যই শপথ	ح.عطف +ح. مشبه بفعل +ضميرএবং নিশ্চয়ই তা
56|76|নিশ্চয় এটা এক মহা শপথ-যদি তোমরা জানতে।				

﴾77﴿ كَرِيمٌ	لَقُرْءَانٌ	إِنَّهُۥ
صفة مرفوعة [ك ر م] মহাসম্মানিত	ل-تاكيد +اسم مرفوع [ق ر ا] অবশ্যই কুরআন	ح. مشبه بفعل +ضمير নিশ্চয়ই তা
56|77|নিশ্চয় এটা সম্মানিত কোরআন,		

﴾78﴿ مَّكْنُونٍ	كِتَٰبٍ	فِى
اسم مجرور [ك ن ن] সুরক্ষিত	اسم مجرور [ك ت ب] কিতাবের	جرّমধ্যে
56|78|যা আছে এক গোপন কিতাবে,		

﴾79﴿ ٱلْمُطَهَّرُونَ	إِلَّا	يَمَسُّهُۥٓ	لَّا

[ا‌ا]معرفة اسم مرفوع [ط ه ر পবিত্ররা	ح. حصر ছাড়া	[م س س] ضمير +فعل مضارعস্পর্শ করতে পারে তা	ح. نفي না

56|79|যারা পাক-পবিত্র, তারা ব্যতীত অন্য কেউ একে স্পর্শ করবে না।

ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿80﴾	رَّبِّ	مِّن	تَنزِيلٌ
معرفة اسم مجرور [ع ل م] বিশ্বজাহানের	اسم مجرور [ر ب ب] রবের	جرّ হতে	اسم مرفوع [ن ز ل] নাযিল কৃত

56|80|এটা বিশ্ব-পালনকর্তার পক্ষ থেকে অবতীর্ণ।

مُّدْهِنُونَ ﴿81﴾	أَنتُم	ٱلْحَدِيثِ	أَفَبِهَٰذَا
اسم مرفوع [د ه ن] তুচ্ছজ্ঞান করবে	ضمير منفصل তোমরা	معرفة اسم مجرور [ح د ث]বাণী	ح. استفهام +ح. زائدة +جرّ اسم اشراة+অতঃপর কি এই

56|81|তবুও কি তোমরা এই বাণীর প্রতি শৈথিল্য পদর্শন করবে?

تُكَذِّبُونَ ﴿82﴾	أَنَّكُمْ	رِزْقَكُمْ	وَتَجْعَلُونَ
فعل مضارع +ضمير [ك ذ ب]ا‌ا‌ا মিথ্যা মনে করছ	ح. مشبه بفعل ضمير+যে তোমরা	اسم منصوب +ضمير [ر ز ق4তোমাদের অংশে	ح.عطف +فعل مضارع [ج ع ل] ضمير+নির্দিষ্ট করেছ তোমরা

56|82|এবং একে মিথ্যা বলাকেই তোমরা তোমাদের ভূমিকায় পরিণত করবে?

ٱلْحُلْقُومَ ﴿83﴾	بَلَغَتِ	إِذَا	فَلَوْلَآ

[ح ق م] معرفة اسم منصوب কন্ঠনালীতে	فعل ماض [ب ل غ] পৌঁছবে	ظ. زمان যখন	ح. استئنافية +ح. تحضيض অতঃপর কেন না
56|83|অতঃপর যখন কারও প্রাণ কন্ঠাগত হয়।			

تَنظُرُونَ ﴿84﴾	حِينَئِذٍ	وَأَنتُمْ
فعل مضارع +ضمير [ن ظ ر] তাকিয়ে থাকবে তোমরা	ظ. زمان সে সময়	ح.عطف +ضمير منفصل এবং তোমরা
56|84|এবং তোমরা তাকিয়ে থাক,		

مِنكُمْ	إِلَيْهِ	أَقْرَبُ	وَنَحْنُ
جرّ +ضمير তোমাদের চেয়ে	جرّ +ضمير তার	اسم تفضيل مرفوع [ق ر ب] অধিকতর নিকটে	ح.عطف +ضمير منفصل এবং আমরা
56|85|তখন আমি তোমাদের অপেক্ষা তার অধিক নিকটে থাকি;			

تُبْصِرُونَ ﴿85﴾	لَّا	وَلَكِن
فعل مضارع +ضمير [ب ص ر] দেখতে পাও তোমরা	ح. نفي না	ح.عطف +ح. استدراك কিন্তু
কিন্তু তোমরা দেখ না।		

﴾86﴿ مَدِينِينَ	غَيْرَ	كُنتُمْ	إِن	فَلَوْلَآ
اسم مجرور [د ي]অধিনস্ত	اسم منصوب [غ ي ر]নও	فعل ماض +ضمير [ك و]হয়ে থাক তোমরা	ح. شرط যদি	ح. استئنافية +ح. تحضيضঅতঃপর কেন না
56|86|যদি তোমাদের হিসাব-কিতাব না হওয়াই ঠিক হয়,				

﴾87﴿ صَٰدِقِينَ	كُنتُمْ	إِن	تَرْجِعُونَهَآ
اسم منصوب [ص د ق]সত্যবাদী	فعل ماض +ضمير [ك و ن]হও তোমরা	ح. شرط যদি	فعل مضارع +ضمير +ضمير [ر ج ع]ফিরাও তোমরা তা
56|87|তবে তোমরা এই আত্মাকে ফিরাও না কেন, যদি তোমরা সত্যবাদী হও ?			

﴾88﴿ ٱلْمُقَرَّبِينَ	مِنَ	كَانَ	إِن	فَأَمَّآ
[المعرفة اسم مجرور [ق ر ب নৈকট্যপ্রাপ্তদের	جرّ হতে	فعل ماض [ك و ن]হয় সে	ح. شرط যদি	ح. استئنافية +ح. شرط شرطঅতঃপর যদি
56|88|যদি সে নৈকট্যশীলদের একজন হয়;				

﴾89﴿ نَعِيمٍ	وَجَنَّتُ	وَرَيْحَانٌ	فَرَوْحٌ
اسم مجرور [ن ع م] নিয়ামতপূর্ণ	ح.عطف +اسم مرفوع [ج ن ن] জান্নাত	ح.عطف +اسم مرفوع [ر و ح]উত্তম রিযিক	ح. استئنافية +اسم مرفوع [ر و ح]অতঃপর শান্তি
56|89|তবে তার জন্যে আছে সুখ, উত্তম রিযিক এবং নেয়ামতে ভরা উদ্যান।			

مِنْ	كَانَ	إِن	وَأَمَّآ
جرّহতে	[ك و ن] فعل ماضহয় সে	ح. شرطযদি	ح.عطف +ح. شرطএবং যদি

56|90|আর যদি সে ডান

﴾90﴿ ٱلْيَمِينِ	أَصْحَٰبِ
معرفة اسم مجرور [ي م ن]ডানদিকের	اسم مجرور [ص ح ب]মানুষদের

পার্শ্বস্থদের একজন হয়,

﴾91﴿ ٱلْيَمِينِ	أَصْحَٰبِ	مِنْ	لَّكَ	فَسَلَٰمٌ
معرفة اسم مجرور [ي م ن] ডানদিকের	ص ح اسم مجرور] [بমানুষদের	جرّ হতে	جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	ح. استئنافية +اسم مرفوع [س ل م] অতঃপর সালাম

56|91|তবে তাকে বলা হবেঃ তোমার জন্যে ডানপার্শ্বসস্থদের পক্ষ থেকে সালাম।

﴾٩٢﴿ ٱلضَّآلِّينَ	ٱلْمُكَذِّبِينَ	مِنَ	كَانَ	إِن	وَأَمَّآ
معرفة صفة مجرورة [ض ل ل] পথভ্রষ্টদের	معرفة اسم مجرور [ك ذ ب II] মিথ্যাবাদীদের	جرّ হতে	فعل ماض [ك و ن] হয় সে	ح. شرط যদি	ج+ح. شرطএবং যদি

56|92|আর যদি সে পথভ্রষ্ট মিথ্যারোপকারীদের একজন হয়,

فَنُزُلٌ	مِّنْ	حَمِيمٍ ﴿93﴾
ح.استئنافية +اسم مرفوع [ن ز ل] অতঃপর আপ্যায়ণ	جرّ হতে	اسم مجرور [ح م م] উত্তপ্ত পানির

56|93|তবে তার আপ্যায়ন হবে উত্তপ্ত পানি দ্বারা।

وَتَصْلِيَةُ	جَحِيمٍ ﴿94﴾
ح.عطف +اسم مرفوع [ص ل ي] এবং দহন	اسم مجرور [ج ح م] জাহান্নামের

56|94|এবং সে নিক্ষিপ্ত হবে অগ্নিতে।

إِنَّ	هَٰذَا	لَهُوَ	حَقُّ	ٱلْيَقِينِ ﴿95﴾
ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	اسم اشارة এটা	ل-تاكيد +ضمير منفصل অবশ্যই তা	اسم مرفوع [ح ق ق] সত্য	معرفة صفة مجرورة [ي ق ن] ধ্রুব

56|95|এটা ধ্রুব সত্য।

فَسَبِّحْ	بِٱسْمِ	رَبِّكَ	ٱلْعَظِيمِ ﴿96﴾
ح. استئنافية +فعل أمر [س ب ح] অতএব তসবিহ কর	جرّ +اسم مجرور [س م و] নামের	اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমার রবের	معرفة صفة مجرورة [ع ظ م] মহান

56|96|অতএব, আপনি আপনার মহান পালনকর্তার নামে পবিত্রতা ঘোষণা করুন।

||সূরা আল – ওয়াকি’আ সমাপ্ত ||

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ

৫৭। সূরা আল হাদীদ : মাদানী

রুকু: ০৪ আয়াত:২৯

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلْأَرْضِ ۚ	ٱلسَّمَٰوَٰتِ	فِى	مَا	لِلَّهِ	سَبَّحَ
ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ا ر ض]পৃথিবীর	معرفة اسم مجرور [س م و] আকাশ মন্ডলীর	جرّ মধ্যে	اسم موصول যা	جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	فعل ماض [س ب ح II] মহিমা ঘোষণা করছে
57|1|নভোমন্ডল ও ভূমন্ডলে যা কিছু আছে, সবাই					

ٱلْحَكِيمُ ﴿1﴾	ٱلْعَزِيزُ	وَهُوَ
معرفة صفة مرفوعة [ح ك م] প্রজ্ঞাময়	معرفة اسم مرفوع [ع ز ز] পরাক্রমশালী	ح.عطف +ضمير منفصل এবং তিনি
আল্লাহর পবিত্রতা ঘোষণা করে। তিনি শক্তিধর; প্রজ্ঞাময়।		

وَيُمِيتُ ۖ	يُحْىِۦ	وَٱلْأَرْضِ ۖ	ٱلسَّمَٰوَٰتِ	مُلْكُ	لَهُۥ
ح.عطف +فعل مضارع [م و ت IV] মৃত্যু দেন তিনি	فعل مضارع [ح ي ي IV] জীবন দেন তিনি	ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ا ر ض]পৃথিবীর	معرفة اسم مجرور [س م و]আকাশ মন্ডলীর	اسم مرفوع [م ل ك] রাজত্ব	جرّ +ضمير তাঁরই জন্য
57|2|নভোমন্ডল ও ভূমন্ডলের রাজত্ব তাঁরই। তিনি জীবন দান করেন ও মৃত্যু					

قَدِيرٌ ﴿2﴾	شَىْءٍ	كُلِّ	عَلَىٰ	وَهُوَ

[ق د ر] اسم مرفوع ক্ষমতাবান	اسم مجرور [ش ي ا] কিছুর	اسم مجرور [ك ل ل] সব	جرّ উপর	ح.عطف +ضمير منفصلএবং তিনি
ঘটান। তিনি সবকিছু করতে সক্ষম।				

وَٱلْبَاطِنُ	وَٱلظَّٰهِرُ	وَٱلْءَاخِرُ	ٱلْأَوَّلُ	هُوَ
ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ب ط ن]গুপ্ত	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ظ ه ر] প্রকাশ্য	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ا خ ر]শেষ	معرفة اسم مرفوع [ا و ل] প্রথম	ضمير منفصل তিনিই
57|3|তিনিই প্রথম, তিনিই সর্বশেষ, তিনিই প্রকাশমান ও অপ্রকাশমান				

عَلِيمٌ ﴿3﴾	شَيْءٍ	بِكُلِّ	وَهُوَ
صفة مرفوعة [ع ل م] খুব অবহিত	اسم مجرور [ش ي ا]কিছুর	جرّ +اسم مجرور [ك ل ل]সব	ح.عطف +ضمير منفصل এবং তিনিই
এবং তিনি সব বিষয়ে সম্যক পরিজ্ঞাত।			

فِى	وَٱلْأَرْضَ	ٱلسَّمَٰوَٰتِ	خَلَقَ	ٱلَّذِى	هُوَ
جرّ মধ্যে	ح.عطف +معرفة اسم منصوب [ا ر ض]পৃথিবী	معرفة اسم مجرور [س م و]আকাশ মন্ডলী	فعل ماض [خ ل ق]সৃষ্টি করেছেন	اسم موصول যিনি	ضمير منفصل তিনিই
57|4|তিনি নভোমন্ডল ও ভূ-মন্ডল সৃষ্টি করেছেন					

ٱلْعَرْشِ	عَلَى	ٱسْتَوَىٰ	ثُمَّ	أَيَّامٍ	سِتَّةِ

معرفة اسم مجرور [ع ر ش] আরশের	جرّ উপর	فعل ماض [س و يVIII] সমাসীন হন	ح.عطف অতঃপর	اسم مجرور [ي و م] দিনের	اسم مجرور [س ت ت] ছয়র
ছয়দিনে, অতঃপর আরশের উপর সমাসীন হয়েছেন।					

يَخْرُجُ	وَمَا	ٱلْأَرْضِ	فِي	يَلِجُ	مَا	يَعْلَمُ
فعل مضارع [خ ر ج] বের হয়	ح.عطف +اسم موصول এবং যা	اسم مجرور [ا ر ض] মাটির	جرّ মধ্যে	فعل مضارع [و ل ج] প্রবেশ করে	اسم موصول যা	فعل مضارع [ع ل م] জানেন তিনি
তিনি জানেন যা ভূমিতে প্রবেশ করে ও যা ভূমি থেকে নির্গত হয়						

يَعْرُجُ	وَمَا	ٱلسَّمَآءِ	مِنَ	يَنزِلُ	وَمَا	مِنْهَا
فعل مضارع [ع ر ج] উত্থিত হয়	ح.عطف +اسم موصولযা কিছু	معرفة اسم مجرور [س ط و] আকাশ	جرّ হতে	فعل مضارع [ن ز ل] অবতীর্ণ হয়	ح.عطف +اسم موصولএবং যা কিছু	جرّ +ضمير তা থেকে
এবং যা আকাশ থেকে বর্ষিত হয় ও যা আকাশে উত্থিত হয়।						

كُنتُمْ ج	مَا	أَيْنَ	مَعَكُمْ	وَهُوَ	فِيهَا ۖ

فعل ماض +ضمير [ك و ن] থাক তোমরা	اسم موصول যেখান	ح. استفهام যেখানে	ظ. مكان منصوب +ضمير তোমাদের সাথে	ح.عطف +ضمير منفصلএবং তিনি	جرّ +ضمير তার মধ্যে
তিনি তোমাদের সাথে আছেন তোমরা যেখানেই থাক।					

بَصِيرٌ ﴿4﴾	تَعْمَلُونَ	بِمَا	وَٱللَّهُ
اسم مرفوع [ب ص ر]খুব দেখেন	فعل مضارع +ضمير [ع م ل] সম্পাদন কর তোমরা	جرّ +اسم موصولতা যা	ج+لفظ الجلالة مرفوع [اله]এবং আল্লাহ
তোমরা যা কর, আল্লাহ তা দেখেন			

وَإِلَى	وَٱلْأَرْضِ ۚ	ٱلسَّمَٰوَٰتِ	مُلْكُ	لَّهُۥ
ح.عطف +جرّ এবং দিকে	ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ا ر ض] পৃথিবীর	معرفة اسم مجرور [س م و]আকাশ মন্ডলীর	اسم مرفوع [م ل ك]রাজত্ব	جرّ +ضمير তাঁরই জন্য
57|5|নভোমন্ডল ও ভূমন্ডলের রাজত্ব তাঁরই।				

ٱلْأُمُورُ ﴿5﴾	تُرْجَعُ	ٱللَّهِ
معرفة اسم مرفوع [ا م ر] ব্যাপারে	فعل مضارع [ر ج ع] প্রত্যাবর্তিত	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর
সবকিছু তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন করবে।		

وَيُولِجُ	ٱلنَّهَارِ	فِى	ٱلَّيْلَ	يُولِجُ
ح.عطف +فعل مضارع [و ل ج‎IV] প্রবেশ করান	معرفة اسم مجرور [ن ه ر]রাতের	جرّ মধ্যে	معرفة اسم منصوب [ل ي ل]দিন	فعل مضارع [و ل ج IV] প্রবেশ করান
57|6|তিনি রাত্রিকে দিবসে প্রবিষ্ট করেন এবং দিবসকে প্রবিষ্ট করেন রাত্রিতে।				

عَلِيمٌۢ	وَهُوَ	ٱلَّيْلِ ۚ	فِى	ٱلنَّهَارَ
اسم مرفوع [ع ل م] খুব অবহিত	ح.عطف +ضمير منفصلএবং তিনিই	معرفة اسم مجرور [ل ي ل]রাতের	جرّ মধ্যে	معرفة اسم منصوب [ن ه ر]দিন
তিনি অন্তরের বিষয়াদি সম্পর্কে				

ٱلصُّدُورِ ﴿6﴾	بِذَاتِ
معرفة اسم مجرور [ص د ر]অন্তর সমুহের	جرّ +اسم مجرورঅবস্থার
ও সম্যক জ্ঞাত	

مِمَّا	وَأَنفِقُوا۟	وَرَسُولِهِۦ	بِٱللَّهِ	ءَامِنُوا۟
جرّ +اسم موصول হতে যা	ح.عطف +فعل أمر +ضمير [ن ف ق‎IV] খরচ কর তোমরা	ح.عطف +اسم مجرور [ر س ل] তাঁর রসুলের উপর	جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর উপর	فعل أمر +ضمير [ا م ن‎IV]ঈমান আন তোমরা
57|7|তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর এবং তিনি তোমাদেরকে যার উত্তরাধিকারী করেছেন,				

ءَامَنُوا	فَٱلَّذِينَ	فِيهِ ۖ	مُّسْتَخْلَفِينَ	جَعَلَكُم
فعل ماض +ضمير [ا م ن]IV] ঈমান আনে	ح. استئنافية +اسم موصولঅতএব যারা	جرّ +ضمير যার উপর	اسم منصوب [خ ل ف X] খলিফা	فعل ماض +ضمير [ج ع ل]করেছেন তোমাদের
তা থেকে ব্যয় কর। অতএব, তোমাদের মধ্যে যারা বিশ্বাস				

كَبِيرٌ ﴿7﴾	أَجْرٌ	لَهُمْ	وَأَنفَقُوا۟	مِنكُمْ
صفة مرفوعة [ك ب ر] বিরাট	اسم مرفوع [ا ج ر]পুরস্কার	جرّ +ضمير তাদের জন্য	ح.عطف +فعل ماض [ن ف ق]IV] এবং খরচ করে	جرّ +ضمير তোমাদের হতে
স্থাপন করে ও ব্যয় করে, তাদের জন্যে রয়েছে মহাপুরস্কার।				

وَٱلرَّسُولُ	بِٱللَّهِ ۙ	تُؤْمِنُونَ	لَا	لَكُمْ	وَمَا
ح.حالية +معرفة اسم مرفوع [ر س ل]অথচ রসূল	جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	فعل مضارع +ضمير [ا م ن]IV] ঈমান আন তোমরা	ح. نفي না	جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	ح.عطف +ح. استفهام এবং কি
57|8|তোমাদের কি হল যে, তোমরা আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করছ না,					

أَخَذَ	وَقَدْ	بِرَبِّكُمْ	لِتُؤْمِنُوا۟	يَدْعُوكُمْ
فعل ماض [ا خ ذ]নিয়েছেন তিনি	ح.عطف +ح. تحقيقএবং নিশ্চয়ই	جرّ +اسم مجرور +ضمير [ر ب ب] তোমাদের রবের উপর	ل-تعليل +فعل مضارع منصوب +ضمير [ا م ن IV] যেন ঈমান আন তোমরা	فعل مضارع +ضمير [د ع و] ডাকছেন তোমাদের
অথচ রসূল তোমাদেরকে তোমাদের পালনকর্তার প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করার দাওয়াত দিচ্ছেন?				

مُّؤْمِنِينَ ﴿8﴾	كُنتُم	إِن	مِيثَٰقَكُمْ
اسم منصوب [ا م ن IV] ঈমানদার	فعل ماض +ضمير [ك و ن] হও তোমরা	ج. شرط যদি	اسم منصوب +ضمير [ث ق] প্রতিশ্রুতি তোমাদের
আল্লাহ তো পূর্বেই তোমাদের অঙ্গীকার নিয়েছেন-যদি তোমরা বিশ্বাসী হও।			

ءَايَٰتٍۭ	عَبْدِهِۦٓ	عَلَىٰ	يُنَزِّلُ	ٱلَّذِى	هُوَ
اسم مجرور [ا ي ي]আয়াত সমূহ	اسم مجرور +ضمير [ع ب د] তাঁর বান্দার	جرّ উপর	فعل مضارع[ن ز ل II] নাযিল করেছেন	اسم موصول যারা	ضمير منفصل তিনিই
57|9|তিনিই তাঁর দাসের প্রতি প্রকাশ্য আয়াত অবতীর্ণ করেন,					

ٱلنُّورِ ۚ	إِلَى	ٱلظُّلُمَٰتِ	مِّنَ	لِّيُخْرِجَكُم	بَيِّنَٰتٍ
معرفة اسم مجرور [ن و ر]আলোর	جرّ দিকে	معرفة اسم مجرور [ظ ل م]অন্ধকারসমূহ	جرّহতে	ل-تعليل +فعل مضارع منصوب +ضمير [خ ر	اسم مجرور [ب

				[ج যেন বের করেন তোমাদের	[ي ن সুস্পষ্ট

যাতে তোমাদেরকে অন্ধকার থেকে আলোকে আনয়ন করেন।

رَّحِيمٌ ﴿9﴾	لَرَءُوفٌ	بِكُمْ	ٱللَّهَ	وَإِنَّ
صفة مرفوعة [ر ح م]মেহেরবান	ل-تاكيد +اسم مرفوع [ر ا ف]অবশ্যই করুণাময়	جرّ +ضمير তোমাদের উপর	لفظ الجلالة منصوب [اله] আল্লাহ	ح.عطف +ح. مشبه بفعلএবং নিশ্চয়ই

নিশ্চয় আল্লাহ তোমাদের প্রতি করুণাময়, পরম দয়ালু।

ٱللَّهِ	سَبِيلِ	فِى	تُنفِقُوا۟	أَلَّا	لَكُمْ	وَمَا
لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	اسم مجرور [س ب ل]পথে	جرّ মধ্যে	فعل مضارع منصوب [ن ف ق]খরচ করছ তোমরা	ح. مصدرية +ح. نفي যে না	جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	ح.عطف +ح. استفهام এবং কি

57|10|তোমাদেরকে আল্লাহর পথে ব্যয় করতে কিসে

لَا	وَٱلْأَرْضِ ۚ	ٱلسَّمَٰوَٰتِ	مِيرَٰثُ	وَلِلَّهِ
ح. نفي নয়	ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ا ر ض]পৃথিবীর	معرفة اسم مجرور [س م و]আকাশ মন্ডলীর	اسم مرفوع [م ر ث] উত্তরাধিকারী	ح.حالية +جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله]আল্লাহরই

বাধা দেয়, যখন আল্লাহই নভোমন্ডল ও ভূমন্ডলের উত্তরাধিকারী?

قَبْلِ	مِن	أَنفَقَ	مَّنْ	مِنكُم	يَسْتَوِى
اسم مجرور [ق ب ل] পূর্বে	جرّ হতে	فعل ماض [ن ف ق IV] খরচ করেছে	اسم مجرور যে	جرّ +ضمير তোমাদের হতে	فعل مضارع [س و ي VIII] সমান
তোমাদের মধ্যে যে মক্কা বিজয়ের পূর্বে ব্যয় করেছে ও জেহাদ করেছে,					

مِّنَ	دَرَجَةً	أَعْظَمُ	أُوْلَٰٓئِكَ	وَقَٰتَلَ ۚ	ٱلْفَتْحِ
جرّ হতে	اسم منصوب মর্যাদায়	اسم تفضيل مرفوع[ع ظ م] শ্রেষ্ঠতর	اسم اشارة তারা	ح.عطف +فعل ماض [ق ت ل III] ও জিহাদ করেছে	معرفة اسم مجرور [ف ت ح] বিজয়ের
সে সমান নয়। এরূপ লোকদের মর্যদা বড় তাদের অপেক্ষা,					

وَقَٰتَلُوا	بَعْدُ	مِنۢ	أَنفَقُواْ	ٱلَّذِينَ
ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ق ت ل III] যুদ্ধ করেছে	اسم مرفوع [ب ع د] পরে	جرّ হতে	فعل ماض +ضمير [ن ف ق IV] খরচ করেছে	اسم موصول যারা
যার পরে ব্যয় করেছে ও জেহাদ করেছে। তবে আল্লাহ				

ٱلْحُسْنَىٰ ۚ	ٱللَّهُ	وَعَدَ	وَكُلًّا ۚ

معرفة اسم منصوب [ح س ن]উত্তম	لفظ الجلالة مرفوع [اله]আল্লাহ	فعل ماض [و ع د] ওয়াদা দিয়েছেন	ح.عطف +اسم منصوب [ك ل]এবং প্রত্যেককে
উভয়কে কল্যাণের ওয়াদা দিয়েছেন।			

خَبِيرٌ ﴿10﴾	تَعْمَلُونَ	بِمَا	وَٱللَّهُ
اسم مرفوع [خ ب ر]খুব অবগত	فعل مضارع +ضمير [ع م ل] সম্পাদন করছ তোমরা	جرّ +اسم موصولতা যা	ح.عطف +لفظ الجلالة [اله] مرفوعএবং আল্লাহ
তোমরা যা কর, আল্লাহ সে সম্পর্কে সম্যক জ্ঞাত			

حَسَنًا	قَرْضًا	ٱللَّهَ	يُقْرِضُ	ٱلَّذِى	ذَا	مَّن
اسم منصوب [ح س ن] উত্তম	اسم منصوب [ق ر ض] কর্জ	لفظ الجلالة منصوب [اله] আল্লাহকে	فعل مضارع [ق ر ض IV] কর্জ দিবে	اسم موصول যে	اسم اشارة সেই	اسم موصول যে
57|11|কে সেই ব্যক্তি, যে আল্লাহকে উত্তম ধার দিবে,						

كَرِيمٌ ﴿11﴾	أَجْرٌ	وَلَهُۥ	لَهُۥ	فَيُضَٰعِفَهُۥ

اسم مرفوع [ك ر م] সম্মানজনক	اسم مرفوع [ا ج ر] পুরষ্কার	ح.عطف +جرّ +ضمير3 তার জন্য	جرّ +ضمير তার জন্য	ح. سببية +فعل مضارع منصوب +ضمير [ض ع ف] তাহলে বহুগুণ বৃদ্ধি করবেন তা

এরপর তিনি তার জন্যে তা বহুগুণে বৃদ্ধি করবেন এবং তার জন্যে রয়েছে সম্মানিত পুরস্কার।

نُورُهُم	يَسْعَىٰ	وَٱلْمُؤْمِنَٰتِ	ٱلْمُؤْمِنِينَ	تَرَى	يَوْمَ
اسم مرفوع +ضمير [ن و ر]তাদের নূর	فعل مضارع [س ع ي] দৌড়াতে	ح.عطف +معرفة اسم منصوب[ا م نIV] মুমিনারা	معرفة اسم منصوب [ا م ن IV] মুমিনরা	فعل مضارع [ر ا ي] দেখবে তুমি	اسم منصوب [ي و م]সে দিন

57|12|যেদিন আপনি দেখবেন ঈমানদার পুরুষ ও ঈমানদার নারীদেরকে, তাদের সম্মুখ ভাগে

جَنَّٰتٌ	ٱلْيَوْمَ	بُشْرَىٰكُمُ	وَبِأَيْمَٰنِهِم	أَيْدِيهِمْ	بَيْنَ
اسم مرفوع [ج ن ن]এক জান্নাতের	معرفة اسم منصوب [ي و م]আজ	اسم منصوب +ضمير [ب ش ر] তোমাদের জন্য সুসংবাদ	ح.عطف +جرّ +اسم مجرور [ي م ن] তাদের ডানে	اسم مرفوع +ضمير [ي د ي]তাদের সামনে	ظ. مكان منصوب সামনে

ও ডানপার্শ্বে তাদের জ্যোতি ছুটোছুটি করবে বলা হবেঃ আজ তোমাদের জন্যে সুসংবাদ

فِيهَا ج	خَٰلِدِينَ	ٱلْأَنْهَٰرُ	تَحْتِهَا	مِن	تَجْرِى
جرّ +ضمير তার মধ্যে	اسم منصوب [خ ل د]চির স্থায়ী তারা	তার পাদদেশে	اسم مجرور +ضمير [ت ح ت]তা	جرّ হতে	فعل مضارع [ج ر ي]প্রবাহিত হয়

জান্নাতের, যার তলদেশে নদী প্রবাহিত, তাতে তারা চিরকাল থাকবে।

ذَٰلِكَ	هُوَ	ٱلْفَوْزُ	ٱلْعَظِيمُ ﴿12﴾
اسم اشارة এটাই	ضمير منفصل সেই	معرفة اسم مرفوع [ف و ز] সাফল্য	معرفة صفة مرفوعة [ع ظ م] বিরাট
এটাই মহাসাফল্য।			

يَوْمَ	يَقُولُ	ٱلْمُنَٰفِقُونَ	وَٱلْمُنَٰفِقَٰتُ
اسم منصوب [ي و م] সেদিন	فعل مضارع [ق و ل] বলবে	معرفة اسم مرفوع [ن ف ق IV] মোনাফেক পুরুষরা	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ن ف ق IV] মোনাফেক নারীরা
57|13|যেদিন কপট বিশ্বাসী পুরুষ ও কপট বিশ্বাসিনী নারীরা মুমিনদেরকে বলবেঃ তোমরা			

لِلَّذِينَ	ءَامَنُوا۟	ٱنظُرُونَا	نَقْتَبِسْ	مِن	نُّورِكُمْ
جرّ +اسم موصول কে যারা	فعل ماض +ضمير [ا م ن IV] ঈমান এনেছিল	فعل أمر +ضمير+ضمير [ن ظ ر] দেখ তোমরা আমাদের	فعل مضارع مجزوم [ق ب س VIII] উপকৃত হব আমরা	جرّ হতে	اسم مجرور +ضمير [ن و ر] তোমাদের আলো
আমাদের জন্যে অপেক্ষা কর, আমরাও কিছু আলো নিব তোমাদের জ্যোতি থেকে।					

قِيلَ	ٱرْجِعُواْ	وَرَآءَكُمْ	فَٱلْتَمِسُواْ	نُورًا	فَضُرِبَ
فعل ماض مجهول [ق و ل] বলা হবে	فعل أمر +ضمير [ر ج ع]ফিরে যাও তোমরা	ظ. مكان منصوب +ضمير [و ر ي]তোমাদের পিছনে	ح. استئنافية +فعل أمر +ضمير [ل م س]VIII অতঃপর সন্ধান কর তোমরা	اسم منصوب [ن و ر] আলো	ح. استئنافية +فعل ماض مجهول [ض ر ب]অতঃপর দাঁড় করান হবে

বলা হবেঃ তোমরা পিছনে ফিরে যাও ও আলোর খোঁজ কর। অতঃপর উভয় দলের মাঝখানে খাড়া করা হবে

بَيْنَهُم	بِسُورٍ	لَّهُۥ	بَابٌۢ	بَاطِنُهُۥ	فِيهِ
ظ. مكان منصوب +ضمير [ب ي ن 4তাদের মাঝে	جرّ +اسم مجرور[س و ر]প্রাচীর	جرّ +ضمير তাতে	اسم مرفوع [ب و ب] একটি দরজা	اسم مرفوع +ضمير [ب ط ن]তার ভিতর দিকে	جرّ +ضمير তার মধ্যে

একটি প্রাচীর, যার একটি দরজা হবে৷ তার অভ্যন্তরে থাকবে রহমত এ

ٱلرَّحْمَةُ	وَظَٰهِرُهُۥ	مِن	قِبَلِهِ	ٱلْعَذَابُ ﴿13﴾
معرفة اسم مرفوع [ر ح م] রহমত	ح.عطف +اسم مرفوع +ضمير [ظ ه ر]এবং তার বাহিরে	جرّ হতে	اسم مجرور +ضمير [ق ب ل]তার সামনের দিকে	معرفة اسم مرفوع [ع ذ ب]শাস্তি

বং বাইরে থাকবে আযাব।

قَالُوا۟	مَّعَكُمْ ۖ	نَكُن	أَلَمْ	يُنَادُونَهُمْ
فعل ماض +ضمير [ق و ل]বলবে তারা	ظ. مكان منصوب +ضميرতোমাদের সাথে	فعل مضارع مجزوم [ك و ن] ছিলাম আমরা	ح.عطف অথবা	فعل مضارع +ضمير +ضمير [ن د و]ডেকে বলবে তাদের তারা
57|14|তারা মুমিনদেরকে ডেকে বলবেঃ				

وَتَرَبَّصْتُمْ	أَنفُسَكُمْ	فَتَنتُمْ	وَلَٰكِنَّكُمْ	بَلَىٰ
ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ر ب ص V] অপেক্ষা করেছিলে তোমরা	اسم منصوب +ضمير [ن ف س] তোমাদের নিজেদের	فعل ماض +ضمير [ف ت ن]ফেতনায় ফেলেছিলে তোমরা	ح.عطف +ح. مشبه بفعل +ضميرকিন্তু তোমরা	ح. جواب হ্যাঁ
আমরা কি তোমাদের সাথে ছিলাম না? তারা বলবেঃ হ্যাঁ যা কিন্তু তোমরা নিজেরাই নিজেদেরকে বিপদগ্রস্ত করেছ। প্রতীক্ষা করেছ,				

جَآءَ	حَتَّىٰ	ٱلْأَمَانِىُّ	وَغَرَّتْكُمُ	وَٱرْتَبْتُمْ

فعل ماض [ج ي ا] আসল	جرّ যতক্ষন না	معرفة اسم مرفوع [م ن ي]মিথ্যা আকাঙ্ক্ষা	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [غ ر ر]এবং মেঘাচ্ছন্ন করেছিল তোমাদের	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ر ي ب VIII] সন্দেহ করেছিলে তোমরা
সন্দেহ পোষণ করেছ এবং অলীক আশার পেছনে বিভ্রান্ত হয়েছ, অবশেষে				

ٱلْغَرُورُ ﴿14﴾	بِٱللَّهِ	وَغَرَّكُم	ٱللَّهِ	أَمْرُ
معرفة اسم مرفوع [غ ر ر]প্রতারক	جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহ সম্পর্কে	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [غ ر ر] প্রতারিত করেছিল তোমাদের	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	اسم مرفوع [ا م ر] নির্দেশ
আল্লাহর আদেশ পৌঁছেছে। এই সবই তোমাদেরকে আল্লাহ সম্পর্কে প্রতারিত করেছে				

وَلَا	فِدْيَةٌ	مِنكُمْ	يُؤْخَذُ	لَا	فَٱلْيَوْمَ
ح.عطف +ح. نفي এবং না	اسم مرفوع [ف د ي]কোন মুক্তিপণ	جرّ +ضمير তোমাদের হতে	فعل مضارع مجهول [ا خ ذ] নেওয়া হবে	ح. نفي না	ح. استئنافية +معرفة اسم منصوب [ي و م] অতএব আজ
57|15|অতএব, আজ তোমাদের কাছ থেকে কোন মুক্তিপন					

هِىَ	ٱلنَّارُ ۖ	مَأْوَىٰكُمُ	كَفَرُوا۟ ۚ	ٱلَّذِينَ	مِنَ

ضمير منفصل তা	معرفة اسم مرفوع [ن و ر] জাহান্নাম	اسم منصوب +ضمير [ا و ي] তোমাদের আবাসস্থল	فعل ماض +ضمير [ك ف ر] কুফরী করেছিল	اسم موصول যারা	جرّ হতে
গ্রহণ করা হবে না। এবং কাফেরদের কাছ থেকেও নয়। তোমাদের সবার আবাস্থল জাহান্নাম।					

ٱلْمَصِيرُ ﴿15﴾	وَبِئْسَ	مَوْلَىٰكُمْ ۖ
معرفة اسم مرفوع [ص ي ر] প্রত্যাবর্তন স্থল	ح.عطف +فعل ماض (اللوم) [ب ا س] অতি নিকৃষ্ট	اسم منصوب +ضمير [و ل ي] তোমাদের সঙ্গী
সেটাই তোমাদের সঙ্গী। কতই না নিকৃষ্ট এই প্রত্যাবর্তন স্থল।		

قُلُوبُهُمْ	تَخْشَعَ	أَن	ءَامَنُوٓا۟	لِلَّذِينَ	يَأْنِ	أَلَمْ
اسم مرفوع +ضمير [ق ل ب] তাদের অন্তরগুলি	فعل مضارع منصوب [خ ش ع] বিগলিত হওয়ার	ح. مصدرية যে	فعل ماض آل [ا م ن IV] ঈমান এনেছে	جرّ +اسم موصول জন্যে যারা	فعل مضارع مجزوم [ا ن ي] আসে সময়	ح. استفهام +ك. نفي কি নাই
57|16|যারা মুমিন, তাদের জন্যে কি						

وَلَا	ٱلْحَقِّ	مِنَ	نَزَلَ	وَمَا	ٱللَّهِ	لِذِكْرِ
ح.عطف +ح. نفي এবং না	معرفة اسم مجرور [ح ق ق] সত্য	جرّ হতে	فعل ماض [ن ز ل] নাযির হয়েছে	ح.عطف +اسم موصول এবং যা	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	جرّ +اسم مجرور [ذ ك ر] স্মরণে

আল্লাহর স্মরণে এবং যে সত্য অবতীর্ণ হয়েছে, তার কারণে হৃদয় বিগলিত হওয়ার সময় আসেনি?

مِن	ٱلْكِتَٰبَ	أُوتُوا۟	كَٱلَّذِينَ	يَكُونُوا۟
جرّ হতে	معرفة اسم منصوب [ك ت ب]কিতাব	فعل ماض مجهول +ضمير [ا ت ي][IV] দেওয়া হয়েছিল	جرّ + اسم مجرورমত যাদের	فعل مضارع منصوب +ضمير [ك و ن]হবে তারা
তারা তাদের মত যেন না হয়, যাদেরকে পূর্বে কিতাব দেয়া হয়েছিল।				

قُلُوبُهُمْ	فَقَسَتْ	ٱلْأَمَدُ	عَلَيْهِمُ	فَطَالَ	قَبْلُ
اسم مرفوع +ضمير [ق ل ب]তাদের অন্তরগুলি	حح. استئنافية +فعل ماض [ق س و]অতঃপর শক্ত হয়েছে	معرفة اسم مرفوع [ا م د]বহুকাল	جرّ +ضمير তাদের উপর	ح. عطف +فعل ماض [ط و ل] অতঃপর অতিবাহিত হল	اسم مرفوع [ق ب ل]পূর্বে
তাদের উপর সুদীর্ঘকাল অতিক্রান্ত হয়েছে, অতঃপর তাদের অন্তঃকরণ কঠিন হয়ে গেছে।					

فَٰسِقُونَ ﴿16﴾	مِّنْهُمْ	وَكَثِيرٌ
اسم مرفوع [ف س ق] পাপাচারী তারা	جرّ +ضميرতাদের হতে	ح.عطف +اسم مرفوع [ك ث ر]এবং অধিকাংশ

তাদের অধিকাংশই পাপাচারী

ٱلْأَرْضَ	يُحْيِ	ٱللَّهَ	أَنَّ	ٱعْلَمُوٓا۟
معرفة اسم منصوب [ا ر ض]যমীনকে	فعل مضارع [ح ي ي IV] জীবিত করেন	لفظ الجلالة منصوب [اله] আল্লাহ	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	فعل أمر +ضمير [ع ل م]জেনে রাখ তোমরা
57|17|তোমরা জেনে রাখ, আল্লাহই ভূ-ভাগকে তার মৃত্যুর পর				

لَكُمُ	بَيَّنَّا	قَدْ	مَوْتِهَا ۚ	بَعْدَ
جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	فعل ماض +ضمير [ب ي ن II] বর্ণনা করেছি আমরা	ح. تحقيق নিশ্চয়ই	اسم مجرور +ضمير [م و ت] তার মৃত্যুর	ظ. زمان منصوب [ب ع د]পরে
পুনরুজ্জীবিত করেন। আমি পরিস্কারভাবে তোমাদের জন্যে				

﴿17﴾ تَعْقِلُونَ	لَعَلَّكُمْ	ٱلْءَايَٰتِ
فعل مضارع +ضمير [ع ق ل] অনুধাবন কর তোমরা	ح. مشبه بفعل +ضمير যাতে তোমরা	معرفة اسم مجرور [ا ي ي] নিদর্শনাবলী
আয়াতগুলো ব্যক্ত করেছি, যাতে তোমরা বোঝ।		

قَرْضًا	ٱللَّهَ	وَأَقْرَضُوا۟	وَٱلْمُصَّدِّقَٰتِ	ٱلْمُصَّدِّقِينَ	إِنَّ

اسم منصوب [ق ر ض] কর্জ	لفظ الجلالة منصوب [اله] আল্লাহকে	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ب ر ض IV] কর্জ দিয়েছে যারা	ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ص د قII] দানশীলা নারীরা	معرفة اسم منصوب [ص د قII] দানশীল পুরুষ	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
57|18|নিশ্চয় দানশীল ব্যক্তি ও দানশীলা নারী, যারা আল্লাহকে উত্তমরূপে					

﴾18﴿ كَرِيمٌ	أَجْرٌ	وَلَهُمْ	لَهُمْ	يُضَٰعَفُ	حَسَنًا
صفة مرفوعة [ك ر م] সম্মানজনক	اسم مرفوع [ا ج ر] প্রতিফল	ح.عطف +جرّ +ضمير+এবং তাদের জন্য	جرّ +ضمير+ তাদের জন্য	فعل مضارع مجهول [ض ع فIII] বৃদ্ধি করা হবে	اسم منصوب [ح س ن] উত্তম
ধার দেয়, তাদেরকে দেয়া হবে বহুগুণ এবং তাদের জন্যে রয়েছে সম্মানজনক পুরস্কার।					

أُو۟لَٰٓئِكَ	وَرُسُلِهِۦٓ	بِٱللَّهِ	ءَامَنُوا۟	وَٱلَّذِينَ
اسم اشارة তারা	ح.عطف +اسم مجرور +ضمير+তাঁর [ر س ل] রসুলদের	جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর উপর	فعل ماض +ضمير [ا م ن]IV ঈমান এনেছে	ح.عطف +اسم موصولএবং যারা
57|19|আর যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি				

رَبِّهِمْ	عِندَ	وَٱلشُّهَدَآءُ	ٱلصِّدِّيقُونَ ۖ	هُمُ

اسم مجرور +ضمير [ر ب ب]তাদের রবের	ظ. مكان منصوب [ع ن د]কাছে	ح.عطف +معرفة اسم مرفوع [ش ه د]শহীদ	معرفة اسم مرفوع [ص د ق]II] সত্যনিষ্ঠ	ضمير منفصل তারাই
বিশ্বাস স্থাপন করে তারাই তাদের পালনকর্তার কাছে সিদ্দীক ও শহীদ বলে বিবেচিত।				

وَكَذَّبُوا	كَفَرُواْ	وَٱلَّذِينَ	وَنُورُهُمْۖ	أَجْرُهُمْ	لَهُمْ
ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ك ذ ب II] ও মিথ্যারোপ করেছে	فعل ماض +ضمير [ك ف ر]কুফরী করেছে	ح.عطف +اسم موصول এবং যারা	ح.عطف +اسم مرفوع +ضمير [ن و ر] তাদের জ্যোতি	اسم مرفوع +ضمير [ا ج ر]তাদের পুরষ্কার	جرّ +ضمير তাদের জন্য
তাদের জন্যে রয়েছে পুরস্কার ও জ্যোতি এবং যারা কাফের ও আমার নিদর্শন অস্বীকারকারী					

ٱلْجَحِيمِ ﴿19﴾	أَصْحَٰبُ	أُوْلَٰٓئِكَ	بِـَٔايَٰتِنَآ
معرفة اسم مجرور [ج ح م]জাহান্নাম	اسم مرفوع [ص ح ب]অধিবাসী	اسم اشارة তারাই	جرّ +اسم مجرور +ضمير [ا ي ي]আমাদের আয়াত গুলি
তারাই জাহান্নামের অধিবাসী হবে।			

لَعِبٌ	ٱلدُّنْيَا	ٱلْحَيَوٰةُ	أَنَّمَا	ٱعْلَمُوٓاْ

اسم مرفوع [ل ع ب] খেলা	صفة مرفوعة [د ن و] দুনিয়ার	معرفة اسم مرفوع [ح ي ي] জীবন	ك. مشبه بفعل +ما-كافة প্রকৃত পক্ষে	فعل أمر +ضمير [ع ل م] জেনে রাখ তোমরা
57|20|তোমরা জেনে রাখ, পার্থিব জীবন ক্রীড়া-কৌতুক				

فِي	وَتَكَاثُرٌ	بَيْنَكُمْ	وَتَفَاخُرٌۢ	وَزِينَةٌ	وَلَهْوٌ
جرّ মধ্যে	ح.عطف +اسم مرفوع [ك ث ر]III অধিক আর্জনের প্রতিযোগীতা	ظ. مكان منصوب +ضمير [ب ي ن] তোমাদের মাঝে	ح.عطف +اسم مرفوع [ف خ ر]VI পারস্পরিক অহংকার	ح.عطف +اسم مرفوع [ز ي ن] ও চাকচিক্য	اسم مرفوع [ل ه و] কৌতুক
, সাজ-সজ্জা, পারস্পরিক অহমিকা এবং ধন ও জনের প্রাচুর্য ব্যতীত আর কিছু নয়,					

أَعْجَبَ	غَيْثٍ	كَمَثَلِ	وَٱلْأَوْلَٰدِ ۖ	ٱلْأَمْوَٰلِ
فعل ماض [ع ج ب]IV চমৎকৃত করে	اسم مجرور [غ ي ث] বৃষ্টি	جرّ +اسم مجرور [م ث ل] যেমন উপমা	ح.عطف +معرفة اسم مجرور [و ل د] সন্তানাদিতে	معرفة اسم مجرور [م و ل] সম্পদ সমূহের
যেমন এক বৃষ্টির অবস্থা, যার সবুজ ফসল কৃষকদেরকে চমৎকৃত করে,				

مُصْفَرًّا	فَتَرَىٰهُ	يَهِيجُ	ثُمَّ	نَبَاتُهُۥ	ٱلْكُفَّارَ
اسم منصوب [ص ف ر] হরিৎবর্ণ	ح. استئنافية +فعل مضارع +ضمير [ر ا ي]	فعل مضارع [ه ي ج] শুষ্ক হয়ে যায়	ح.عطف অতঃপর	اسم مرفوع+ضمير [ن ب ت] তার উদ্ভিদ সম্ভার	معرفة اسم منصوب [ك ف ر] কৃষককে

	অতঃপর দেখ তূমি				
এরপর তা শুকিয়ে যায়, ফলে তুমি তাকে পীতবর্ণ দেখতে পাও,					

عَذَابٌ	ٱلْءَاخِرَةِ	وَفِى	حُطَٰمًا ۖ	يَكُونُ	ثُمَّ
اسم مرفوع [ع ذ ب] শাস্তি	معرفة اسم مجرور [ا خ ر]আখেরাতের	ح.عطف جرّ+মধ্যে আছে	اسم منصوب [ح ط م] খড়কুঠা	فعل مضارع [ك و ن] হয়ে যায়	ح.عطف অতঃপর
এরপর তা খড়কুটা হয়ে যায়। আর পরকালে আছে কঠিন শাস্তি					

وَمَا	وَرِضْوَٰنٌ ۚ	ٱللَّهِ	مِّنَ	وَمَغْفِرَةٌ	شَدِيدٌ
ح.عطف +ح. نفي এবং না	ح.عطف +اسم مرفوع [ر ض و]সন্তুষ্টি	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	جرّ হতে	ح.عطف +اسم مرفوع [غ ف ر]ও ক্ষমা	صفة مرفوعة [ش د د]কঠোর
এবং আল্লাহর ক্ষমা ও সন্তুষ্টি।					

ٱلْغُرُورِ ﴿20﴾	مَتَٰعُ	إِلَّا	ٱلدُّنْيَآ	ٱلْحَيَوٰةُ
معرفة اسم مجرور [غ ر ر]ধোকার	اسم مرفوع [م ت ع] সামগ্রী	ح. حصر ছাড়া	صفة مرفوعة [د ن و]দুনিয়ায়	معرفة اسم مرفوع [ح ي ي]জীবন
পার্থিব জীবন প্রতারণার উপকরণ বৈ কিছু নয়।				

وَجَنَّةٍ	رَّبِّكُمْ	مِّن	مَغْفِرَةٍ	إِلَىٰ	سَابِقُوٓاْ
ح.عطف +اسم مجرور [ج ن ن] জান্নাতের	اسم مرفوع +ضمير [ر ب ب] তোমাদের রবের	جرّ হতে	اسم مجرور [غ ف ر] ক্ষমার	جرّ প্রতি	فعل ماض +ضمير [س ب ق]III অগ্রণী হও তোমরা
57|21|তোমরা অগ্রে ধাবিত হও তোমাদের পালনকর্তার ক্ষমা ও সেই জান্নাতের দিকে,					

أُعِدَّتْ	وَٱلْأَرْضِ	ٱلسَّمَآءِ	كَعَرْضِ	عَرْضُهَا
فعل ماض مجهول [ع د د IV] প্রস্তুত করা হয়েছে	ح.عطف +معرفة اسم مجرور [ا ر ض]ও পৃথিবীর	معرفة اسم مجرور [س م ة] আকাশের	جرّ +اسم مجرور [ع ر ض] প্রশস্ততার ন্যায়	اسم مرفوع +ضمير [ع ر ض]তার প্রশস্ততা
যা আকাশ ও পৃথিবীর মত প্রশস্ত। এটা প্রস্তুত করা হয়েছে				

وَرُسُلِهِۦ ج	بِٱللَّهِ	ءَامَنُواْ	لِلَّذِينَ
ح.عطف +اسم مجرور+ضمير [ر س ل]ও তাঁর রসূলদের	جرّ +لفظ الجلالة مجرور [اله]আল্লাহর উপর	فعل ماض +ضمير [ا م ن]IV ঈমান এনেছে	جرّ +اسم موصولজন্য যার
আল্লাহ ও তাঁর রসূলগণের প্রতি বিশ্বাসস্থাপনকারীদের জন্যে।			

يَشَآءُ ج	مَن	يُؤْتِيهِ	ٱللَّهِ	فَضْلُ	ذَٰلِكَ
فعل مضارع [ش ي ا]চান তিনি	اسم موصول যাকে	فعل مضارع +ضمير [ا ت ي]IV দান করবেন তা	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	اسم مرفوع [ف ض ل] অনুগ্রহ	اسم اشارة এটা

এটা আল্লাহর কৃপা, তিনি যাকে ইচ্ছা, এটা দান করেন।

ٱلْعَظِيمِ ﴿21﴾	ٱلْفَضْلِ	ذُو	وَٱللَّهُ
معرفة صفة مجرورة [ع ظ م]বড়ই	معرفة اسم مجرور [ف ض ل]অনুগ্রহের	اسم مرفوع অধিকারী	ح.عطف +لفظ الجلالة مرفوع [اله]এবং আল্লাহ
আল্লাহ মহান কৃপার অধিকারী।			

ٱلْأَرْضِ	فِى	مُّصِيبَةٍ	مِن	أَصَابَ	مَآ
معرفة اسم مجرور [ا ر ض]পৃথিবীর	ج মধ্যে	اسم مجرور [ص و ب]মুসিবত	جرّ হতে	فعل ماض [ص و ب IV]পৌঁছে	ح. نفي না
57|22|পৃথিবীতে এবং ব্যক্তিগতভাবে তোমাদের উপর কোন বিপদ আসে না;					

فِى	إِلَّا	أَنفُسِكُمْ	فِىٓ	وَلَا
جرّ মধ্যে	ح. حصر ছাড়া	اسم مجرور +ضمير [ن ف س] তোমাদের নিজেদের	جرّ মধ্যে	ح.عطف +ح. نفي এবং না
কিন্তু তা জগত সৃষ্টির পূর্বেই				

نَّبْرَأَهَآ ج	أَن	قَبْلِ	مِّن	كِتَٰبٍ
فعل مضارع منصوب +ضمير [ب ر ا]সৃষ্টি করার আমরা তা	ح. مصدرية যে	اسم مجرور [ق ب ل]পূর্বে	جرّ হতে	اسم مجرور [ك ت ب] একটি কিতাবে
কিতাবে লিপিবদ্ধ আছে।				

إِنَّ	ذَٰلِكَ	عَلَى	ٱللَّهِ	يَسِيرٌ ﴿22﴾
ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই	اسم اشارة এটা	جرّ উপর	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	صفة مرفوعة [ب س ر]সহজ
নিশ্চয় এটা আল্লাহর পক্ষে সহজ।				

لِّكَيْلَا	تَأْسَوْا	عَلَىٰ	مَا	فَاتَكُمْ	وَلَا
ل-تعليل +ح. نفي]জন্য যে এটা না	فعل مضارع منصوب [ا س ة]হতাশ হও তোমরা	جرّ উপর	اسم موصول যা	فعل ماض +ضمير [ف و ت]হারাও তোমরা	ح.عطف +ح. نهي এবং না
57|23|এটা এজন্যে বলা হয়, যাতে তোমরা যা হারাও তজ্জন্যে দুঃখিত না হও					

تَفْرَحُوا۟	بِمَآ	ءَاتَىٰكُمْ ۗ	وَٱللَّهُ	لَا	يُحِبُّ
فعل مضارع مجزوم [ف ر ح] উল্লসিত হও তোমরা	جرّ +اسم موصول তাত যা	فعل ماض +ضمير [ا ي ي IV] দান করেন তোমাদের তিনি	ح.عطف +لفظ الجلالة مرفوع [اله]আল্লাহ	ح. نفي না	فعل مضارع [ح ب ب] ভালবাসেন
এবং তিনি তোমাদেরকে যা দিয়েছেন, তজ্জন্যে উল্লসিত না হও। আল্লাহ					

﴾23﴿ فَخُورٍ	مُخْتَالٍ	كُلَّ
صفة مجرورة [ف خ ر] অহংকারী	اسم مجرور [خ ت ل] উদ্ধত	اسم منصوب [ك ل ل] প্রত্যেক
কোন উদ্ধত অলংকারকে পছন্দ করেন না,		

وَيَأْمُرُونَ	يَبْخَلُونَ	ٱلَّذِينَ
ح.عطف +فعل مضارع +ضمير [ا م ر]নির্দেশ দেয়	فعل مضارع +ضمير [ب خ ل] কৃপণতা করে	اسم موصولযারা
57|24|যারা কৃপণতা করে এবং মানুষকে		

يَتَوَلَّ	وَمَن	بِٱلْبُخْلِ ۗ	ٱلنَّاسَ
فعل مضارع مجزوم [و لV ي] মুখ ফিরায়	ح.عطف +اسم موصولএবং যে	جرّ +معرفة اسم مجرور [ب خ ل]কৃপণতার	معرفة اسم منصوب [ن وس]মানুষকে
কৃপণতার প্রতি উৎসাহ দেয়, যে মুখ ফিরিয়ে নেয়,			

﴾24﴿ ٱلْحَمِيدُ	ٱلْغَنِىُّ	هُوَ	ٱللَّهَ	فَإِنَّ
معرفة صفة مرفوعة [ح م د] প্রশংসিত	معرفة اسم مرفوع [غ ن ي] অভাবমুক্ত	ضمير منفصل তিনিই	لفظ الجلالة منصوب [اله] আল্লাহ	ح. استئنافية +ح. مشبه بفعلঅতঃপর নিশ্চয়ই

তার জানা উচিত যে, আল্লাহ অভাবমুক্ত, প্রশংসিত।

بِٱلْبَيِّنَٰتِ	رُسُلَنَا	أَرْسَلْنَا	لَقَدْ
جرّ +معرفة اسم مجرور [ب ي ن]সুস্পষ্ট নিদর্শনাবলী সহ	اسم منصوب +ضمير [ر س ل]আমাদের রসুলদের	فعل ماض +ضمير [ر س ل]প্রেরণ করেছি আমরা	ل-تاكيد +ح. تحقيقএবং নিশ্চয়ই
57|25|আমি আমার রসূলগণকে সুস্পষ্ট নিদর্শনসহ প্রেরণ করেছি এবং			

وَٱلْمِيزَانَ	ٱلْكِتَٰبَ	مَعَهُمُ	وَأَنزَلْنَا
ح.عطف +معرفة اسم منصوب [و ز ن]মাণডন্ড	معرفة اسم منصوب [ك ت ب]কিতাব	ظ. مكان +ضمير তাদের সাথে	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ن ز ل IV] এবং নাযিল করেছি আমরা
তাঁদের সাথে অবতীর্ণ করেছি কিতাব ও ন্যায়নীতি,			

فِيهِ	ٱلْحَدِيدَ	وَأَنزَلْنَا	بِٱلْقِسْطِ ۖ	ٱلنَّاسُ	لِيَقُومَ
جرّ +ضمير যার মধ্যে	معرفة اسم منصوب [ح د د]লোহা	ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ن ز ل	جرّ +معرفة اسم مجرور [ق س ط]ন্যায়কে	معرفة اسم مرفوع [ن و س]মানুষেরা	ل-تعليل +فعل مضارع منصوب [ق و م]যেন প্রতিষ্ঠিত করে

		IV] অবতীর্ণ করেছি আমরা			
যাতে মানুষ ইনসাফ প্রতিষ্ঠা করে। আর আমি নাযিল করেছি লৌহ, যাতে					

وَلِيَعْلَمَ	لِلنَّاسِ	وَمَنَٰفِعُ	شَدِيدٌ	بَأْسٌ
ح.عطف +ل-تعليل +فعل مضارع ه[ع ل م 4যেন জানেন	جرّ +معرفة اسم مجرور [ن و س] মানুষের জন্য	ح.عطف +اسم مرفوع [ن ف ع 3] উপকারীতাসমূহ	صفة مرفوعة [ش د د]প্রচন্ড	اسم مرفوع [ب ا س] শক্তি
আছে প্রচন্ড রণশক্তি এবং মানুষের বহুবিধ উপকার।				

بِٱلْغَيْبِ ج	وَرُسُلَهُۥ	يَنصُرُهُۥ	مَن	ٱللَّهُ
جرّ +معرفة اسم مجرور [غ ي ب] না দেখা	ح.عطف +معرفة اسم 3مرفوع [ر س ل] তাঁর রসূলদের	فعل مضارع +ضمير [ن ص ر]সাহায্য করে তাঁকে	اسم موصول কে	لفظ الجلالة مرفوع [اله] আল্লাহ
এটা এজন্যে যে, আল্লাহ জেনে নিবেন কে না দেখে তাঁকে ও তাঁর রসূলগণকে সাহায্য করে।				

عَزِيزٌ ﴿25﴾	قَوِىٌّ	ٱللَّهَ	إِنَّ
صفة مرفوعة [ع ز ز] পরাক্রমশালী	صفة مرفوعة [ق و ي]শক্তি মান	لفظ الجلالة منصوب [اله]আল্লাহ	ح. مشبه بفعل নিশ্চয়ই
আল্লাহ শক্তিধর, পরাক্রমশালী।আল্লাহ শক্তিধর, পরাক্রমশালী।			

وَجَعَلْنَا	وَإِبْرَٰهِيمَ	نُوحًا	أَرْسَلْنَا	وَلَقَدْ
ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ج ع ل] এবং দিয়েছি আমরা	ح.عطف +اسم علم منصوب ইব্রাহীমকে	اسم علم منصوب নূহকে	فعل ماض +ضمير [IV]ر س ل প্রেরণ করেছি আমরা	ح.عطف +ل-تاكيد +ح. تحقيق এবং নিশ্চয়ই
57|26|আমি নূহ ও ইব্রাহীমকে রসূলরূপে প্রেরণ করেছি এবং				

فَمِنْهُم	وَٱلْكِتَٰبَ ۖ	ٱلنُّبُوَّةَ	ذُرِّيَّتِهِمَا	فِى
ح.عطف +جرّ +ه এবং তাদের হতে	ح.عطف +معرفة اسم منصوب [ك ت ب] ও কিতাব	معرفة اسم منصوب [ن ب ا] নবুয়্যত	اسم مجرور +ضمير [ذ ر ر] উভয়ের বংশধরদের	جرّ মধ্যে
তাদের বংশধরের মধ্যে নবুওয়ত ও কিতাব অব্যাহত রেখেছি। অতঃপর তাদের কতক				

فَٰسِقُونَ ﴿26﴾	مِّنْهُمْ	وَكَثِيرٌ	مُّهْتَدٍ ۖ
اسم مرفوع [ف س ق] পাপাচারী	جرّ +ضمير তাদের থেকে	ح.عطف +اسم مرفوع [ك ث ر] ও অনেকেই	اسم مجرور [ه د ي] সৎপথপ্রাপ্ত
সৎপথপ্রাপ্ত হয়েছে এবং অধিকাংশই হয়েছে পাপাচারী।			

بِرُسُلِنَا	ءَاثَٰرِهِم	عَلَىٰٓ	قَفَّيْنَا	ثُمَّ

ح.عطف অতঃপর	فعل ماض +ضمير [ق ف و II] অনুগত করেছি আমরা	جرّ উপর	اسم مجرور] ضمير+তাদের পদাঙ্কের	جرّ +اسم مجرور +ضمير [ر س ل]আমাদের রসুলদের
57|27|অতঃপর আমি তাদের পশ্চাতে প্রেরণ করেছি আমার রসূলগণকে এবং তাদের অনুগামী				

وَقَفَّيْنَا	بِعِيسَى	ٱبْنِ	مَرْيَمَ	وَءَاتَيْنَـٰهُ	ٱلْإِنجِيلَ
ح.عطف +فعل ماض +ضمير [ق ف و II] এবং অনুগামী করেছি	جرّ اسم علم مجرور ঈসাকে	اسم مجرور [ب ن ي]পুত্র	اسم علم منصوب মরিয়মের	ح.عطف +فعل ماض +ضمير +ضمير [ا ت ي IV] দিয়ছি আমরা তাকে	معرفة اسم علم منصوب ইনজিল
করেছি মরিয়ম তনয় ঈসাকে ও তাকে দিয়েছি ইঞ্জিল।					

وَجَعَلْنَا	فِى	قُلُوبِ	ٱلَّذِينَ	ٱتَّبَعُوهُ	رَأْفَةً
ح.عطف +فعل ماض +ه[ذ ع ل] এবং দিয়ছিলাম আমরা	جرّ মধ্যে	اسم مجرور [ق ل ب]অন্তর সমূহের	اسم موصول যারা	فعل ماض +ضمير+ضمير [ت ب ع VIII] অনুসরন করেছে তার	اسم منصوب [ر ا ف] করুণা
আমি তার অনুসারীদের অন্তরে স্থাপন করেছি নম্রতা					

وَرَحْمَةً	وَرَهْبَانِيَّةً	ٱبْتَدَعُوهَا	مَا	كَتَبْنَـٰهَا

فعل ماض +ضمير +ضمير [ك ت ب] বিধান দিয়েছি আমরা তার	ح. نفي না	فعل ماض +ضمير [ب د ع]ه+VIII] প্রবর্তন করেছিল তারা	ح.عطف +اسم منصوب [ر ه ب] বৈরাগ্যবাদ	ح.عطف +اسم منصوب [ر ح م]ও দয়া
ও দয়া। আর বৈরাগ্য, সে তো তারা নিজেরাই উদ্ভাবন করেছে;				

فَمَا	ٱللَّهِ	رِضْوَٰنِ	ٱبْتِغَآءَ	إِلَّا	عَلَيْهِمْ
ح. استئنافية +ح. نفي অতঃপর না	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	اسم مجرور [ر ض و] সন্তুষ্টির	فعل ماض [ب غVIII] সন্ধানে	ح. حصر ছাড়া	جرّ +ضمير তাদের উপর
আমি এটা তাদের উপর ফরজ করিনি; কিন্তু তারা আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের জন্যে					

ءَامَنُوا۟	ٱلَّذِينَ	فَـَٔاتَيْنَا	رِعَايَتِهَا ۖ	حَقَّ	رَعَوْهَا
فعل ماض +ضمير [ا م نIV] ঈমান এনেছিল	اسم موصول যারা	ح. استئنافية +فعل ماض +ضمير [ا ت يIV] অতঃপর দিয়েছিলাম আমরা	اسم ج+ه[ر ع ي]তা পালন করার	اسم منصوب [ح ق ق] যথাযত	فعل ماض +ضمير +ضمير [ر ع ي]পালন করেছিল তা
এটা অবলম্বন করেছে। অতঃপর তারা যথাযথভাবে তা পালন করেনি। তাদের মধ্যে যারা					

فَـٰسِقُونَ ﴿27﴾	مِّنْهُمْ	وَكَثِيرٌ	أَجْرَهُمْ ۖ	مِنْهُمْ
اسم مرفوع [ف س ق]সত্যত্যাগী	جرّ +ضمير তাদের হতে	ح.عطف +اسم مرفوع [ك ث ر]এবং অধিকাংশ	اسم منصوب] ضمير+তাদের পুরস্কার	جرّ +ضمير তাদের হতে

বিশ্বাসী ছিল, আমি তাদেরকে তাদের প্রাপ্য পুরস্কার দিয়েছি। আর তাদের অধিকাংশই পাপাচারী।

ٱللَّهَ	ٱتَّقُواْ	ءَامَنُواْ	ٱلَّذِينَ	يَٰٓأَيُّهَا
لفظ الجلالة منصوب [اله]আল্লাহকে	فعل أمر +ضمير [و ق ي]ভয় কর	فعل ماض +ضمير [ا م نIV] ঈমান এনেছ	اسم موصول যারা	ك. نداء +اسم مرفوعওহে
57|28|মুমিনগণ, তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং				

مِن	كِفْلَيْنِ	يُؤْتِكُمْ	بِرَسُولِهِۦ	وَءَامِنُواْ
جرّ হতে	اسم مرفوع [ك ف ل]দ্বিগুণ অংশয	فعل مضارع مجزوم +ضمير[ا ت يIV] দেবেন তোমাদের	جرّ +اسم مجرور +ضمير [ر س ل] তাঁর রসুলের উপর	د+فعل ماض +ضمير [ا م نIV] ও ঈমান আন তোমরা
তাঁর রসূলের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর। তিনি নিজে অনুগ্রহের দ্বিগুণ অংশ তোমাদেরকে দিবেন,				

بِهِۦ	تَمْشُونَ	نُورًا	لَّكُمْ	وَيَجْعَل	رَّحْمَتِهِۦ
جرّ +ضمير তা দিয়ে	فعل مضارع [م ش ي]চলবে তোমরা	اسم منصوب [ن ة ر]জ্যোতি	جرّ +ضمير তোমাদের জন্য	ح.عطف +فعل مضارع مجزوم এবং দেবেন	اسم مجرور +ضمير [ر ح م]তাঁর রহমত
তোমাদেরকে দিবেন জ্যোতি, যার সাহায্যে তোমরা চলবে এবং					

رَّحِيمٌ ﴿28﴾	غَفُورٌ	وَٱللَّهُ	لَكُمْ ج	وَيَغْفِرْ
صفة مرفوعة [ر ح م] মেহেরবান	صفة مرفوعة [غ ف ر] ক্ষমাশীল	ح.عطف +لفظ الجلالة مرفوع [اله] আল্লাহ	جرّ +ضمير তোমাদের	ح.عطف +فعل أمر [غ ف ر] ও মাফ করবেন
তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন। আল্লাহ ক্ষমাশীল, দয়াময়।				

يَقْدِرُونَ	أَلَّا	ٱلْكِتَٰبِ	أَهْلُ	يَعْلَمَ	لِّئَلَّا
فعل مضارع +ضمير [ق د ر] অধিকার রাখে তারা	ح. حصر ছাড়া	معرفة اسم مجرور [ك ت ب] কিতাব	اسم مرفوع [ا ه ل] আহলে	فعل مضارع منصوب [ع ل م] জানে	ل-تعليل +ح. نفي যেন
57|29|যাতে কিতাবধারীরা জানে যে,					

وَأَنَّ	ٱللَّهِ ۙ	فَضْلِ	مِّن	شَىْءٍ	عَلَىٰ
ح.عطف +ح. مشبه بفعل এবং নিশ্চয়ই	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	اسم مجرور [ف ض ل] অনুগ্রহের	جرّ হতে	اسم مجرور [ش ي ا] কোন কিছুই	جرّ উপর
আল্লাহর সামান্য অনুগ্রহের উপর ও তাদের কোন ক্ষমতা নেই,					

يَشَآءُ ج	مَن	يُؤْتِيهِ	ٱللَّهِ	بِيَدِ	ٱلْفَضْلَ
فعل مضارع [ش ي ا] চান তিনি	اسم موصول যাকে	فعل مضارع +ضمير [ا ت ي IV] দান করেন তিনি তা	لفظ الجلالة مجرور [اله] আল্লাহর	جرّ +اسم مجرور [ي د ي] হাতে	معرفة اسم منصوب [ف ض ل] অনুগ্রহ
দয়া আল্লাহরই হাতে; তিনি যাকে ইচ্ছা, তা দান করেন।					

ٱلْعَظِيمِ ﴿29﴾	ٱلْفَضْلِ	ذُو	وَٱللَّهُ
معرفة صفة مجرورة [ع ظ م]বড়ই	معرفة اسم مجرور [ف ض ل]অনুগ্রশীল	اسم مرفوع অধিকারী	ح.عطف +لفظ الجلالة مرفوع [اله]এবং ঊ
আল্লাহ মহা অনুগ্রহশীল।			

|| সূরা আল-হাদীদ সমাপ্ত ||

|| ২৭তম পারা সমাপ্ত ||